घोषणा - पत्र

मैं यह घोषणा करता हूँ कि पी–एच.डी. (पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान) की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है । इससे पूर्व मेरे द्वारा चयनित विषय से सम्बन्धित शोध प्रबन्ध प्रस्तुत नहीं किया गया है । अपनी निर्देशिका के सुयोग्य पथ प्रदर्शन से जिन शोधों, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं व प्रतिवेदनों से इस शोध कार्य में सहायता ली गई है उसका उल्लेख संदर्भ सूची में है ।

(डॉ० जे.एन. गौतम)
शोध निर्देशक
Reader & Head
SOS Library & Information Science
Jiwaji University, Gwalior (M. P.)
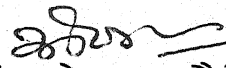
(जी.एस. तोमर)
शोधार्थी
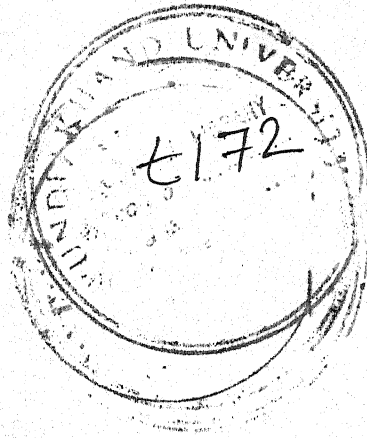
प्रमाण - पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री जी.एस. तोमर ने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी के अन्तर्गत पी-एच.डी. (पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान) की उपाधि हेतु *"विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तृतीयक सूचना स्रोतों का आलोचनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन"* शीर्षक पर मेरे निर्देशन में कार्य किया है और उन्होंने विश्वविद्यालय के नियमानुसार अपनी उपस्थिति (200 कार्य दिवस से अधिक) पूरी करते हुये अपना शोध कार्य सम्पन्न किया है ।

प्रस्तुत शोध कार्य इनका मौलिक कार्य है ।

28/12/02

(डॉ0 जे.एन. गौतम)
शोध निर्देशक
Reader & Head
SOS Library & Information Science
Jiwaji University, Gwalior (M. P.)

प्राक्कथन

ज्ञान जगत सतत गतिशील, बहुआयामी, अत्यंत विस्तृत एवं विशाल है । द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ जीवनापयोगी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की दृष्टि से मानव किया कलापों के सभी क्षेत्रों में सुनियोजित अनुसंधान एवं विकास के फलस्वरूप विभिन्न विषयों के साहित्य में अपार वृद्धि हुई है । विगत दशकों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी पर्याप्त प्रगति हुई है । परिणातः सूचना स्रोतों की मात्रा, आरूपों एवं विशिष्ट विषयों के साहित्य में भी अपार अभिवृद्धि हुई है । सूचनाओं की बदलती प्रकृति, भौतिक स्वरूप, अन्तर्विषयी स्वभाव आदि कारकों ने सूचना वैज्ञानिकों एवं ग्रन्थालयिओं का गहन ध्यान एवं अध्ययन इसके संकलन, रखरखाव, पुनर्प्राप्ति, वर्गीकरण आदि प्रकियाओं की ओर आकर्षित किया है । प्रस्तुत अध्ययन में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र से संबंधित तृतीयक सूचना स्रोतों की भूमिका एवं महत्व का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है । यत्र-तत्र प्रकीर्णित तृतीयक सूचना स्रोत संबंधित उपलब्ध वर्तमान साहित्य को भी कमबद्ध रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में संलग्न सभी अध्ययेताओं के विचारों को समाहित एवं विश्लेषित करना असंभव कार्य है । अतएव यादृच्छिक रूप से चयनित अध्येताओं के तृतीयक सूचना स्रोतों संबंधी तथ्यों, विचारों, सुझावों आदि का समावेश एवं विश्लेषण करने का अथक प्रयास प्रस्तुत अध्ययन में किया गया है ।

कोई भी कार्य बिना किसी सहयोग, प्रोत्साहन, गुरूत्तर मार्गदर्शन एवं क्रिया कलाप के अभाव में संभव नहीं है फिर प्रस्तुत अध्ययन इसका अपवाद कैसे हो सकता है । इस अध्ययन की अवधि में भी मुझे सतत् प्रोत्साहन, मार्गदर्शन, सहयोग, उत्साहवर्धन, ज्ञात-अज्ञात शक्तियों द्वारा मिलता रहा है । जिसके फलस्वरूप यह कार्य पूर्ण करना संभव हो सका । अतएव उनका आभार मानना मेरा कर्तव्य बनता है । वीणावादिनी माँ सरस्वती के श्री चरणों में नतमस्तक होकर उन तमाम ज्ञात-अज्ञात शक्तियों का आभार व्यक्त करता हूँ । जिनकी प्रेरणा एवं सहयोग ने यह कार्य सम्पन्न करने की शक्ति प्रदान की ।

आभार की श्रंखला में सर्वप्रथम मैं अपने श्रद्धाभाव परम श्रद्धेय गुरूवर डॉ0 जे.एन. गौतम, उपाचार्य एवं विभागाध्यक्ष, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययनशाला, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर के प्रति समर्पित करता हूँ जिन्होंने मुझ आकिंचन को अपना शिष्य स्वीकार कर गौरवान्वित किया एवं शोध कार्य को सम्पूर्णता तक पहुँचाने में मेरा मार्गदर्शन किया ।

मेरे गुरूजनों का भी आर्शीवाद मार्गदर्शन एवं सहयोग सदा मिलता रहा है । परम श्रद्धेय गुरूवर प्रो0 एस.एम. त्रिपाठी, पूर्व संकायाध्यक्ष (कला संकाय) एवं विभागाध्यक्ष, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, अध्ययनशाला जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर । प्रो0 एम.टी.एम. खान, विभागाध्यक्ष पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी, प्रो0 बी.के. शर्मा, विभागाध्यक्ष, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, डॉ0 वी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, डॉ0 शैलेन्द्र कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय,

दिल्ली, प्रो0 सीताराम शर्मा, माधव महाविद्यालय, ग्वालियर आदि का हृदय से आभार मानता हूँ जिन्होंने समय-समय पर अपने अमूल्य मार्गदर्शन एवं सुझाव द्वारा इस कार्य को सहजता प्रदान की ।

मैं डॉ. हेमन्त शर्मा एवं श्री आर.जी. गर्ग, वरिष्ठ प्राध्यापक, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययनशाला, जीवाजी विश्वविद्यालय, श्री वी.पी. खरे, वरिष्ठ प्राध्यापक, श्री ए.पी. सिंह, श्री जे.एस. बर्मन, श्री एम.पी. सिंह, प्राध्यापक, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, श्री शिवराम वर्मा, उप-पुस्तकालयाध्यक्ष, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी का भी आभार मानता हूँ । जिन्होंने अपने सुझाव एवं सहयोग प्रदान कर इस कार्य को सम्पन्न करने में प्रोत्साहित एवं उत्साहवर्धन किया ।

अपने सहयोगियों एवं मित्रों डॉ0 भूपेन्द्र मल्ल, डॉ0 सतीश सिंह सिकरवार, डॉ0 विमलेन्द्र सिंह, डॉ0 पी.एन. शर्मा, डॉ0 एस. के. दीक्षित, डॉ0 निरंजन सिंह, श्री रामअवतार गौड़, श्रीमती नलिनी पाण्डे, श्री एस.आर. श्रीवास्तव आदि सभी का इस शोध कार्य हेतु सहयोग एवं प्रोत्साहन हेतु आभारी हूँ ।
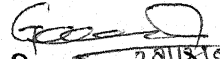
मैं उन समस्त विद्वानों, ग्रन्थालयिओं, लेखकों, विषय विशेषज्ञों का आभार मानता हूँ जिनकी कृतियों, आलेखों एवं विचारों ने इस शोध प्रबन्ध की सम्पूर्णता में अपना अमूल्य एवं अमिट योगदान प्रदत्त किया है ।

मैं अपने पारिवारिक सदस्यों का भी आभार मानता हूँ जिन्होने मुझे पारिवारिक दायित्वों से मुक्त कर इस कार्य को करने का अवसर प्रदान किया । इस कड़ी में मैं अपनी स्वर्गीय माँ को

विस्मृत नहीं कर सकता जिनका स्नेह, आशीष सदा मेरे साथ रहा है । यह कृति उनके श्री चरणों में समर्पित है । मैं अपने पूज्य पिताजी का भी आभारी हूँ जिनकी बदौलत आज मैं इस स्थिति तक पहुँच सका । उनके श्री चरणों में सादर नमन ।

अन्तः में मैं जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर के कुलपति, प्रो0 सत्यप्रकाश जी, प्रसिद्ध भौतिकविद् एवं बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी के कुलपति, प्रो0 रमेश चन्द्रा, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर के कुलसचिव डॉ0 डी.एस. चन्देल का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे यह शोध कार्य करने की स्वीकृति प्रदान की साथ ही दोनों विश्वविद्यालयों के प्रशासनिक अधिकारियों, ग्रन्थालयों के सहयोगियों का समय समय पर प्रदत्त उनके सहयोग हेतु आभार मानता हूँ । इस शोध कार्य को स्वच्छ एवं त्रुटि रहित टंकण हेतु श्री अनुराग भेलसेवाले एवं मैसर्स श्रीराम बाइंडिग का भी आभार मानता हूँ ।

एक बार मैं पुनः सभी का आभार व्यक्त करता हूँ ।

(जी0एस0 तोमर)

अनुक्रमणिका

अध्याय-१

प्रस्तावना

अध्याय -१

प्रस्तावना

ज्ञान के अर्जन, प्रसार तथा सम्प्रेषण का जगत बड़ा ही जटिल है । आज जहाँ प्रकाशनों का संसार बड़ा ही विशाल एवं अथाह होता जा रहा है वहाँ ज्ञानार्जन तथा सूचनात्मक सामग्रियों की जानकारी प्राप्त करना भी बहुत कठिन कार्य हो गया है । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे नित नये अनुसंधान, विकास एवं साहित्य सृजन का विस्तार व्यापक होता जा रहा है । विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवीनतम सूचना को प्राप्त करना भी एक समस्या है । विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में सूचना सृजन, सम्प्रेषण एवं उसके स्थानान्तरण प्रसरण आदि कठिन होता जा रहा है । अतः उच्च कोटि के ज्ञानार्जन, सूचना प्रसार एवं सम्प्रेषण की विधियों, प्रविधियों तथा साधनों को उन्नत एवं उपयोगी बनाने की आवश्यकता का अनुभव भी बड़ी तीव्र गति से किया जा रहा है ।

राष्ट्रीय प्रगति, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक उपलब्धियाँ अनुसंधान पर आधारित होती है जो सुसंगठित एवं सतत सक्रिय प्रयास के द्वारा व्यवस्थित, संचालित तथा सम्पन्न होता है ।

अनुसंधान की उत्पादन वस्तु सूचना होती है जो अधिकाधिक विकास एवं अनुसंधान के लिए समयानुसार शीघ्रातिशीघ्र कुशलतापूर्वक तथा प्रभावशाली ढंग से की जानी चाहिए ।

मस्तिष्क किसी न किसी सूचना का संग्रहण अवश्य करता है सूचना संग्रहण की क्षमता में परिवर्तन हो सकता है किसी सूचना संग्रहण क्षमता का कभी पूर्ण समापन नहीं होता । प्रत्येक मनुष्य की सूचना / ज्ञान संकलित करने की शक्ति भी सीमित होती है, ज्ञान के असीमित व परिमित रूप से विकास के फलस्वरूप मनुष्य अपने मस्तिष्क में समस्त सूचना / ज्ञान को संग्रहित कर पाने में अक्षम महसूस करने लगा और उसने अपने अविष्कृत स्वभाव के कारण ज्ञान/सूचना को संग्रहित करने के लिए प्रलेखों का अविष्कार किया ।

प्रारंभ में वह अपने ज्ञान/ सूचना को पेपरिस रोल, पार्चमेंट, लेदर रोल, भोजपत्र, ईंट, ताम्रपत्र तथा पत्थर आदि पर संग्रहित करता था । धीरे–धीरे उसेने ऐसे प्रलेखों का आविष्कार किया जो सूचना संग्रहण व पुनः प्राप्ति की दृष्टि से अधिक उपयोगी व सफल हो सके प्रलेख का साधरणतया अर्थ यह है कि (मस्तिष्क द्वारा विरचित विचारधारा जिसे भाषा एवं प्रतीकों अथवा जो प्रकृतिक या सामाजिक परिघटना का अभिलेख हो सकता है ।) जो प्रत्यक्ष रूप से बिना किसी मानव मस्तिष्क से होकर प्रवाहित होने तथा इसके द्वारा विरचित तथा व्यक्त विचारों से किसी उपकरण या तंत्र द्वारा किया गया हो सकता है ।

दूसरे शब्दों में किसी अभिव्यक्ति एवं सम्प्रेषण के साधन एवं माध्यम को भी प्रलेख कहते हैं । लेकिन सूचना स्रोतों के परिप्रेक्ष्य में जिन सामग्रियों में ज्ञान का विवरण अथवा किसी प्रकार की सूचना की प्राप्ति होती है उसे प्रलेख कहते हैं । सुविधा की दृष्टि से इनका अध्ययन करने के लिए इनकों मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया गया है, प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक सूचना स्रोत ।

प्राथमिक सूचना स्रोत से उपयोगी सूचना सामग्री उपयोगकर्ता प्रथम रूप से सीधे प्राप्त कर सकते हैं । निहित सूचना पूर्णतः नवीन हो सकती है, पूर्व अप्रकाशित हो सकती है । अथवा ज्ञात हो सकती है मौलिक सूचना स्रोत अनेक प्रकार के होते हैं -- शोध पत्रिका में प्रकाशित आलेख, मोनोग्राफ, प्रतिवेदन, पेटेन्ट, शोध प्रबन्ध, मानक, व्यवसायिक साहित्य आदि ।

द्वितीयक सूचना स्रोत वे होते हैं जिन्हें मौलिक सूचना स्रोतों से संग्रहीत किया जाता है अथवा जो मौलिक स्रोत की जानकारी उपलब्ध कराते हैं उन्हें गौण सूचना स्रोत कहते हैं । इसके अन्तर्गत सामयिक प्रकाशन, अनुक्रमणिकाएं, वांगमय सूचियाँ, अनुक्रमणीकरण पत्रिकाएं, सारांशकरण पत्रिकाएं, समीक्षाएं, प्रबन्ध ग्रंथ, सन्दर्भ कृतियों – विश्वकोष, हेण्डबुक, सारणी अनुवाद इत्यादि।

तृतीयक सूचना स्रोतों में प्राथमिक एवं द्वितीयक सूचना स्रोतों से संग्रहित एवं छनकर जो सूचना प्राप्त होती है या प्राथमिक एवं

द्वितीयक स्रोतों के सूचना को प्रयोग करने में उपयोगकर्ता को जिस सूचना स्रोतों से सहायता प्राप्त होती है उन्हें तृतीयक सूचना स्रोत कहा जाता है ।

अतः तृतीयक सूचना स्रोत का मुख्य कार्य एवं उद्देश्य उपयोगकर्ताओं तथा विशेषज्ञों को प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत के प्रयोगार्थ वांछित सूचना की प्राप्ति एवं खोज में सहायता प्रदान करना होता है वास्तव में इस श्रेणी के अधिकांश स्रोतों में विषय ज्ञान नहीं होता बल्कि इनसे सूचना से सम्बन्धित स्रोतों का संकेत मिलता है ।

आज का युग सूचना विस्फोट का युग है, ज्ञान के विशाल भण्ड़ार एवं इसमें निरन्तर वृद्धि के कारण तृतीयक सूचना स्रोतों का महत्व बढ़ता जा रहा है । इस श्रेणी के स्रोत आज सभी प्रकार के स्रोतों की अपेक्षा अन्त में प्रकाशित एवं प्रस्तुत किए जाते हैं । प्राथमिक स्रोतों से विस्थापित इन सूचना स्रोतों में सभी प्रकार के सन्दर्भ के प्रकार आते हैं । जिनमें मुख्य रूप से वांगमय सूचियों की वांगमय सूची, निर्देशिकाएं, जीवन चरित्र कोष, शोध प्रगति की तालिकाएं आदि ।

पेपर एवं मुद्रण तकनीकी विकास के साथ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बढ़ रही शोध एवं सूचना गतिविधियों को संगठित कर उपयोगकर्ताओं को सूचना प्रदान करने के क्षेत्र में सूचना स्रोत की बड़ी ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है । जिनमें

तृतीयक सूचना स्रोतों की भूमिका, सूचना को प्राप्त करने के उन स्रोतों की ओर इंगित करती है जिनसे सूचना प्राप्त होती है ।

ज्ञान / साहित्य का विस्फोट अपेक्षाकृत अन्य विषयों के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में इतनी तीव्र गति से हो रहा है जिससे तृतीयक सूचना स्रोतों का महत्व और भी अधिक बढ़ता जा रहा है । तृतीयक सूचना स्रोतों की भूमिका विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कितनी महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध हो सकती है, कौन–कौन से सूचना स्रोत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं, किन–किन विषयों को अपने में समायोजित करते हैं, का पता लगाना ही इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है ।

सूचना और सन्दर्भ सेवा की दृष्टि से मुद्रित और प्रलेखीय सूचना स्रोतों के अतिरिक्त ऐसे भी साधन / स्रोत तथा माध्यम आज के युग में अति आवश्यक एवं उपादेय माने गये हैं जिन्हें तृतीयक स्रातों के रूप में जाना जाता है । अतः प्रस्तुत अध्ययन में अन्य उपकरणों के अतिरिक्त ऐसे उपकरणों का विवेचन और निर्धारण भी किया गया है जिन्हें ऐसी सेवाओं के उद्देश्य की पूर्ति हेतु निर्मित और संकलित किया गया है । अतः प्रस्तुत कार्य का मुख्य उद्देश्य –

1. ऐसे स्रोतों को विषयानुसार सुनिश्चित करना और उनका मूल्यांकन कर ग्रन्थालय / सूचना केन्द्रों /प्रलेखन केन्द्रों तथा विशिष्ट ग्रन्थालयो में कार्यरत व्यवसायियों / विशेषज्ञों /

अनुसंधानकर्ताओं को प्रमुख रूप से एक दिशा प्रदान करना है ।

2. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित तृतीयक सूचना स्रोतों की उपयोगिता का अध्ययन करना ।

3. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित वैज्ञानिकों को तृतीयक सूचना स्रोतों से अवगत करना ।

4. ऐसे सूचना स्रोतों को प्रकाश में लाना जो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के शोध में सहायक सिद्ध हो सकते हैं ।

तृतीयक सूचना स्रोतों को सूचना विज्ञान विशेषज्ञों, ग्रन्थालयियों तथा इस विषय में शिक्षकों द्वारा सुनिश्चित कर श्रेणीबद्ध किया गया है । अतः तृतीयक सूचना स्रोतों के अन्तर्गत जिन उपकरणों को श्रेणीबद्ध किया गया है उन्हें तालिकाबद्ध एवं मूल्यांकन करके श्रेष्ठता की दृष्टि से उनका उल्लेख किया गया है जो तुलनात्मक विवेचन पर आधारित है ।

सर्वेक्षण हेतु ग्रन्थालयों में उपलब्ध स्रोतों तथा प्रकाशकों की तालिकाओं और वांगमय सूचियों के आधार पर तृतीयक स्रोतों का सर्वेक्षण किया गया है । बड़े–बड़े और विशिष्ट ग्रन्थालयों में किन–किन तृतीयक स्रोतों का उपयोग किन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सर्वाधिक उपयोग में लाया जाता है । उनका सर्वेक्षण मूल्यांकन समालोचनात्मक दृष्टि से किया गया है ।

विवेचना और अन्वेषण निम्नाकित प्रविधियों पर आधारित हैः–

(1) तृतीयक सूचना स्रोत और उपकरणों को पूर्णरूपेण समालोचनात्मक ढंग से निर्धारित और तालिकाबद्ध किया गया है ।

(2) प्रत्येक श्रेणी और उनसे सम्बन्धित उपकरणों और स्रोतों का तुलनात्मक मूल्यांकन कर सर्वोत्तम उपयोगी और अत्यन्त उपादेय उपकरण / स्रोत का निर्धारण किया गया है ।

(3) उपयोगकर्ताओं / अध्येताओं तथा संदर्भ सेवा कर्मियों से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तृतीयक स्रोतों की जानकारी जिनका सर्वाधिक उपयोग किया जाता है प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त करके और ऐसे स्रोतों को उल्लेखित एवं उनका यथोचित मूल्यांकन किया गया है ।

(4) अनेक प्रकार की सूचियों / वांगमय सूचियों, प्रकाशक सूचियों से ऐसे उपकरणों को जिनका उपयोग विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में होता है को सुनिश्चित कर उनका मूल्यांकन किया गया है ।

उपरांकित विधियों का अनुप्रयोग कर तृतीयक स्रोतों / उपकरणों की सुनिश्चित जानकारी प्राप्त की गई है और उपयोगी एवं उत्तम प्रकार के स्रोतों का आलोचनात्मक दृष्टिकोण से उनकी श्रेष्ठता को निर्धारित किया गया है ।

आधुनिक युग को सूचना का युग माना जाता है । यही कारण है कि आधुनिक विश्व के प्रत्येक देश में सूचना को राष्ट्रीय तथा सामाजिक विकास का मूलाधार माना जाता है । सूचना की शक्ति का ही यह परिणाम है कि विश्व में एक देश सम्पन्न तथा दूसरा गरीब नजर आता है । इन्हीं सूचनाओं के संचित कोष को साहित्य का नाम दिया जाता है । यह एक अकाट्य सत्य है कि किसी भी विषय की आधारशिला उसका साहित्य है । साहित्य का विकास बहुआयामी, तीव्र एवं जटिल होता है । यह माना जाता है कि साहित्य का विकास विज्ञान के क्षेत्र में पांच से दस वर्षो में दुगना तथा समाज विज्ञान के क्षेत्र में आठ से बारह वर्षो में दुगना हो जाता है । यही साहित्य अध्येताओं, अन्वेषकों, वैज्ञानिकों इत्यादि के कार्यों में आवश्यक सूचना के रूप में कार्य करता है । आमतौर पर सूचना शब्द के अभिप्राय को समझने के लिए आमतौर पर दो प्रकार की विचारधाराओं[1] का प्रयोग किया जाता है:

1. व्युत्पत्ति पर आधारित

2. विचारधारा तथा तथ्यों की अभिव्यक्ति पर आधारित

व्युत्पत्ति के आधार पर प्रचलित विचारधारा के अनुसार सूचना शब्द अंग्रेजी भाषा के Information शब्द से बना है जो Formatio एवं Forma नामक दो शब्दों के संयोग का परिणाम है । इन दोनों शब्दों का अर्थ किसी वस्तु के आकार और स्वरूप

---

1 Mc Garry, K-J., " Hanging concept of information", p.5

से लगाया जाता है । इसके साथ ही ये दोनों शब्द नमूना अथवा पद्धति के निर्माण की ओर भी संकेत देते हैं । इसी तरह Information शब्द को लैटिन भाषा में News के रूप में व्यक्त किया जाता है । इस प्रकार व्युत्पत्ति के आधार पर सूचना किसी वस्तु अथवा समाचार के आकार तथा स्वरूप को स्पष्ट करते हुये उसके निर्माण या उत्पन्न होने की पद्धति की ओर संकेत करने वाली प्रक्रिया है ।

"साधारण परिभाषा के अनुसार तथ्य / न्यास (Data) संख्याओं से युक्त होता है और सूचना अक्षरों से युक्त होती है । न्यास (Data) अव्यवस्थित तथ्यों के संकलनों की अभिव्यक्ति करता है, जबकि सूचना का अभिप्राय चयन, व्यवस्थापन तथा उन अव्यवस्थित तथ्यों की बौद्धिक व्याख्या से होता है । न्यास उसका प्रतिनिधित्व करता है, जिसे क्रमिक रूप से अभिलिखित करते हैं, जबकि सूचना क्रम व्यवस्था को निर्धारित करती है, श्रेणीबद्धता को निश्चित करती है और विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करती है। ज्ञान (Knowledge) वस्तुतः बुद्धि और विशेष योग्यता एवं विशिष्टीकरण का प्रतिनिधित्व है । 'सूचना' पद का प्रयोग 'Data', 'Information' तथा 'Knowledge' के लिये किया जाता है । लेकिन ये तीनों पूर्णतः भिन्न-भिन्न हैं । यद्यपि यह आवश्यक नहीं है, तथापि अन्ततः न्यास (Data) सूचना को उत्पन्न कर सकता है । सूचना अनेक प्रकार की होती हैं ।"[1]

---

1 Tripathi, S.M. New Dimensions of Reference and Information Services, p.115

विचारधारा तथा तथ्यों को अभिव्यक्ति के आधार पर सूचना को ज्ञान का पर्यायवाची शब्द माना जाता है । ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोष में विचारधारा तथा तथ्यों के अनुसार सूचना शब्द का अर्थ सूचित करना (Informing), बताई गई बात (Thing told), कहना (Telling), ज्ञान (Knowledge), ज्ञान की वांछित वस्तु (Desired item of knowledge), तथा समाचार से लिया जाता है । इस प्रकार विचारधारा तथा तथ्यों की अभिव्यक्ति के अन्तर्गत सूचना का अर्थ उसके सभी उपयोगों के अनुरूप किया जाता है तथा इसे ज्ञान की सभी वांछित वस्तुओं के पर्यायवाची शब्द के रूप में माना जाता है ।

वास्तव में सूचना के अभिप्राय को स्पष्ट करने में उपरोक्त दोनो सिद्धान्त अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं । किन्तु सूचना के अभिप्राय या अर्थ को स्पष्ट करने के दृष्टिकोण पर विद्वानों में सहमति नहीं हो पायी है । इसी कारण विभिन्न विद्वानों ने समय-समय पर सूचना का अलग-अलग दृष्टिकोण से व्याख्या की है । विद्वानों द्वारा की गयी ये व्याख्यायें सार रूप में तीन भागों में बाँटा जा सकता है । ये सिद्धान्त निम्न प्रकार है-[1]

1. सूचना का निर्णय मूल्य सिद्धान्त
2. सूचना का गणितीय सिद्धान्त
3. शब्दार्थ सूचना सिद्धान्त

प्रावधिक स्तर पर सूचना का अर्थ बीट्स के सन्दर्भ में किया जाता है । इसके अनुसार सूचना निर्णय लेने की दृष्टि से अत्यन्त

---

1 Tripathi, S.M., New Dimensions of Reference and Information Sources, p.2,3

महत्वपूर्ण, मूल्यवान तथा मार्गदर्शक विवरण एवं तथ्य होता है । सूचना किसी अनिश्चित अवस्था में निर्णायक मण्डल को निर्णय पर पहुँचने तथा निदान खोजने में सहायता पहुँचाते हैं । यह एक निर्विवाद सत्य है कि सूचना एक सापेक्ष मात्रा है जिसे निर्णय लेने से पूर्व मात्राबद्ध किया जा सकता है ।

निर्णायकों की स्थिति को प्रभावित करने के लिए सूचना की अपेक्षित मात्रा, निर्णायकों को बोधगम्यता के स्तर पर एक विशेष प्रकार की तथ्यों की एक न्यूनतम मात्रा होती है । व्यक्ति, समय तथा स्थान के अनुसार सूचना की इस मात्रा में कमी या वृद्धि भी हो सकती है ।

इस प्रकार यह विचारधारा यह स्पष्ट करती है सूचना की व्याख्या निर्णय लेने के यंत्र के रूप में करती है ।[1] टेलीग्राफी के क्षेत्र में कार्यरत शैनॉन तथा वीवर के द्वारा सूचना की मात्रा संदेश के रूप में प्रेषित करने हेतु तकनीकों पर की गयी प्रारंभिक शोध के अनुसार सूचनाओं को गणितीय स्वरूप प्रदान किया गया । इस सिद्धान्त के अनुसार सन्देश में कोई क्या कहता है, पर अधिक ध्यान दिया जाता है । वास्तव में सूचना की यह व्याख्या सूचना के सम्प्रेषण का आधार तो हो सकती है किन्तु अकादमिक एवं ग्रन्थालयी दृष्टिकोण से उचित प्रतीत नहीं होती है । क्योंकि इस सिद्धान्त में सम्प्रेषण पद्धति के अनुसार सन्देश को गणितीय स्वरूप में परिर्वतित किया जाता है जो पुनः डीकोड कर मूल स्वरूप में लाया जाता है । इस प्रकार यह सिद्धान्त मूलतः

---

1 Shaw, D.F., " Information source" , p.56.

सम्प्रेषण सिद्धान्त है क्योंकि इसका आधार सूचना सम्प्रेषण में आने वाली लागत को कम करता है ।[1]

उपरोक्त दोनों व्याख्याओं के विपरीत फेयर थॉरे (Fair Thore) ने सूचना का वस्तु प्रवाह मानने से इन्कार करते हुए यह कहा कि सूचना एक ऐसा तथ्य है जिसे दबाकर उसी प्रकार निकाला जा सकता है जैसे जल से जल को निकाला जाता है । इसीलिए सूचना पर प्राप्तकर्ता की पूर्वावस्था का अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है ।[2]

उपरोक्त विवरणों से स्पष्ट है कि सूचना के अर्थ को स्पष्ट करने के प्रश्न पर विद्वानों में काफी भिन्नताएँ हैं । प्रमुख विद्वानों द्वारा दी गयी सूचना की परिभाषा को निम्नानुसार प्रदर्शित किया जा सकता है –

"हाफमेन के अनुसार वक्तव्यों अथवा तथ्यों अथवा संख्याओं की सम्पूर्णता को सूचना कहते हैं, जो बौद्धिक, तर्कपूर्ण, विचारधारा अथवा किसी अन्य मानसिक कार्य पद्धति के अनुसार धारणात्मक ढंग से आपस में एक दूसरे से सम्बद्ध होती है ।"[3]

> *"Information is an aggregate (collection or accumulation) of statements or fact or figures which are conceptual by way of reasoning, logic ideas, or any other mental mode of operation interdated (connected)."* - ***Haffman***

---

1 Foskeet, A.C., " Subject spproach to information", p. 35-40
2 Belkin N., "Information concepts for information science", p. 25-85.
3 Tripathi, S.M.,New Dimensions of Information and Reference Services p.115

“मिलर के अनुसार जब हमें किसी वस्तु का चयन करना होता है तो जिस वस्तु की आवश्यकता का अनुभव हम करते हैं, उसे सूचना कहते हैं । इसकी विषय वस्तु कुछ भी हो सकती है, जिस मात्रा में सूचना की आवश्यकता होती है, वह चयन की जटिलता पर आधारित होती है । यदि इसके अनेक व विस्तृत विकल्प है और किसी घटना का घटित होना संभव है अथवा कुछ होने की सम्भावना है तो हमे अपेक्षाकृत किसी एक साधारण विकल्प को चुनने के अधिकाधिक सूचना की आवश्यकता होती है ।”[1]

*("Information is something we need when we face a choice. Whatever its content the amount of information required, depends on the complexity of the choice. If we face a wide range of equally likely alternatives, it anything can happen, we need more information than if we face a simple choice between alternatives." - **Miller**)*

“जे. एच. शेरा के अनुसार सूचना का उपयोग जिस रूप में जीव वैज्ञानिक एवं ग्रन्थालयी करते हैं, उसे तथ्य कहते हैं यह एक उत्तेजना है, जिसे हम अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त करते हैं यह मात्र एक प्रकार का तथ्य हो सकता है अथवा तथ्यों का सम्पूर्ण समूह हो सकता है, तथापि यह एक इकाई होती है, यह विचारधारा की एक इकाई होता है ।”[2]

*"Information, both in the sense it is used by the biologist and in the sense we librarians use it, it is fact. It is the stimulus we receive through our senses. It may be an isolated fact or a whole cluster of facts, but it is still a unit, it is a unit of thought." - **J.H. Shera***

---

1 ibid p. 114
2 ibid, p.114

जे. बेकर के अनुसार "किसी विषय से सम्बन्धित तथ्यों को सूचना कहते हैं ।"[1]

*"facts about any subject" - **J. Becker***

नोरबर्ट बेनर के अनुसार "बाह्य जगत के साथ जो विनिमय होता है तथा जब हम इसके साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं और अपने सामंजस्य को जिस पर अनुभव करते हैं, उसकी विषय वस्तु के नाम को सूचना कहते हैं । सक्रियता एवं प्रभावशाली ढंग से जीने का अभिप्राय ही सूचना के साथ जीना है ।"[2]

> *"Information is the name for the content of what is exchanged with the outer world when we adjust to it and make our adjustment full upon it to live effectively is to live with inforamtion." - **Norbert Wiener***

एन. बल्किन के अनुसार "किसी भी विषय से सम्बन्धित तथ्यों को सूचना कहते है ।"[3]

> *"Information is that which is capable to transforming structure" – **N.Belkin***

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि सूचना मुख्यतः तथ्यों से निर्मित होती है । इन तथ्यों को अक्षरों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है । वास्तव में सूचना मात्र तथ्य नहीं होती क्योंकि तथ्य कभी भी व्यवस्थित नहीं होता । इसी कारण यह कहा जाता है कि अव्यवस्थित तथ्यों के चयन, व्यवस्थापन तथा व्याख्या करने की प्रक्रिया को सूचना कहा जाता है । यह ज्ञान, योग्यता एवं

---

1 ibid, p. 115
2 ibid, p. 114
3 ibid , p.115

विशिष्टीकरण का प्रतिनिधित्व करती है । अन्त में यह कहा जा सकता है कि "तथ्यों का चयन, व्यवस्थापन तथा व्याख्या कर उन्हें अक्षर और वाक्यों के माध्यम से अभिव्यक्ति सूचना कहलाती है । यह ज्ञान योग्यता तथा विशिष्टीकरण का प्रतिनिधित्व करती है ।"

आधुनिक युग वास्तव में एक सूचना युग है । सूचना एक महत्वपूर्ण संसाधन और शक्ति है । किसी देश के आर्थिक, सामाजिक, आद्यौगिक शैक्षणिक एवं राजनैतिक प्रगति में सूचना की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । सूचना की आवश्यकता के अनेक कारक हैं :-

1. सामाजिक एवं व्यवहारिक
2. व्यावसायिक
3. शैक्षणिक
4. मनोरंजनात्मक

उपरोक्त आवश्यकताओं के अतिरिक्त भी अनेक प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सूचनाएँ उपयोगी होती है । सूचनाओं के उपयोगिता की तीव्रता का आंकलन अध्येयताओं की आवश्यकता के आधार पर किया जा सकता है । सामान्यतः यह माना जाता है कि सूचना की उपयोगिता केवल वैज्ञानिक, तकनीकीविद, विशेषज्ञों तथा छात्रों को होती है । किन्तु समय के साथ-साथ यह धारणा पुरानी पड़ती जा रही है । आधुनिक समय में यह महसूस किया जा रहा है कि सूचना समाज के हर वर्ग के लिए उपयोगी

है । यह उपयोगिता अलग-अलग वर्गों में कम और अधिक तीव्र हो सकती है ।

आधुनिक काल में सूचना जितनी विस्तृत एवं विशाल मात्रा में रचित एवं उत्पन्न की जा रही है उतनी ही मात्रा में उसका अधिग्रहण एवं अर्जन भी किसी न किसी रूप में किया जा रहा है । सूचना आधुनिक समाज में विकास की एक आवश्यक वस्तु के रूप में मानी जाती है । आधुनिक समाज का विकास इस प्रकार की सूचनाओं की उपयुक्त मात्रा, स्वरूप एवं समय में उपलब्ध होने पर आधारित होता है । विकसित देशों में इस प्रकार की सूचनायें प्रदत्त करने हेतु सूचना केन्द्रों, प्रलेखन केन्द्रों की स्थापना की गई है । जिससे अध्येताओं को उनके विषय क्षेत्र से संम्बन्धित अद्यतन एवं नवीनतम सूचना से अवगत कराया जा सके । इससे अनुसंधान एवं विकास में समय एवं श्रम का यथोचित उपयोग हो सके ।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों, विषय विशेषज्ञों, विद्वानों, प्राध्यापकों आदि को अपने अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान कार्यों हेतु नवीनतम सूचना की आवश्यकता होती है इसी क्षेत्र के औद्योगिक संस्थानों, रक्षा अनुसंधानों, मौसम विज्ञानियों, पर्यावरणविदों, प्रशासकों, नियोजकों, नीति-निर्धारकों, आदि को भी नवीनतम सूचना की आवश्यकता होती है । अनुसंधान, विकास एवं उत्पाद आदि हेतु भी सूचना अपनी अलग ही उपादेयता रखती है । सूचना कितनी महत्वपूर्ण है इसका अनुमान सभी देशों के अनुसंधान एवं विकास पर किये जा रहे

विशाल वार्षिक व्यय से लगाया जा सकता है । इस प्रकार सूचनात्मक सामग्रियों पर किया जा रहा वार्षिक व्यय भी सूचना कितनी महत्वपूर्ण है, इंगित करता है ।

......

अध्याय-२

सूचना की प्रमुख श्रेणियाँ एवं उनकी उपयोगिता तथा विशेषताऐं

अध्याय -२

सूचना की प्रमुख श्रेणियाँ एवं उनकी उपयोगिता तथा विशेषताऐं

ज्ञान अथवा सूचना के अनेक स्रोत होते हैं जिनके आधार पर सूचना की श्रेणियाँ बनाई जाती है । आदिकाल से सूचना का प्रसरण / स्थानान्तरण के अनेक स्रोत रहे हैं । कागज, लिपि तथा मुद्रण एवं लेखन कला के विकास के पूर्व सूचना के स्रोत मौखिक और श्रुति साधन प्रमुख थे । लिपि, कागज तथा मुद्रण कला के विकास के साथ-साथ सूचना के स्रोतों में भी काफी तीव्र विक़ास हुआ । ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों के सम्मुख अनेक अवसर पर ऐसी समस्या उत्पन्न हो जाती है जब कोई अध्येता ऐसी जानकारी या सूचना के लिए आता है जिसे प्राप्त करने का स्रोत पहले से ज्ञात नहीं होता । अतः ऐसी स्थिति में सूचना स्रोतो से महत्वपूर्ण सूचना को ढूंढना तथा अध्येता को सुलभ करना सूचना तथा ग्रन्थालय कर्मी का प्रमुख दायित्व होता है ।

सूचना की प्राप्ती हेतु प्रयोग की सुविधा तथा व्यापक सुलभता की दृष्टि से प्रलेखों को अत्यधिक महत्व प्रदान किया जाता है । इसी कारण सूचना को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित करने की प्रक्रिया में प्रलेखों को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान दिया

गया है । प्रलेखों को परिभाषित करते हुये डॉ0 एस.आर. रंगनाथन ने लिखा है "प्रलेख जिसे प्रायः चौरस धरातल अथवा आवश्यकता पड़ने पर जिसे फैलाया जा सके ऐसे धरातल पर निर्मित तथा प्रस्तुत किया गया होता है; कागज पर प्रस्तुत किया गया, अथवा जो किसी अन्य सामग्री का बना होता है जो संभालने, किसी स्थान पर ले जाने तथा समयानुसार सुरक्षित करने योग्य हो, जो मस्तिष्क द्वारा विरचित विचारधारा जिसे भाषा अथवा प्रतीकों अथवा किसी अन्य विधा में व्यक्त किया गया होता है, अथवा जो प्राकृतिक अथवा सामाजिक परिघटना का अभिलेख हो सकता है, जिसे प्रत्यक्ष रूप से बिना किसी मानव मस्तिष्क से होकर प्रवाहित होने तथा इसके द्वारा विरचित तथा व्यक्त विचारों से गुंथा होने के किसी उपकरण / यंत्र द्वारा तैयार किया गया हो सकता है ।"[1]

एक अन्य सूचनाशास्त्री डी.ए. कैम्प के अनुसार "प्रलेख वह वस्तु होती है, जिसमें ज्ञान सूचना निहित एवं अभिलेखबद्ध होती है । इसे सामान्यतः अपने में परिपूर्ण माना जाता है तथा जिसका प्रारम्भ एवं अन्त सरलता पूर्वक मानने के योग्य होता है ।"[2]

उपरोक्त दोनो कथनों से स्पष्ट है कि प्रलेख किसी विशेष विषय पर ज्ञान / सूचना का एक अभिलेख होता है जिसमें उस विषय की उस समय तक की समस्त सूचना निहित होती है । यही कारण है कि सूचनाशास्त्री सूचना का वर्गीकरण मुख्य रूप से प्रलेखों के आधार पर करते हैं । डॉ0 रंगनाथन ने प्रलेखों

---

1 Ranganathan, Dr.S.R., "Documentation and its Facts" p.3
2 Kemp, D.A., "Current Awareness Services" p.63.

के आधार पर सूचना को चार श्रेणियों में बाँटा है । ये श्रेणियाँ निम्नलिखित हैं ।[1]

(1) परम्परागत सूचना श्रेणी – परम्परागत सूचना श्रेणी में पुस्तकों तथा सामयिकियों को शामिल किया जाता है ।

(2) नव–परम्परागत सूचना श्रेणी – नव–परम्परागत सूचना श्रेणी में विनिर्दिष्ट ऑकड़े, आधार–सामग्री, मानक तथा पेटेण्ट सम्बन्धी सूचनाओं को शामिल किया जाता है ।

(3) अपरम्परागत सूचना श्रेणी – अपरम्परागत सूचना श्रेणी के अन्तर्गत सूचना के उन श्रोतों को सम्मिलित किया जाता है जिन्हें परम्परागत रूप से सूचना एकत्र करने के लिए प्रयुक्त नहीं किया जाता है । डॉ0 रंगनाथन के अनुसार अपराम्परागत सूचना श्रेणी में श्रव्य, दृष्य, दृष्य एवं श्रव्य तथा सूक्ष्म रूपों को शामिल किया जाता है ।

(4) परा–प्रलेख सूचना श्रेणी – परा–प्रलेख सूचना श्रेणी में डॉ0 रंगनाथन ने बिना मानव मस्तिष्क की मध्यस्थता के प्रत्यक्ष परिघटनाओं को अभिलेखबद्ध करने वाली सूचनाओं को शामिल किया है ।

सूचनाओं की उपरोक्त श्रेणियों को सर्वमान्य नहीं माना जाता है । सामान्यतः सूचनाशास्त्री प्रलेखों को आधार मानकर सूचनाओं को विस्तृत पैमाने पर निम्नलिखित दो भागों में श्रेणीबद्ध करते हैं ।[2]

---

1 Rangnathan, Dr. S.R., "Documentation its fact" pp. 30-35

2 सुन्देरेश्वरन, के.एस., "संदर्भ सेवा सिद्धान्त और प्रयोग" पृ. 171

(1) प्रलेखी श्रेणी

(2) अप्रलेखी श्रेणी

(1) प्रलेखी श्रेणी – वास्तव में वह साहित्य या सूचना जो लिखित या मुद्रित रूप में उपलब्ध होती है प्रलेखी श्रेणी का साहित्य या सूचना कहलाती है । प्रलेखी श्रेणी की सूचनाओं को विषयों के उद्गम स्थान, उनकी व्याख्या, विस्तार तथा संक्षेप और उन पर मार्गदर्शन करने वाले तत्वों के आधार पर पुनः तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है । ये श्रेणियां निम्नलिखित हैं ।

(अ) प्राथमिक सूचना श्रेणी

(ब) द्वितीयक सूचना श्रेणी

(स) तृतीयक सूचना श्रेणी

उपरोक्त श्रेणियों का वर्णन निम्नानुसार हैः–

(अ) प्राथमिक सूचना श्रेणी – प्राथमिक सूचना श्रेणी के रूप में विषयों का उद्भव, विकास, प्रयोग तथा उनकी नई व्याख्या और विस्तार प्रकाश में आते हैं । विषय से सम्बन्धित नवीनतम तथ्यों का दर्शन प्राथमिक सूचना श्रेणी में होता है । इस श्रेणी के माध्यम से शोधार्थी नये विचार और ज्ञान का प्रदर्शन करता है । किसी भी विषय का स्वतंत्र अस्तित्व उसके प्राथमिक स्रोतों की व्यापकता पर निर्भर करता है । नये विचारों के सृजन में ये स्रोत अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं इसी कारण यह माना जाता है कि किसी भी विषय के विशेषज्ञ को

विषय में अद्यतन बने रहने के लिए प्राथमिक सूचना श्रेणी का सतत् अवलोकन अत्यन्त आवश्यक माना गया है ।

प्राथमिक सूचना श्रेणी में निम्नलिखित स्रोत उपलब्ध होते हैं :–

(i) व्यापार साहित्य – व्यापार साहित्य प्राथमिक सूचना के महत्वपूर्ण स्रोत हैं । इनमें वस्तुओं की विशेषताएँ, उपयोगिता, मूल्य, क्रय करने का तरीका, इस्तेमाल की विधि तथा बिक्री में वृद्धि के ऑकड़ों इत्यादि के विवरण होते हैं । निर्माता तथा वस्तु के विक्रेता इस प्रकार के साहित्य का प्रकाशन करते हैं ।

(ii) शोध–प्रबन्ध – शोध प्रबन्ध अत्यन्त विशिष्ट स्तर की प्राथमिक सूचना उपलब्ध कराते हैं । अनुसंधान के क्षेत्र में प्रशिक्षण देने और प्रशिक्षित व्यक्तियों को प्रमाण पत्र के रूप में उपाधि प्राप्त करने के लिए स्नातकोत्तर स्तर के छात्रों को शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करना पड़ता है । दो विभिन्न स्तरों पर यह दो रूपों में प्रस्तुत करना होता है, जो निम्नानुसार है ।

(क) लघु प्रबन्ध, और

(ख) प्रबन्ध

इन दोनों ही तरह के शोध प्रबन्धों में नवीनतम खोज के परिणाम प्रस्तुत किये जाते हैं । अतः यह प्रमुख प्राथमिक सूचना श्रेणी के स्रोत माने जाते हैं ।

(iii) शोध विवरण – शोध प्रबन्ध की भाँति ही शोध विवरण भी अत्यन्त महत्वपूर्ण प्राथमिक श्रेणी के सूचना स्रोत हैं इनमें किसी भी विषय में हो रहे शोध की प्रगति के बारे में नवीनतम

सूचना प्रदान करते हैं । ये साधारणतः अर्द्धप्रकाशित (मिमियोग्राफ्ड) और अप्रकाशित रूप में उपलब्ध होते हैं ।

(iv) शोध विनिबंध – शोध विनिबंध को रिसर्च मोनोग्राफ के नाम से भी जाना जाता है । शोध विनिबंध का उपयोग उस समय किया जाता है जब शोध परिणाम अधिक विस्तृत होते हैं तथा शोधकर्ता उसे कुछ विस्तार और व्याख्या के साथ प्रकाशित करना चाहता है । ऐसी स्थिति में शोध परिणामों को एक लेख के रूप में प्रकाशित करना अत्यन्त असम्भव होता है । अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं में इस प्रकार के शोध विनिबंध बराबर प्रकाशित होते हैं । ये शोध विनिबंध भी प्राथमिक श्रेणी के अत्यन्त महत्वपूर्ण सूचना स्रोत माने जाते हैं ।

(v) शोध और संवाद पत्रिकाएँ – प्राथमिक श्रेणी के सूचना स्रोतों में एक अन्य महत्वपूर्ण स्रोत शोध और संवाद पत्रिकाएँ हैं । व्यक्तिगत रूप से किए जाने वाले शोध और उनके परिणाम तथा मौलिक विचार सर्वप्रथम इन्ही शोध और संवाद पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं । विविध प्रयोगशालाओं में किए जाने वाले शोध और उनकी प्रगति की ताजा और अद्यतन जानकारी तथा सूचनाएँ संवाद पत्रिकाओं में छपते रहते हैं । लंदन से प्रकाशित होने वाली पत्रिका नेचर इस तरह की पत्रिकाओं का प्रमुख उदाहरण है।

(vi) स्वत्वाधिकार पत्र – स्वत्वाधिकार पत्र को पेटेन्ट लेटर के नाम से अधिक प्रचलित रूप में जाना जाता है । यह शासन तथा अन्वेषक के मध्य हुए एक समझौते का प्रमाण है । इस समझौते के द्वारा अन्वेषक को उसके द्वारा निर्मित कोई प्रक्रिया,

मशीन, उत्पादन इत्यादि को बनाने, बेचने और उसका उपयोग करने के लिए एक निश्चित अवधि तक उसे एकाधिकार प्राप्त हो जाता है । शासन द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में शोध तथा विकास को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से शासन द्वारा यह अधिकार अन्वेषक को प्रदान किया जाता है । शासकीय तथा अर्द्धशासकीय संस्था द्वारा समय–समय पर इसे प्रकाशित किया जाता है । स्वत्वाधिकार पत्र नवीन शोध के परिणामस्वरूप अन्वेषक को प्राप्त होता है अतः इसे एक महत्वपूर्ण प्राथमिक सूचना स्रोत के रूप में वर्गीकृत किया जाता है ।

(vii) पुस्तिका – कभी–कभी कुछ पुस्तिका या पेम्फलेट में शोध अध्ययन से सम्बन्धित नवीन सूचनाएँ उपलब्ध हो जाती है । ऐसी स्थिति में ये पुस्तिकाएँ भी प्राथमिक सूचना स्रोत का कार्य करती है ।

(viii) मानक – विविध वस्तुओं, सामग्री तथा क्रियाकलापों में एकरूपता बनाये रखने के लिए तथा उनकी उपयोगिता में वृद्धि करने के लिए गुणों के आधार पर वस्तुओं के मानकों का विकास किया जाता है । इन मानकों का प्रकाशन समय–समय पर किया जाता है । इन मानकों के प्रकाशन के दो मुख्य उद्देश्य होते हैं – प्रथम वस्तुओं का निर्माण मानकों के अनुरूप हों, तथा दूसरा उपभोक्ता जागृति । इस प्रकार इन मानकों के प्रकाशन शोधकर्ताओं के लिए प्राथमिक श्रेणी के सूचना स्रोत का कार्य करते हैं ।

(ix) अप्रकाशित स्रोत – प्राथमिक श्रेणी के अनेक सूचना स्रोत अप्रकाशित रूप में उपलब्ध होते हैं । ऐतिहासिक वस्तु और विषयों के अध्ययन के लिए इन्हें आधारभूत सामग्री माना जाता है । अप्रकाशित प्राथमिक श्रेणी के सूचना स्रोतों के प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित है –

(क) शिलालेख

(ख) सिक्के

(ग) हस्तलिखित ग्रन्थ और पाण्डुलिपि

(घ) दैनन्दिनी

(ङ) चित्र तथा मूर्तियाँ

(च) ऐतिहासिक शिल्पकला एवं अन्य सामग्रियाँ

(छ) राजकीय अभिलेख

(ज) व्यक्तिगत पत्र संग्रह

(झ) संस्था के आन्तरिक पत्राचार

उपरोक्त उदाहरणों के अतिरिक्त भी अनेक ऐसे उदाहरण हो सकते हैं जो शोधार्थी को अप्रकाशित रूप से उपलब्ध हो सकते हैं । ये सभी सूचना अध्येता को प्रथमवार उपलब्ध होती है । अतः प्राथमिक श्रेणी के सूचना स्रोतों में इनका प्रमुख स्थान है ।

(ब) द्वितीयक सूचना श्रेणी – द्वितीयक श्रेणी के सूचना स्रोत से तात्पर्य उन स्रोतों से लिया जाता है, जिसके माध्यम से उपयोगकर्ताओं / पाठकों को उनकी अभिरूचि तथा उपयोग के भौतिक

स्रोतों तथा सामग्रियों की जानकारी प्राप्त होती है ।[1] वास्तव में इन स्रोतों में से कुछ प्राथमिक स्रोतों के आधार पर तथा कुछ स्वतंत्र रूप से निर्मित होते हैं । अनेक प्राथमिक स्रोत समय पर अध्येताओं को उपलब्ध नहीं होते उनके बारे में कुछ पता भी नहीं होता ऐसी स्थिति में उनके बारे में पता लगाने के ये एक मात्र साधन होते हैं । इनमें विषय का विवेचना अत्यन्त व्यवस्थित रूप से आवश्यकतानुसार और संक्षेप में किया जाता है । इसके साथ इनमें ग्रंथगत विवरण भी सम्मिलित रहता है ।[2] वास्तव में द्वितीयक श्रेणी के सूचना स्रोतों के माध्यम से ही सूचनान्वेषण का कार्य प्रारम्भ किया जाता है तथा इनके माध्यम से ही प्राथमिक सूचना की प्राप्ती सम्भव है । द्वितीय श्रेणी के सूचना स्रोतों में निम्नलिखित प्रलेखों को शामिल किया जाता है :–

(i) पत्रिकाएँ – शोध पत्रिकाओं के अलावा अनेक प्रकार की पत्रिकाएँ प्रकाशित होती है । इन पत्रिकाओं में प्रस्तुत सूचना मौलिक नहीं होते । किन्तु इन पत्रिकाओं में मौलिक सूचना की व्याख्या विस्तार से उपलब्ध होती है । शोध के परिणामों को समझने में ये अत्यन्त सहायक सिद्ध होते हैं ।

(ii) वांगमय सूचियाँ – वांगमय सूचियों से तात्पर्य किसी विषय अथवा व्यक्ति विशेष पर एक सुव्यवस्थित एवं सुनियोजित तालिका से है । जिसके अन्तर्गत संलेखों को अनुलेखों के वर्णनुक्रम अथवा काल चक्रानुसार अथवा प्रकरणानुसार आंकलित किया गया होता है । यह विस्तृत, वृहत अथवा चयनात्मक हो सकती है । जिसके अन्तर्गत आंकलित संलेखों की व्याख्यात्मक

---

1 त्रिपाठी, डॉ0 एस.एम., "संदर्भ में सूचना सेवा के नवीन आयाम" पृ. 335

2 सुन्देरेश्वरन के.एस., "सन्दर्भ सेवा सिद्धान्त एवं प्रयोग" पृ. 175

विवरण भी प्रस्तुत किया गया होता है । वांगमय सूची को एक वृहत कृति के भाग के रूप में या पृथक कृति के रूप में भी प्रकाशित किया जा सकता है ।

(iii) सन्दर्भ पत्रिकाएँ – सन्दर्भ पत्रिकाओं से तात्पर्य उन पत्रिकाओं से है जिनका प्रयोग शोध कार्यो अथवा सूचना एकत्र करने की प्रक्रिया के दौरान किया जाता है । सन्दर्भ पत्रिकाओं की श्रेणी में निम्नलिखित पत्रिकाओं का समावेश किया जाता है :-

(क) अनुक्रमणात्मक पत्रिका

(ख) पर्यालोचन पत्रिका

(ग) समाचार संक्षेप पत्रिका

(घ) सारांश या सार पत्रिका

(ङ) क्रमिक प्रकाशन

इनका विवरण निम्नानुसार है :-

(क) अनुक्रमणात्क पत्रिका – शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित भौतिक आलेखों की तालिका के रूप में नियमित रूप से पत्रिकाओं की भाँति निश्चित अवधि के अन्तराल में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं को अनुक्रमणीकरण सामायिकियाँ या पत्रिकाओं के नाम से जाना जाता है । सन्दर्भ तथा सूचना प्रसार की दृष्टि में अनुक्रमणात्मक पत्रिकाएँ विशेषज्ञों को अद्यतन रखने की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है ।

(ख) पर्यालोचन पत्रिका – निर्धारित कालावधि में प्रकाशित पत्रिका के खण्ड और पुस्तक का पर्यालोचन पत्रिका कहते हैं ।

इसमें कथित विषय पर विवरणात्मक रूप से विकासात्मक वृत अंकित रहता है ।[1] इसके अन्तर्गत वार्षिक पत्रिका तथा कुछ अन्य सामयिक पत्रिकाओं को शामिल किया जाता है । विषय की दृष्टि से ये साहित्य ज्ञानधारा की मोड और प्रवृत्ति तथा विश्व ज्ञान की परिधि एवं क्षेत्र का विकास प्रदर्शित करते हैं । शोध कार्य और उनकी प्रगति के ख्याल से इन पत्रिकाओं का बौद्धिक जगत में विशेष स्थान हैं । बुद्धिजीवी वर्ग तथा विशेषज्ञ अपने ज्ञान को अद्यतन बनाये रखने के लिये इस प्रकार की पत्रिकाओं की खोज में हमेशा प्रयासरत रहता है ।

(ग) समाचार संक्षेप पत्रिका – सामान्यतः दैनिक समाचार पत्र हमारे आसपास घटने वाली घटनाओं का दर्पण माना जाता है । उनके अवलोकन से वर्तमान समाजिक, सांस्कृति, राजनैतिक, आर्थिक स्थिति का ज्ञान होता है । समाचार पत्रों का आकार–प्रकार बड़ा होता है । उसमें अनेक अनावश्यक और क्षणिक महत्व के समाचार भी छपे रहते हैं । इसी कारण दैनिक समाचार पत्रों के सारांश या संक्षेपण तैयार करना अत्यन्त आवश्यक समझा जाने लगा । समाचार संक्षेप पत्रिकाओं में तथ्य, घटना और अन्य सूचनाओं का सारांश तिथिकम में प्रकाशित किया जाता है । समाचार संक्षेप की उपलब्ध अधिकांश पत्रिकाएँ साप्ताहिक या पाक्षिक होती है । समाचार संक्षेप पत्रिकाओं की सहायता से पुस्तकालय में अनेक प्रकार के सामयिक और पूर्व घटना सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है । इस कारण ये पत्रिकाएँ अत्यन्त महत्वपूर्ण सन्दर्भ का कार्य करती है । विश्व

---

1 Hopworth, " A Primer of Assistance to Readers", p.06.

घटनाक्रम, फेक्ट्स ऑन फाइल इस तरह की पत्रिकाओं के प्रमुख उदाहरण है ।

(घ) सारांश या सार पत्रिका – सारांश पत्रिका एक सामायिक प्रकाशन है । इसके सामयिक अंकों से कथित विषय विशेष पर लेखों की सूची निकलती है और उसका हर संलेख अंकित लेख के सारांश से युक्त रहता है । इसमें नवीन पुस्तकों के व्याख्यात्मक संलेख भी सम्मिलित रह सकते हैं ।[1] ये पत्रिकाएँ वास्तव में किसी विषय विशेष के सूचना पुर्नप्राप्ति के एक उपकरण के रूप में एक अनुक्रमणिका का कार्य करती है । इसके साथ ही ये पत्रिकाएँ उस विषय की सामयिक स्थिति एवं प्रगति का एक सर्वेक्षण प्रस्तुत करती है जिसका अवलोकन एवं उपयोग करने से विशेषज्ञों को संक्षेप में उनकी अभिरूचि के अनेक आलेखों का सार ज्ञात हो जाता है ।

(ङ) क्रमिक प्रकाशन – क्रमिक प्रकाशन एक सामयिक प्रकाशन है । इसका प्रत्येक खण्ड अथवा खण्डों के सामयिक सम्मुचय में निर्धारित वर्ष या अन्य कालावधि से सम्बद्ध प्रायः एक ही प्रकार का विषय विवेचित रहता है । सामान्यतः एक सम्पूर्ण खण्ड के रूप में इसका प्रकाशन होता है । इसकी रचना विविध अंशदानों से नहीं होती है । क्रमिक प्रकाशन का एक पद इसके खण्ड विशेष को सूचित करने के लिए भी प्रयोग किया जाता है ।[2] क्रमिक प्रकाशन अनेक रूपों में उपलब्ध रहता है । इन सभी रूपों में यह अध्येताओं को प्राथमिक श्रेणी की सूचना उपलब्ध

---

1 Asworth, " Hand book of special Librarianship"., p. 314-321.

2 Ranganathan, Dr.S.R., "Library Book Selection.", p. 224.

करने में मदद प्रदान करती है । अतः इसे द्वितीयक स्रोतों में शामिल किया जाता है ।

(iv) सन्दर्भ ग्रन्थ – किसी विषय या तथ्य का स्पष्टीकरण अथवा पुष्टीकरण में जो तत्काल सहायक सिद्ध होता है, उसे सन्दर्भ ग्रन्थ कहते हैं । यह सन्दर्भ ग्रन्थ का शब्दिक अर्थ है किन्तु विभिन्न विद्वानों ने इसे अलग–अलग रूपों में परिभाषित किया है । प्रसिद्ध विद्वान लुइस शोर्स के अनुसार जिसे खास सूचना प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता है उसे सन्दर्भ गन्थ कहते हैं ।[1] इसी तरह डॉ. एस.आर. रंगनाथन ने कहा है, ‘‘सन्दर्भ ग्रन्थ ज्ञात सूचनाओं का संकलन तथा संगठन इस प्रकार करता है कि अभिष्ट सूचना तत्काल और विशद रूप से सामने आती है ।[2]

उपरोक्त कथनों से स्पष्ट है कि सन्दर्भ ग्रन्थ बाह्य स्मृति के सहायक साधन है । प्राथमिक श्रेणी के सूचनाओं की प्राप्ती तथा विषयों को समझने हेतु थे सबसे अधिक सहायक होते हैं ।

(v) अनुक्रमणी ग्रन्थ – विशिष्ट या महाग्रन्थ के अन्दर विवेचित प्रत्येक विषय की ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए स्वतंत्र ग्रन्थ अथवा ग्रन्थ के एक खण्ड के रूप में अनुक्रमणी खण्ड प्रकाशित किया जाता है । ग्रन्थ में उल्लिखित प्रत्येक विषय जैसे व्यक्तिगत नाम, विषय, आख्या, सूत्र, स्थान और अन्य महत्वपूर्ण बातें आवश्यक सन्दर्भों के साथ वर्णाक्रम अथवा अन्य पद्धति से प्रस्तुत रहता है । जिस कृति में अनुक्रमणिका का

---

1 Shores, Loues, Quoted in " An Introduction to reference work by W.A. Kat2. p.6.
2 Rangnathan, Dr.S.R., Quoted in "Reference work and its tool" by A.K. Mukharjee,p.37.

प्रयोग किया जाता है उस कृति की उपयोगिता बढ़ जाती है । अनुक्रमणी ग्रन्थ प्राथमिक श्रेणी के सूचना स्रोतों से आवश्यक सूचना पता करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान देती है । अतः इसे द्वितीयक श्रेणी का सूचना स्रोत माना जाता है ।

(vi) विनिबन्ध – तकनीकी विषयों को संक्षेप में समझाने के लिए अथवा प्रस्तुत करने के लिए लघु ग्रन्थ रचे जाते हैं । इन लघु ग्रन्थों को विनिबन्ध कहा जाता है । अंग्रेजी विनिबन्धों को मोनोग्राफ के नाम से जाना जाता है ।

(vii) समीक्षाएँ – समीक्षाओं से तात्पर्य किसी निश्चित समयावधि में जो कुछ किसी विषय विशेष के क्षेत्र में प्रगति एवं अनुसंधान हुए हैं उसे सुगठित, समन्वित, संक्षिप्त एवं आलोचनात्मक विवरण से है । समीक्षाओं का मुख्य उद्देश्य सम्बन्धित विषय की प्रवृतियों को स्पष्ट करना होता है । नियमित रूप से समीक्षाएँ आलेखों के संकलन के रूप में अथवा शोध पत्रिकाओं में किसी निबन्ध के रूप में इनका प्रकाशन वार्षिकी के रूप में अथवा मासिक और त्रैमासिक के रूप में किया जाता है । वास्तव में समीक्षात्मक साहित्य आलोचनात्मक सारांश होता है जो सम्बन्धित विषय में हुई प्रगति के साथ–साथ उक्त विषय की नवीन समस्याओं का भी उल्लेख करता है ।

(viii) मानक ग्रन्थ – किसी विषय विशेष पर मौलिक विचारों का विस्तार इतिहास, उदाहरण, आलोचना एवं नवीन मान्यताओं को जिस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया जाए उसे मानक ग्रन्थ कहते हैं ।

ये ग्रन्थ विषयों को प्रमाणिक ढंग से समझने एवं समझाने में अत्यन्त सहायक सिद्ध होते हैं ।

(xi) पाठ्य–पुस्तकें – अध्ययन और अध्यापन का कार्य करने का एक प्रमुख साधन पाठ्य पुस्तकें हैं । इनका उद्देश्य किसी विषय विशेष अथवा किसी प्रकरण विशेष पर बृहत विवरण प्रस्तुत करना नहीं होता है । बल्कि किसी विषय विशेष के मौलिक ज्ञान सम्बन्धित उत्तम विषय के अनेक पहलुओं से भली–भांति अध्येता को अवगत कराना होता है । विषय का प्रस्तुतीकरण सरल और सहज ढंग से किया जाता है । जिससे विद्यार्थियों को सहज ग्राह्य एवं विषय की बोधगम्यता प्राप्त हो सके । विविध शैक्षणिक स्तर के लिए अलग–अलग प्रकार की पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध होती हैं । इनमें विषय से सम्बन्धित आंकड़े, ग्रंथसूची, अनुक्रमणी आदि सहायक साधन दिये रहते हैं ।

(x) शब्दकोश – शब्दों के तात्पर्य, प्रयोग, व्युत्पत्ति तथा परिभाषा आदि की जानकारी के लिए शब्दकोशों का प्रयोग करना पड़ता है । मूलरूप से शब्दकोशों को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है, ये निम्नलिखित हैः–

(क) भाषा शब्दकोश

(ख) विषय शब्दकोश

इनमें शब्दों का विशिष्ट विवरण दिया होता है ।

(xi) अनुवाद – द्वितीयक श्रेणी के सूचना स्रोत में अनुवाद का भी प्रमुख स्थान है । ये अनुवाद मूल रूप से किसी दूसरे

भाषा में लिखित ग्रन्थों का अन्य भाषा में अनुदित करने से है । मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी द्वारा प्रकाशित एवं डॉ० विष्णु दत्त नागर द्वारा प्रो० इ.ए.जी. रॉबिन्सन द्वारा मूलतः अंग्रेजी भाषा में लिखे ग्रन्थ Monoboy का हिन्दी अनुवाद एकाधिकार अनुवादित कृति का एक प्रमुख उदाहरण है ।

(xii) मेन्यूअल – मेन्युअल एक निर्देशात्मक कृति होती है जिसके माध्यम से यह ज्ञात होता है कि कौन सा कार्य किस ढंग से किया जाना है । तकनीकी क्षेत्र में इनकी उपयोगिता अधिक होती है । किन्तु आधुनिक समय में संगठन के प्रत्येक क्षेत्र में इनका प्रचलन बढ़ता जा रहा है ।

(xiii) हेण्डबुक – हेण्डबुक उस कृति को कहा जाता है जिसमें अनेक प्रकार की सूचना को सुव्यवस्थित एवं संक्षिप्त रूप से संकलित किया गया होता है । इसमें तथ्य एवं आँकड़े, विधियाँ, सिद्धान्त और नियम इत्यादि का वर्णन होता है, जिनसे मार्गदर्शन प्राप्त होता है । दैनिक सूचना स्रोत के रूप में इनका प्रयोग किया जाता है ।

(xiv) सारणी – अनेक कृतियाँ ऐसी होती हैं जिनमें अनेक प्रकार के समंकों का विवरण होता है । इस प्रकार के समंकों को प्रस्तुत करने की विधि सारणी होती है ।

उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि प्राथमिक श्रेणी के सूचना स्रोतों की खोज हेतु अनेक पद्धतियाँ प्रचलित है । इन पद्धतियों को द्वितीयक श्रेणी के सूचना स्रोतों के नाम से जाना जाता है ।

इनका प्रयोग सूचना की आवश्यकता उद्देश्य, विषय तथा प्रलेखीय स्रोतों के अनुरूप किया जाता है ।

(स) तृतीयक सूचना श्रेणी – तृतीयक श्रेणी के सूचना स्रोत वे स्रोत होते हैं जो प्राथमिक और द्वितीयक श्रेणी के सूचना स्रोतों को पता लगाने में अध्येता की मदद करते हैं । ये विषय पर उतना प्रकाश नहीं डालते, बल्कि इनके द्वारा ग्रन्थगत सूचना अधिक प्राप्त होती है । जैसे ग्रन्थ का शीर्षक, विषय तथा ग्रन्थ के लेखक और प्रकाशक इत्यादि । विभिन्न प्रकार के विषयों पर अनेकानेक बढ़ते हुए प्रकाशनों ने तृतीयक सूचना स्रोतों के महत्व को अत्यन्त बढ़ा दिया है तथा इनमें दिनों दिन वृद्धि होती जा रही है । तृतीयक श्रेणी के सूचना स्रोतों के प्रमुख उपकरण निम्नलिखित हैं ।

(i) निर्देशिकाएं
(ii) वांगमय सूचियों की वांगमय सूची
(iii) साहित्य दर्शिकाएं
(iv) शोध प्रगति तालिकाएं
(v) वार्षिकी
(vi) डेटाबेस निर्देशिकाएं

निर्देशिकाएँ :

व्यक्तियों के नामों, व्यक्तियों के पते, संस्थाओं एवं संगठनों, उत्पादकों तथा सामयिकों की तालिका की कृति को निर्देशिका कहते हैं । शीघ्रतापूर्वक आसानी से अध्येताओं को वांछित सूचना प्राप्त कराने की दृष्टि से सूचना की तालिका को तदनुरूप प्रस्तुत किया गया होता है । यह आवश्यक नही होता कि "निर्देशिका

पद उसी की आख्या में सम्मिलित हों । निर्देशिकाओं के विषय की सीमा पर्याप्त व्यापक एवं विस्तृत होती है जो विभिन्न प्रकार के उत्पादनों एवं राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों की सूचना से युक्त होती है । इसका उदाहरण निम्नानुसार है –

1. Amercican Book trade directory Kent, England: R.R. Bowker - 1985-86.

2. World of learning - London: Europa 1947.

3. Ulrich's International Periodicals Directory - Kent, England: R.R. Bowker. 1986-87. 25th Ed. 2 Vols.

4. Guide to Current British Journals / compiled by David Wood Worth.- London Library Association, 1970.

5. Directory of American Research and Technology (DART): Kent, England: R.R. Bowker, 1986.

6. American Library Directory - Kent, England: R.R. Bowker 38 Ed., 1985, 2 Vols.

<u>वांगमय सूचियों की वांगमयसूचीः</u>

वांगमय सूची वस्तुतः तृतीयक स्रोत नहीं है लेकिन जब यह गौण स्रोतों को भी आंकलित करती है तो उसे एक तृतीयक स्रोत के रूप में प्रयुक्त किया जाता है ।

वांगमय सूचियों की वांगमय सूची के अन्तर्गत वांगमय सूचियों की तालिकाकरण की जाती है जो अध्येताओं को विषय व्यक्तिगत नाम, स्थान, संस्थाओं के माध्यम से उपयोगी वांगमय

सूचियों का संकेत करती है । जिनका उपयोग पाठ्य सामग्रियों की जानकारी हेतु किया जा सकता है । जिन वांगमय सूचियों का संकेत किया गया होता है वे एक पृथक से प्रकाशित पुस्तकों की वांगमय सूची हो सकती है, अथवा किसी पुस्तक के एक भाग के रूप में हो सकती है । यह किसी पत्रिका में प्रकाशित आलेख के एक भाग अथवा किसी अन्य प्रलेख के रूप में हो सकती है ।

प्रत्येक वर्ष प्रकाशित होनेवाली वांगमय सूचियों की संख्या अधिक होती जा रही है । अतः वांगमयसूचियों की वांगमय सूची पूर्ण रूपेण चयनात्मक होती है जिसका उदाहरण निम्न प्रकार है –

1. Index Bibliographicus - 4th Ed. The Hague, FID, 1959.
2. A World Bibliography of Bibliographies / Jheodore Besterman, 4th Ed., Geneva: Societies Bibliographica, 1965-67.
3. Bibliographical Index: a cumulative Bibliography of Bibliographies - N.Y., W.H. Wilson, 1937.

<u>साहित्य दर्शिकाएँ:</u>

साहित्य की मार्गदर्शिकाओं का उद्देश्य अध्येताओं का किसी विषय विशेष के साहित्य का उपयोग करने में सहायता एवं मार्गदर्शन प्रदान करना होता है । किसी विषय के मूल्यांकन एवं प्रारंभिक स्थिति से लेकर उसके प्रौढ़ स्थिति का परिचय उपलब्ध करना भी इन मार्गदर्शिकाओं का कार्य होता है । अतः इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से गौण एवं तृतीयक स्रोतों का उपयोग किया गया होता है । किसी विशेष विषय वस्तु के अतिरिक्त उसके साहित्य पर अधिक महत्व दिया गया होता है । साथ ही किसी

विषय के क्रमिक विकास में सहायक ग्रन्थात्मक उपकरणों (Tools), संस्थाओं एवं मौलिक विषय साहित्य का उपयुक्त विवरण आदि भी प्रस्तुत करती है । इसका उदाहरण निम्नलिखित है –

1. Using the Biological literature. A Practical Guide, E.B. Davis,- N.Y. Marcel Dekker, 1981.

2. Guide to the literature of the Life Science /Roger C. Smith and W.M. Reid., 8th Ed. Minnesota : Burgess, 1969.

3. Readers Guide to the Social Sciences / Ed. by Bertly F. Hasejut Z. Rev. Ed. NY. Free Press, 1970.

शोध प्रगति तालिकाएँ:

सर्वत्र चल रहे व्यवहारिक एवं सैद्धांतिक शोधों की पुनरावृत्ति और अतिव्यापन से सतर्क रहने एवं विज्ञान तथा अन्य क्षेत्रों के शोधकर्ताओं से सम्बन्धित विषयों के शोध की कार्यविधियों से अद्यतन रखने के लिये यह आवश्यक है कि शोधकार्यों की तालिकाएँ प्रस्तुत की जाएँ । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऐसे उपकरणों को तैयार किया जाता है जिन्हें शोध प्रगति तालिकाएँ कहते हैं ।

इस क्षेत्र में शोध को प्रोत्साहित एवं अनुदान प्रदान करने वाली संस्थाएँ शोध प्रगति तालिकाएँ भी तैयार करती हैं । ऐसी तालिकाएँ शोध के प्रारूप एवं परियोजनाओं को तैयार करने में मार्गदर्शन का कार्य करती हैं । इन तालिकाओं में शोध की आख्या, शोधकर्ता, संस्था, आदि विवरण का प्रस्तुत करती हैं । इसका उदाहरण निम्नलिखित है –

1. Current Research Projects in CSIR Laboratories - 1972-74.

2. Direction of Scientific Research in Indian Universities, 1974.

3. University news, Association of Indian Universities.

वार्षिकी:

वार्षिकी वर्ष भर में एक बार प्रकाशित होने वाला एक क्रमिक प्रकाशन है । इसके अर्न्तगत विविध विषयों से सम्बन्धित सूचनाओं और तथ्यों को काल क्रमानुसार प्रस्तुत किया जाता है। वर्ष भर में विभिन्न विषयों के अन्तर्गत नवीन ज्ञान के उद्‌भव तथा महत्वपूर्ण घटनाक्रमों का समावेश रहता है । वास्तव में यह विश्वकोश का एक पूरक साहित्य है । विश्वकोश के अन्तर्गत एक निश्चित अवधि तक की सूचनाएँ अंकित रहती हैं । इन सूचनाओं के अन्तर्गत वार्षिक वृद्धि को वार्षिकी के अन्तर्गत शामिल किया जाता है । वार्षिकी को सामान्य वार्षिक ग्रन्थ, वार्षिकी, पंचांग इत्यादि नामों से जाना जाता है । इसी तरह अंग्रेजी में इसे Year Book, Almanac तथा Annual के नाम से पुकारा जाता है । वार्षिकी के कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित है –

1. Annual Report, All India Coordinated of Micronutrients in Soils and Plants. Indian Council of Agricultural Research, New Delhi, (1980-81).

2. Annual Review of Fertilizer Consumption and Production 2000-01, Fertilizer Association of India (FAI), 2001

3. World Development Report, 2001, World Bank, New York.

4. Economics Survey, 2001-02, Ministry of Finance, Government of India, New Delhi, 2002.

5. Annual Report of the Development of Banking in India, 2001, Reserve Bank of India, Mumbai, 2002.

6. India, A reference Annual, 2001, Ministry of Information & Broadcasting Government of India, New Delhi, 2001.

<u>डेटाबेस निर्देशिकाएँ:</u>

संदर्भ एवं सूचना की दृष्टि से आज के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के युग में मूल मुद्रित और अमुद्रित संदर्भ स्रोतों की जानकारी संदर्भ ग्रन्थालयों के लिए आवश्यक मानी जाती है । अमुद्रित संदर्भ स्रोतों के रूप में आजकल डेटाबेसों का प्रचलन अत्यधिक बढ़ता जा रहा है । डेटाबेस को यंत्रण पठनीय स्रोत के नाम से भी जाना जाता है । इन्हें सूचना सामग्रियों के उन स्रोतों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिनकी व्यवस्था व उपयोग कम्प्यूटर के माध्यम से किया जाता है । वास्तव में डेटाबेस सुव्यवस्थित एवं कमबद्ध सूचनाओं का संग्रह होता है जो आमतौर पर कम्प्यूटर के मैग्नेटिक टेप अथवा डिस्क पैक में समाहित होता है ।

(2) अप्रलेखी श्रेणी – अप्रलेखी श्रेणी के सूचना स्रोतों से तात्पर्य उन सूचना स्रोतों से है जो लिखित और मुद्रित रूप से उपलब्ध नहीं होती है । वास्तव में विज्ञान और तकनीक के सूचना सम्प्रेषण की प्रकिया में अत्याधिक भागीदारी बढ़ने के साथ–साथ अप्रलेखी श्रेणी के सूचना स्रोतों की संख्या में काफी विस्तार हुआ

है । सामान्यतः अप्रलेखी श्रेणी के सूचना स्रोतों को निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है –

(अ) औपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोत

(ब) अनौपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोत

(स) अर्द्ध औपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोत

इनका विवरण निम्नानुसार है –

(अ) औपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोत – औपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोत से तात्पर्य उन सूचना स्रोतों से है जिन्हें सामान्यतः ग्रन्थात्मक नियंत्रण के अन्तर्गत रखा जा सकता है । अर्थात वे सभी सूचना के स्रोत औपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोत है जिन्हें परम्परागत एवं उपयुक्त द्वितीयक श्रेणी के सूचना स्रोतों से उपलब्ध किया जा सकता है । Indian National Bibliography एवं British National Bibligraphy, इसके प्रमुख उदाहरण है । औपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोतों के अन्तर्गत शोध संस्थाएं, संगठन, परिषद्, उद्योग, शासकीय विभाग, विश्वविद्यालय परामर्श केन्द्रों को भी शामिल किया जाता है । इन संस्थाओं के द्वारा समय–समय पर की गई बैठकें, सेमीनार, संगोष्ठी तथा विचार–विमर्श औपचारिक श्रेणी के सूचना के बड़े साधन है । इन साधनों के अतिरिक्त पुस्तकों आलेखों, पत्रिकाओं इत्यादि का ध्वनि अभिलेख तथा फिल्मांकनों को भी औपचारिक श्रेणी के बड़े सूचना स्रोतों के रूप में जाना जाता है । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दूरदर्शन पर प्रसारित राष्ट्रीय कक्षाएं इस प्रकार के सूचना स्रोतों का प्रमुख उदाहरण है ।

(ब) अनौपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोत – अनौपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोतों के अन्तर्गत उन सूचना स्रोतों को रखा गया है जो या तो अप्राप्त है या फिर बड़ी कठिनाई से उन्हें प्राप्त किया जा सकता है । इन स्रोतों के अन्तर्गत मुख्यतः निम्न तथ्यों को शामिल किया जाता है –

(i) सहयोगियों से बातचीत,

(ii) आगन्तुकों से विचार विमर्श,

(iii) विशेषज्ञों से चर्चा,

(iv) व्यवसायिक एवं विशिष्ट संगोष्ठियों में भाग लेना,

(v) कार्य स्थल पर विशेष निर्देश

उपरोक्त तथ्यों से सूचना की प्राप्ति आपसी विचार विमर्श के द्वारा प्राप्त हो सकती है ।

(स) अर्द्ध–औपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोत – औपचारिक और अनौपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोतों के मध्य ऐसे सूचना स्रोत भी होते हैं जिन्हें अर्द्ध औपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोत कहते हैं । इन सूचना स्रोतों में सूचना सेवाओं द्वारा उपलब्ध कराये गई सूचना होती है । इसके अतिरिक्त ऐसी सूचनाएं भी इस श्रेणी में शामिल की जाती है जिन्हें विशिष्ट संघ अथवा संस्थाएं अपने सदस्यों को उपलब्ध कराते हैं ।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अध्येता के पास सूचना प्राप्ति के अनेक साधन उपलब्ध हैं । इन साधनों की उपयोगिता अध्येता की सूचना प्राप्ति की इच्छा और आवश्यकता की तीव्रता पर निर्भर करती है । आज का युग ज्ञान के विस्फोट का युग

है । ज्ञान के विस्फोट का तात्पर्य है प्रत्येक वर्ष नित्य–प्रति ज्ञान के विभिन्न स्वरूपों में उत्पादन एवं प्रकाशन की विशाल मात्रा एवं संख्या । आधुनिक समय में इस विशाल सूचना तथा प्रकाशन संसार से अध्येता की आवश्कता कितनी है । वह कितनी सूचना ग्रहण करने की क्षमता रखता है ? कौन सी सूचना उसके उद्देश्य की पूर्ति करती है ? ये अत्यन्त गंभीर प्रश्न है । इन्हीं प्रश्नों के उत्तर उपरोक्त सभी सूचना श्रेणियों की उपयोगिता को निर्धारित करते हैं । इन श्रेणियों का सबसे बडा लाभ ग्रन्थालयी को होता है क्योकि जब उसे अध्येता की समस्याओं की जानकारी हो जाती है तब वह इन श्रेणियों में दिये गये सन्दर्भो की सहायता से उत्तर प्रदान कर अध्येता की मदद कर सकता है ।

उपरोक्त विवेचन से यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि अध्येता जब किसी ग्रन्थालयी के पास अपनी सूचना की आवश्यकता को लेकर आता है तब ग्रन्थलयों से वह सूचना प्राप्ति में मदद की मांग करता है । किन्तु अनुभवहीन ग्रन्थालयी उस समय अपने को अत्यन्त असहाय स्थिति में पाता है जब वह सूचना प्राप्ति के उद्देश्य से आये अध्येता के कौन, क्या, कब, कहॉ, कैसे और क्यों जैसे छः प्रश्नों का उत्तर देने में स्वयं को असमर्थ पाता है तब इन प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए अनुभवी और प्रशिक्षित ग्रन्थलयी सूचना के विभिन्न श्रेणीगत स्रोतों का प्रयोग करता है तथा अध्येता की आवश्यकता, उद्देश्य, सुविधा, साधन के अनुरूप सूचना उपलब्ध कराता है । यह सूचना उसे सूचना प्राप्त करने की अलग–अलग श्रेणियों के माध्यम से प्राप्त होती है जिनकी अपनी पृथक एवं भिन्न विशेषताऐं हैं ।

.....

अध्याय-३

तृतीयक सूचना स्रोत : अभिप्राय, उद्देश्य, उपयोगिता एवं इसके विभिन्न प्रकार तथा क्रमिक विकास की स्थिति की प्रवृत्तियाँ

अध्याय -3

तृतीयक सूचना स्रोत : अभिप्राय, उद्देश्य, उपयोगिता एवं इसके विभिन्न प्रकार तथा क्रमिक विकास की स्थिति की प्रवृत्तियाँ

तृतीयक सूचना स्रोतों में मौलिक एवं गौण सूचना स्रोतों से संग्रहित कर जो सूचना प्राप्त की जाती है, निहित होती है, एक प्रकार से प्राथमिक एवं गौण स्रोतों के सूचना को प्रयोग करने में अध्येताओं को जिन सूचना स्रोतों से सहायता प्राप्त होती है उन्हें तृतीयक स्रोत कहा जाता है । अतः तृतीयक स्रोतों का मुख्य कार्य एवं उद्देश्य अध्येताओं तथा विशेषज्ञों को मौलिक एवं गौण स्रोतों के प्रयोगार्थ वांछित सूचना की प्राप्ति एवं खोज में सहायता प्रदान करना होता है । इसी श्रेणी के अधिकांश स्रोतों में विषय ज्ञान नहीं होता है । बल्कि इनसे सूचना से सम्बन्धित स्रोतों का संकेत मिलता है । ज्ञान के विशाल भण्डार एवं इसमें निरन्तर वृद्धि के कारण तृतीयक स्रोतों का महत्व अधिक बढ़ता जा रहा है । इस श्रेणी के स्रोतों वस्तुतः अन्य सभी प्रकार की स्रोतों की अपेक्षा अन्त में ही प्रकाशित एवं प्रस्तुत किये जाते हैं ।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि तृतीयक सूचना स्रोतों का विकास निम्नलिखित उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु किया गया है ।

1. मौलिक एवं द्वितीयक स्रोतों के प्रयोगार्थ वांछित सूचना की प्राप्ति एवं खोज में मदद प्रदान करना,

2. ज्ञान के अथाह सागर में सूचना के सन्दर्भ ज्ञात करने में, ग्रन्थालयी एवं अध्येता की मदद करना,
3. अध्येताओं को आसानी से सूचना प्राप्त करने में मददगार बनाना।
4. ज्ञान का विकेन्द्रीकरण कर उसके प्रचार और प्रसार में मदद प्रदान करना ।
5. अभिव्यक्ति के समस्त माध्यमों का संग्रह कर उनका संगठन, संरक्षण तथा अध्येताओं को आवश्यकतानुसार सुलभ कराना ।
6. ज्ञान के प्रवाह को सदा गतिशील बनाये रखने में मदद प्रदान करना ।
7. सामाजिक स्मृति को जागृत और सक्रिय रखने में मदद प्रदान करना ।

तृतीयक सूचना स्रोतों के उपयोग उपरोक्त वर्णित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया जाता है । तृतीयक सूचना स्रोतों की प्रकृति से स्पष्ट है कि इनका उपयोग शोध और अन्वेषण कार्य आदि में संलग्न व्यक्तियों द्वारा किया जाता है । इसी आधार पर तृतीयक सूचना स्रोतों की उपयोगिता निर्धारण हेतु विभिन्न संकायों में शोधरत व्यक्तियों का सर्वेक्षण किया गया है । मानविकी एवं समाज विज्ञान के शोधार्थियों को तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से शामिल किया गया है । इस सर्वेक्षण में शोधार्थियों को संकायवार दो स्तरों पर विभाजित किया है । ये स्तर है :-

1. पीएच.डी. हेतु शोधरत शोधार्थी
2. व्यवसायिक रूप से कार्यरत शोधार्थी

इन दोनों स्तर पर शोधरत शोधार्थियों से सवेक्षण के दौरान निम्नलिखित प्रश्न पूछे गए –

1. नाम
2. पता
3. शैक्षणिक योग्यता
4. व्यवसाय
5. क्या आप अपने अध्ययन के दौरान तृतीयक सूचना स्रोतों का प्रयोग करते हैं ।
6. यदि हाँ तो कौन–कौन सी
7. तृतीयक सूचना स्रोतों की उपयोगिता क्या है ?

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने हेतु 300 शोधार्थियों से प्रश्न पूछे गए जिनका विवरण निम्नानुसार है –

तालिका 3.1

तृतीयक सूचना स्रोतों की उपयोगिता ज्ञात करने हेतु किए गए सर्वेक्षित शोधार्थियों का विवरण

क्र. सं.	संकाय	शोध छात्रों की संख्या	व्यवसायिक शोधार्थियों की संख्या	योग
1.	मानवीकी	30	30	60
2.	समाज विज्ञान	30	30	60
3.	विज्ञान	30	30	60
4.	अभियांत्रिकी	30	30	60
5.	आयुर्विज्ञान	30	30	60
	योग	150	150	300

उपरोक्त तालिका 7.1 में दर्शाये गए विवरण के अनुसार सर्वेक्षित शोधार्थियों से प्राप्त उत्तर को विश्लेषण की सुविधा के लिए दो भागों में विभाजित किया जा सकता है जो निम्नानुसार है –

1. शोध छात्रों का वर्ग,
2. व्यवसायिक शोधकर्ताओं का वर्ग,

सर्वप्रथम शोध छात्रों द्वारा अपने उत्तरों में तृतीयक सूचना स्रोतों के जिन उपकरणों का उपयोग किया है उनका विवरण तालिका 3.2 में दर्शाया गया है ।

तालिका 3.2

शोध छात्रों द्वारा तृतीयक सूचना स्रोतों का प्रयोग

क्र.सं.	तृतीयक सूचना स्रोतों के विभिन्न उपकरणों का प्रयोग	शोध छात्रों की संख्या	प्रतिशत
1.	डेटाबेस निर्देशिकाएँ	90	60
2.	शोध प्रगति तालिकाएँ	150	100
3.	वांगमय सूचियों की वांगमय सूची	105	70
4.	वार्षिकी	45	30
5.	साहित्य दर्शिकाएँ	75	50

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सर्वेक्षित शोध छात्रों के द्वारा बड़े पैमाने पर तृतीयक सूचना स्रोतों के उपकरणों का प्रयोग किया जाता है ।

शोध छात्रों द्वारा मुख्यतः पांच उपकरणों का प्रयोग अपने शोध कार्यों के दौरान किया जाता है । जिनमें सबसे अधिक लोकप्रिय साधन शोध प्रगति तालिकाएँ है जिसे सभी शोध छात्रों द्वारा उपयोग में लाया जाता है । इसके बाद क्रमशः वांगमय सूचियों की वांगमय सूची, डेटाबेस निर्देशिकाएँ साहित्य दर्शिकाएँ तथा वार्षिकी का स्थान है । इन्हें क्रमशः 70, 60, 50 एवं 30 प्रतिशत शोध छात्रों द्वारा उपयोग में लाया जाता है ।

इन शोध छात्रों द्वारा तृतीयक सूचना की बतायी गयी उपयोगिता को तालिका 3.3 में दर्शाया गया है ।

तालिका 3.3

शोध छात्रों द्वारा बताई गयी तृतीयक सूचना स्रोतों की उपयोगिता

क.सं.	उपयोगिता	बताने वाले शोध छात्रों की संख्या
1.	तथ्यात्मक सूचना	150
2.	विषय या विचार प्रक्रिया सम्बन्धी उपयोगिता	150
3.	सूक्ष्म विषयों पर विस्तृत सूचना	150
4.	विविध विषयों के सन्दर्भों को ज्ञात करना	150
5.	प्राचीन एवं ऐतिहासिक सूचना	150

उपरोक्त तालिका 3.3 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सभी शोध छात्रों द्वारा एक स्वर से निम्नलिखित पाँच उपयोगिताओं को बताया –

1. तृतीयक सूचना स्रोत विषय की तथ्यात्मक अथवा ऑकड़े प्राप्त करने में अत्यन्त मददगार साबित होते हैं ।

2. तृतीयक सूचना स्रोतों के विभिन्न उपकरण किसी विषय के विकास या विचार प्रक्रिया के विकास की संक्षिप्त तथा आवश्यकतानुसार विस्तृत जानकारी प्राप्त करने में अत्यन्त उपयोगी होते हैं ।

3. तृतीयक सूचना स्रोतों से सूक्ष्म साहित्य की उपलब्धता आसानी से ज्ञात हो जाती है ।

4. शोध कार्यों में सहायक सन्दर्भो को ज्ञात करने में अत्यन्त मददगार सिद्ध होती है ।

5. तृतीयक सूचना स्रोतों के द्वारा प्राचीन एवं ऐतिहासिक सूचना आसानी से ज्ञात की जा सकती है ।

शोध छात्रों की भांति व्यवसायिक रूप से कार्यरत शोधार्थियों से तृतीयक सूचना की उपयोगिता के विभिन्न प्रश्नों को सर्वेक्षण के दौरान पूछा गया । इन प्रश्नों के उत्तर में प्राप्त तथ्यों को निम्नानुसार विश्लेषित कर तालिकाबद्ध किया गया है ।

तालिका 3.4

व्यवसायिक शोध कर्मियों द्वारा तृतीयक सूचना स्रोतों का उपयोग

क.सं.	तृतीयक सूचना स्रोतों के विभिन्न उपकरणों का प्रयोग	व्यवसायिक शोध कर्मियों की संख्या	प्रतिशत
1.	डेटाबेस निर्देशिकाएँ	150	100
2.	शोध प्रगति तालिकाएँ	150	100
3.	वांगमय सूचियों की वांगमय सूची	150	100
4.	निर्देशिकाएँ	120	80
4.	वार्षिकी	90	60
5.	साहित्य दर्शिकाएँ	105	70

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि व्यवसायिक शोध कर्मियों द्वारा सामान्यतः छः प्रकार के तृतीयक सूचना स्रोत उपकरणों का प्रयोग करते हैं । जिनमें डेटाबेस निर्देशिकाएँ शोध प्रगति तालिकाओं, वांगमय सूचियों की वांगमय सूची का शत-प्रतिशत सर्वेक्षित व्यवसायिक शोधकर्मियों द्वारा प्रयोग किया जाता है जबकि निर्देशिकाओं, साहित्य दर्शिकाओं एवं वार्षिकी का प्रयोग क्रमशः 80, 70 एवं 60 प्रतिशत सर्वेक्षित व्यवसायिक शोध कर्मियों द्वारा किया जाता है ।

तृतीयक सूचना स्रोतों की उपयोगिता के प्रश्न पर दिये गए उत्तरों को निम्नलिखित तालिका 3.5 में प्रदर्शित किया गया है ।

तालिका 3.5

व्यवसायिक शोध कर्मियों द्वारा बताई गयी तृतीयक सूचना स्रोतों की उपयोगिता

क्र.सं.	उपयोगिता	बताने वाले व्यवसायिक शोध कर्मियों की संख्या
1.	तथ्यात्मक सूचना	150
2.	अत्यन्त नवीन सूचना	150
3.	सन्दर्भ स्त्रोंतों की सूचना	150
4.	प्राचीन एवं ऐतिहासिक सूचना	150
5.	सूक्ष्म विषयों पर विस्तृत सूचना	150
6.	विषय याविचार प्रक्रिया के विकास की सूचना	150
7.	साहित्य को प्रस्तुत करना	150

उपरोक्त तालिका 3.5 का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट है कि व्यवसायिक शोध कर्मियों द्वारा तृतीयक सूचना स्रोतों को शोध कार्यों अत्यन्त उपयोगी माना है । इन व्यवसायिक शोध कर्मियों द्वारा सर्वसम्मति से तृतीयक सूचना स्रोतों के सात उपयोगिता क्षेत्र बताये । इन क्षेत्रों में वे पाँच क्षेत्र भी शामिल है जो शोध छात्रों ने बताये थे । अन्य दो क्षेत्र निम्नलिखित हैं –

1. विषय में घटित होने वाली नवीन सूचना प्राप्ति में तृतीयक सूचना स्रोत अत्यन्त उपयोगी है ।

2. इसी तरह विभिन्न विषयों के साहित्य को आवश्यकतानुसार प्रस्तुत करने में अत्यन्त उपयोगी माने जाते हैं ।

मौलिक स्रोतों से दो बार विस्थापित इन सूचना स्रोतों में सभी संदर्भ के स्रोतों के प्रकार आते हैं जिनमें निम्नांकित प्रमुख हैं –

<u>निर्देशिकाएँ</u> :

व्यक्तियों के नामों, व्यक्तियों के पते, संस्थाओं एवं संगठनों, उत्पादकों तथा सामयिकों की तालिका की कृति को निर्देशिका कहते हैं । शीघ्रतापूर्वक आसानी से अध्येताओं को वांछित सूचना प्राप्त कराने की दृष्टि से सूचना की तालिका को तदनुरूप प्रस्तुत किया गया होता है । यह आवश्यक नही होता कि ''निर्देशिका पद उसी की आख्या में सम्मिलित हों । निर्देशिकाओं के विषय की सीमा पर्याप्त व्यापक एवं विस्तृत होती है जो विभिन्न प्रकार के उत्पादनों एवं राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों की सूचना से युक्त होती है । इसका उदाहरण निम्नानुसार है –

1. Amercican Book trade directory Kent. England: R.R. Bowker - 1985-86.
2. World of learning - London: Europa 1947.
3. Ulrich's International Periodicals Directory - Kent, England: R.R. Bowker. 1986-87. 25th Ed. 2 Vols.
4. Guide to Current British Journals / compiled by David Wood Worth.- London Library Association, 1970.
5. Directory of American Research and Technology (DART): Kent, England: R.R. Bowker, 1986.

6. American Library Directory - Kent, England: R.R. Bowker 38 Ed., 1985, 2 Vols.

<u>वांगमय सूचियों की वांगमयसूची:</u>

वांगमय सूची वस्तुतः तृतीयक स्रोत नहीं है लेकिन जब यह गौण स्रोतों को भी आंकलित करती है तो उसे एक तृतीयक स्रोत के रूप में प्रयुक्त किया जाता है ।

वांगमय सूचियों की वांगमय सूची के अन्तर्गत वांगमय सूचियों की तालिकाकरण की जाती है जो अध्येताओं को विषय व्यक्तिगत नाम, स्थान, संस्थाओं के माध्यम से उपयोगी वांगमय सूचियों का संकेत करती है । जिनका उपयोग पाठ्य सामग्रियों की जानकारी हेतु किया जा सकता है । जिन वांगमयसूचियों का संकेत किया गया होता है वे एक पृथक से प्रकाशित पुस्तकों की वांगमयसूची हो सकती है, अथवा किसी पुस्तक के एक भाग के रूप में हो सकती है । यह किसी पत्रिका में प्रकाशित आलेख के एक भाग अथवा किसी अन्य प्रलेख के रूप में हो सकती है ।

प्रत्येक वर्ष प्रकाशित होनेवाली वांगमय सूचियों की संख्या अधिक होती जा रही है । अतः वांगमयसूचियों की वांगमय सूची पूर्ण रूपेण चयनात्मक होती है जिसका उदाहरण निम्न प्रकार है –

1. Index Bibliographicus - 4th Ed. The Hague, FID, 1959.
2. A World Bibliography of Bibliographies / Jheodore Besterman, 4th Ed., Geneva: Societies Bibliographica, 1965-67.
3. Bibliographical Index: a cumulative Bibliography of Bibliographies - N.Y., W.H. Wilson, 1937.

साहित्य दर्शिकाएँ:

विषयात्मक साहित्य की मार्गदर्शिकाओं का उद्देश्य अध्येताओं का किसी विषय विशेष के साहित्य का उपयोग करने में सहायता एवं मार्गदर्शन प्रदान करना होता है । किसी विषय के मूल्यांकन एवं प्रारंभिक स्थिति से लेकर उसके प्रोढ़ स्थिति का परिचय उपलब्ध करना भी इन मार्गदर्शिकाओं का कार्य होता है । अतः इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से गौण एवं तृतीयक स्रोतों का उपयोग किया गया होता है । किसी विशेष विषय वस्तु के अतिरिक्त उसके साहित्य पर अधिक महत्व दिया गया होता है । साथ ही किसी विषय के क्रमिक विकास में सहायक ग्रन्थात्मक उपकरणों (Tools) संस्थाओं एवं मौलिक विषय साहित्य का उपयुक्त विवरण आदि भी प्रस्तुत करती है । इसका उदाहरण निम्नलिखित है –

1. Using the Biological literature. A Practical Guide, E.B. Davis,- N.Y. Marcel Dekker, 1981.
2. Guide to the literature of the Life Science /Roger C. Smith and W.M. Reid., 8th Ed. Minnesota : Burgess, 1969.
3. Readers Guide to the Social Sciences / Ed. by Bertly F. Hasejut 2nd Rev. Ed. N.Y. Free Press, 1970.

शोध प्रगति तालिकाएँ:

सर्वत्र चल रहे व्यवहारिक एवं सैद्धांतिक शोधों की पुनरावृत्ति और अतिव्यापन से सतर्क रहने एवं विज्ञान तथा अन्य क्षेत्रों के शोधकर्ताओं से सम्बन्धित विषयों के शोध की कार्यविधियों से अद्यतन रखने के लिये यह आवश्यक है कि शोधकार्यो की तालिकाएँ प्रस्तुत की जाएँ । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऐसे

उपकरणों को तैयार किया जाता है जिन्हें शोध प्रगति तालिकाएँ कहते हैं ।

इस क्षेत्र में शोध को प्रोत्साहित एवं अनुदान प्रदान करने वाली संस्थाएँ शोध प्रगति तालिकाएँ भी तैयार करती हैं । ऐसी तालिकाएँ शोध के प्रारूप एवं परियोजनाओं को तैयार करने में मार्गदर्शन का कार्य करती हैं । इन तालिकाओं में शोध की आख्या, शोधकर्ता संस्था आदि विवरण का संकेत करती हैं । इसका उदाहरण निम्नलिखित है –

1. Current Research Projects in CSIR Laboratories - 1972-74.
2. Directory of Scientific Research in Indian Universities, 1974.
3. University news, Association of Indian Universities.

वार्षिकीः

वार्षिकी वर्ष भर में एक बार प्रकाशित होने वाला एक क्रमिक प्रकाशन है । इसके अर्न्तगत विविध विषयों से सम्बन्धित सूचनाओं और तथ्यों को काल क्रमानुसार प्रस्तुत किया जाता है। वर्ष भर में विभिन्न विषयों के अन्तर्गत नवीन ज्ञान के उद्‌भव तथा महत्वपूर्ण घटनाक्रमों का समावेश रहता है । वास्तव में यह विश्वकोष का एक पूरक साहित्य है । विश्वकोष के अन्तर्गत एक निश्चित अवधि तक की सूचनाएँ अंकित रहती हैं । इन सूचनाओं के अन्तर्गत वार्षिक वृद्धि को वार्षिकी के अन्तर्गत शामिल किया जाता है । वार्षिकी को सामान्य वार्षिक ग्रन्थ, वार्षिकी, पंचांग इत्यादि नामों से जाना जाता है । इसी तरह अंग्रेजी में इसे Year Book, Almanac तथा Annual के नाम से पुकारा जाता है । वार्षिकी के कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित है –

1. Annual Report, All India Coordinated of Micronutrients in Soils and Plants. Indian Council of Agricultural Research, New Delhi, (1980-81).
2. Annual Review of Fertilizer Consumption and Production 2000-01, Fertilizer Association of India (FAI), 2001
3. World Development Report, 2001, World Bank, New York.
4. Economics Survey, 2001-02, Ministry of Finance, Government of India, New Delhi, 2002.
5. Annual Report of the Development of Banking in India, 2001, Reserve Bank of India, Mumbai, 2002.
6. India, A reference Annual, 2001, Ministry of Information & Broadcasting Government of India, New Delhi, 2001.

डेटाबेस निर्देशिकाएँ:

संदर्भ एवं सूचना की दृष्टि से आज के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के युग में मूल मुद्रित और अमुद्रित संदर्भ स्रोतों की जानकारी संदर्भ ग्रन्थालयों के लिए आवश्यक माना जाता है । अमुद्रित संदर्भ स्रोतों के रूप में आजकल डेटाबेसों का प्रचलन अत्यधिक बढ़ता जा रहा है । डेटाबेस को यंत्रण पठनीय स्रोत के नाम से भी जाना जाता है । इन्हें सूचना सामग्रियों के उन स्रोतों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिनकी व्यवस्था व उपयोग कम्प्यूटर के माध्यम से किया जाता है । वास्तव में डेटाबेस सुव्यवस्थित एवं कमबद्ध सूचनाओं का संग्रह होता है जो आमतौर पर कम्प्यूटर के मैग्नेटिक टेप अथवा डिस्क पैक में समाहित होता है । इन डेटाबेसों को इनकी प्रकृति के अनुसार निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है ।

1. वांगमयात्मक डेटाबेस
2. पूर्ण मूल पाठ डेटाबेस
3. संख्यात्मक डेटाबेस
4. संदर्भ डेटाबेस
5. स्रोत डेटाबेस
6. विषयानुसार डेटाबेस

इनके प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं –

1. Directory of Online Databases - Santa Monica, California: Chatdral Elseview Associates.
2. BRS Reference Manual and Database Search Guide - Latham New York. BRS, 1979 to date.
3. Government Reports Announcements, Springfield, Via: National Technical Information Service, 1946 to date.
4. NEXIS- Dayto, Ohio : Head Data Central, 1978 to date, Daily.
5. CA Search Chemical Abstracts Search, Columbus, Ohio: Chemical Abstracts Service, 1967 to date.
6. Comprehensive core Medical Library- Lathem, New York, BRS / Saunders Medical Knowledge Resources, 1984 to date.

वास्तव में तृतीयक सूचना स्रोतों के क्रमिक विकास के प्रारंम्भिक ज्ञान को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करने तथा उसका बोध उससे लाभ और उसे प्राप्त करने की सुविधा बिना किसी भेदभाव के सबको प्राप्त होना चाहिए, के विचार के उद्भव के साथ प्रारंभ हुआ । उक्त जनतांत्रिक और सर्वोदयी विचार के उदय के साथ ही ज्ञान के प्रसार हेतु सन्दर्भ सेवा के विचार एवं सिद्धान्त प्रकाश में आयें । वास्तव में ग्रन्थालयों का अस्तित्व तो

अत्यन्त प्रचीन समय से दृष्टिगोचर होता है । किन्तु तृतीयक सूचना स्रोत तथा सन्दर्भ सेवा का विकास आधुनिक समय की देन है । वास्तव में सन् 1870 में इग्लेण्ड में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के कानून लागू होने के साथ ग्रन्थालयों का विकास अत्यन्त तीव्र गति से होने लगा । इसका प्रमुख कारण यह था कि प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य रूप से प्राप्त करने के कारण शिक्षा का क्षेत्र व्यापक हो गया । शिक्षा के क्षेत्र में और अधिक व्यापकता इग्लेण्ड में सन् 1918 ई० में पारित शिक्षा विधेयक से आई । इस विधेयक द्वारा 14 से 18 वर्ष तक के लोगों के लिए अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए विशेष व्यवस्था की गयी । इन नियमों और विधानों का प्रभाव यह हुआ कि साक्षरता का प्रभाव बढ़ने लगा तथा लोगों में पढ़ने की आदत में वृद्धि हुई । इन सभी घटनाक्रमों के परिणामस्वरूप ग्रन्थालयों में सूचना प्राप्त करने अलग-अलग विषयों पर जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से आने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि होने लगी । ग्रन्थालयों में सूचना अथवा जानकारी प्राप्त करने वाले विभिन्न श्रेणी के लागों की संख्या में हो रही लगातार वृद्धि के परिणामस्वरूप संदर्भ सेवा की आवश्यकता महसूस होने लगी । संदर्भ सेवा का विकास ही वास्तव में तृतीयक सूचना स्रोतों के विकास का आधार भी था । तृतीयक सूचना स्रोतों के विकास सम्बंधी साहित्य इधर-उधर बिखरा पड़ा है इस ओर अभी पृथक अध्ययन एवं अन्वेषण की आवश्यकता है । यथासंभव विकास सम्बंधी उपलब्ध सहित्य को सहजने का प्रयास किया गया है ।

संदर्भ सेवा की इस आवश्यकता को प्रसिद्ध विद्वान एवं आधुनिक पुस्तकालय प्रबंध के जनक मेलविल डीवी ने निम्नरूप में स्पष्ट किया है ।

"ग्रन्थालय का उद्देश्य कई हजार पुस्तकों के संग्रह और सुरक्षा करने तक सीमित नहीं है और न तो इतना ही पर्याप्त है कि वह ज्ञान भण्डार सावधानी से वर्गीकृत और सूचीकृत हो । विद्यार्थियों और अनुसंधानकर्ताओं के आदेश पर सीमित समय में प्रचुर मात्रा में अध्ययन सामग्री, जिसका कि प्रत्येक व्यक्ति बहुधा उपयोग करता है, पुस्तकालय के साधनों से अभीष्ट सहायता तत्काल मिल सके, अत्यावश्यक हो जाता है । विद्यार्थियों की व्यवहारिक आवश्यकता है कि वह अपने प्रश्नों का पूर्ण और एकदम तैयार उत्तर कहाँ ढूंढे और कैसे प्राप्त करें ।

उचित मांग की पूर्ति के लिए पुस्तकालय विद्यार्थियों की सर्वोत्तम वांगमय सूचियाँ, विश्वकोश, शब्दकोश और अन्य सन्दर्भ ग्रन्थ दें और उसका कर्तव्य है कि उन्हें उदाहरणों द्वारा परिचित करावें, उन पुस्तकों को जानने के लिए बुद्धिमानी से उनका उपयोग करने के लिए और आवश्यक अभिष्ट तथ्य को प्राप्त करने की आदत डालने के लिए उनको सलाह और सीधा प्रशिक्षण दें ।

किसी विषय पर सर्वोत्तम पुस्तकें कौन सी, किस कम से और उन्हें कैसे लें, ऐसी बातें हैं जिनके सम्बन्ध में स्नातक पूर्व विद्यार्थी आमतौर पर जानकारी चाहते हैं । शोध प्रबन्ध के लिए विषयों पर काम करने वाले छात्र, पुरस्कार के निबन्ध, भाषण प्रतियोगिता आदि में ग्रन्थालय की उपयोगिता समझते हैं और

सन्दर्भ प्रदायक का यह प्राथमिक और सर्वोच्च कर्तव्य है कि वह ऐसी सहायता करें ।[1]

मेलविल डेवी का उपरोक्त कथन इस तथ्य को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है कि सूचना चाहने वालों को सूचना प्राप्त करने की प्रक्रिया बताने के साथ-साथ सूचना प्राप्त करने में उचित सलाह तथा सहायता भी प्रदान करना चाहिए ।

मेलविल डेवी की भाँति सन्दर्भ सेवा के विकास में सेम्युअल स्वीट ग्रीन, जस्टिन विन्सर इत्यादि विद्वानों ने भी उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया । किन्तु वास्तव में यह सब सैद्धांतिक स्तर पर ही था तथा प्रथम विश्वयुद्ध तक इसका प्रयोग कार्यरूप में नहीं किया गया । किन्तु प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान किये गए संदेशों के आदान प्रदान के दौरान यह पाया गया कि प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त सैनिक पढ़ने लिखने में अयोग्य पाये गए । इस असमर्थता ने प्राथमिक शिक्षा पर व्यय किए गए लाखों रूपये की व्यर्थता सिद्ध कर दी गयी ।

सरकारी और विशेषज्ञ स्तर पर इस राष्ट्रीय क्षति को रोकने के लिए की गयी चर्चा के परिणामस्वरूप प्रौढ़ शिक्षा योजना का निर्माण एवं क्रियान्वयन हुआ ताकि साक्षरता में लगातार वृद्धि की जा सके । एवं शिक्षितों को लगातार साक्षर बनाये रखा जा सके । शासन तथा समाज के स्तर पर यह तथ्य भी स्वीकार किया जाने लगा कि साक्षरता तथा प्राथमिक शिक्षा प्राप्त लोगों को साक्षर बनाये रखने का कार्य बिना ग्रन्थालयों के सहयोग के पूरा नहीं हो सकेगा । अतः आम लोगों को ग्रन्थालय जाने तथा

---

1 Dewey, Malvil, "Circular of Information, 1884" Columbia college Library and School of Library Economy, pp. 15-16.

पुस्तकों को पढ़ने हेतु प्रेरित किया जाने लगा तथा ग्रन्थपालों द्वारा भी सूचना प्राप्त करने वाले के उद्देश्य से ग्रन्थालय आने वाले व्यक्तियों को पुस्तक चयन तथा साधारण सूचना तथा तथ्यों को प्राप्त करने में व्यक्तिगत मदद प्रदान की जाने लगी । इसके साथ ही शासन के द्वारा इस कार्य को संचालित करने के लिए ग्रन्थालयों को आवश्यक वित्तीय तथा अन्य मदद दी जाने लगी ।

इन सब घटनाओं का परिणाम यह हुआ कि ग्रन्थालयों में संदर्भ एवं सूचना सेवा का प्रयोग बढ़ने लगा । प्रारम्भिक दौर में मितव्ययीता को ध्यान में रखते हुये इंग्लैण्ड में यह कार्य राष्ट्रीय स्तर पर किया गया । इसी तारतम्य में सन् 1914 में नेशनल बुक काउंसिल की स्थापना की गयी जिसे सन् 1924 में बदलकर नेशनल बुक लीग का नाम दे दिया गया ।

1930 तक आते–आते मेलविल डेवी द्वारा सन्दर्भ सेवा का दिया गया अर्थ 'पाठकों की सहायता'[1] अस्पष्ट एवं अपूर्ण लगने लगा । इस समय तक सन्दर्भ सेवा पर अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रगट किये हैं, इनमें विलियन बी. चिल्डस, एलिस बी. क्रोएगर, जान कारन डॉन, विलियम बर्नर बिशप, ए.आर. शोफार्ड इत्यादि के नाम उल्लेखनीय है । इन सभी विद्वानों ने पाठकों को पुस्तकालय से अपना साहित्य और सामान्य सूचनाएँ प्राप्त करने में प्रदत्त व्यक्तिगत सहायता को सन्दर्भ कार्य माना ।[2] 1930 के बाद सन्दर्भ सेवा एवं तृतीयक सूचना स्रोतों के विकास पर सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य डॉ० एस.आर. रंगनाथन द्वारा किया गया ।

---

1 Dewey, Malvil, "Circular of Information 1884." Columbia college Library and School of Library Economy, p.17

2 सुन्दरेश्वरन, के.एस, "सन्दर्भ सेवा सिद्धान्त एवं प्रयोग, पृ 33

डॉ0 रंगनाथन के द्वारा ग्रन्थालय विज्ञान में विकसित हो रही इस सेवा को "सिद्ध सन्दर्भ सेवा"[1] का नाम दिया गया ।

इस समय तक सूचना एवं सन्दर्भ स्रोतों के रूप में वांगमय सूची, अनुवाद, अनुक्रमणिकाएँ, संक्षेपीकरण इत्यादि सेवाओं का विकास हो चुका था ।

सन् 1930 के बाद प्रजातंत्र का प्रसार के साथ जनतांत्रिक विचारों के प्रभाव में वृद्धि हुई । जिसके परिणामस्वरूप तीव्र गति से साक्षरता तथा ग्रन्थालयों का उपयोग बढ़ा । सूचना की इसी बढ़ती हुई मांग को पूरा करने तथा अध्येता की मांग पर सूचना उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जेम्स आई.वीअर ने ग्रन्थालयों हेतु आदर्श सिद्धान्तों का निर्माण किया। उनके अनुसार "सन्दर्भ सेवा का सिद्धान्त यह मानता है कि प्रत्येक पुस्तकालय अपनी सन्दर्भ सेवा पर की गयी मांग की ओर पूर्णतः ध्यान देने की कामना करता है । यह प्रत्येक जिज्ञासु को सन्तुष्ट करने के लिए साधन और उपाय निकलना या पैदा करना चाहेगा । यह उसके उस काम के अंश के प्रति अपेक्षाकृत अधिक गम्भीर होगा जिसमें कि अपने पुस्तक–संग्रह का अपेक्षाकृत अधिक गम्भीर रूप से अध्ययन करना पड़ता है । सन्दर्भ सेवा का केवल यही टिकाऊ और अजेय सिद्धान्त है जो कि खुले रूप में यह असीम सेवा देने के लिए पुस्तकालय को मान्यता देता है और इस प्रकार का सिद्धान्त व्यवसायिक तथा अन्य क्षेत्रों में व्यवहारिक रूप से उचित है । यह सेवा है, सुझाव नहीं । वह लागत जिसमें प्रत्यक्ष लाभ से कहीं अधिक भावी लाभ निहित है ।"[2]

---

1 रंगनाथन, डॉ0 एस.आर., "Library Administration" pp.22.
2 Wyer, J.I., "Reference work" pp. 30-31.

तृतीयक सूचना स्रोतों के विकास की इस कहानी में तेजी द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात आई । वास्तव में द्वितीय विश्वयुद्ध की विभिषिका ने विज्ञान के दुरूपयोग तथा साम्राज्यवादी राष्ट्रों के स्वार्थपरक मानसिकता से विश्व समुदाय को सतर्क कर दिया । इसके साथ ही अविकसित और परतन्त्र राष्ट्रों में राष्ट्रीयता की भावना का तीव्रतम विकास हुआ । जिसके परिणामस्वरूप अनेक राष्ट्रों को स्वतंत्रता प्राप्त हुई । शान्ति और सहयोग के लिए किये गए प्रयासों के परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई ।

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा विश्व में शान्ति, भाईचारा, सद्भाव और समृद्धि बनाये रखने में शिक्षा और ज्ञान के महत्व को स्वीकार किया गया तथा इस कार्य के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा एक नया प्रकोष्ठ का गठन किया गया । यह प्रकोष्ठ "संयुक्त राष्ट्र संघ का शैक्षणिक, वैज्ञानिक और संस्कृतिक संघ (युनेस्को) के नाम से जाना जाता है । इस संगठन द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को बढ़ाने के उद्देश्य से निःशुल्क पुस्तक सेवा के उपयोग को अपनी प्रमुख नीति बनाया गया । इस नीति के क्रियान्वयन हेतु संघ ने पुस्तकलायों को प्रमुख आधार बनाया । अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को ध्यान में रखते हुए 1940 से 1950 के मध्य सूचनाओं का द्रुत गति से आदान-प्रदान हुआ । इस अवधि के दौरान अभिव्यक्ति के अनेक माध्यम प्रमुख रूप से उभरे । इन माध्यमों में निम्नलिखित प्रमुख थे ।

1. पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख,
2. पुस्तिका,
3. विवरण

इसका प्रमुख कारण यह था कि इस समयावधि के दौरान प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं की संख्या में तीव्रतर वृद्धि हुई । जिससे प्रकाशित लेखों की संख्या में वृद्धि हुई । प्रकाशित लेखों तथा अन्य सामग्रियों में तीव्र वृद्धि होने के कारण इन सामग्रियों के अधिकाधिक उपयोग हेतु सन्दर्भ सेवा का क्षेत्र विस्तृत किया जाने लगा । सन्दर्भ सेवा के विस्तार के इस काल में डॉ0 एस.आर. रंगनाथन का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है । उन्होंने 1940 में Reference Service and Bibliography के नाम से दो भागों में एक पुस्तक लिखी । यह पुस्तक मद्रास विश्वविद्यालय में उनके द्वारा पुस्तकालय विज्ञान के अध्ययन के दौरान किये गए सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक शोध तथा प्रयोग कार्यों का परिणाम था ।

इस पुस्तक में उन्होंने सूचना प्राप्ति के उद्देश्य से आने वाले पाठकों को चार भागों में विभाजित किया है । इन पाठकों को उनकी रूचि, प्रवृत्ति, शैक्षणिक योग्यता और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सब पाठकों को पुस्तकालय से समान लाभ प्राप्त करने के लिए सन्दर्भ सेवा के निम्नलिखित चार पहलू तय किये गये थे :-

1. प्रारंभिक परिचय या नवागन्तुक पाठकों का प्रशिक्षण,
2. साधारण पाठकों को सामान्य मार्गदर्शन,
3. सिद्ध सन्दर्भ सेवा या सूचना सेवा, और
4. विस्तारशील और गहन सन्दर्भ सेवा ।

वास्तव में उपरोक्त चार पहलुओं को सन्दर्भ सेवा के चार भेद कहा जा सकता है । इसके साथ ही उन्होने अपने विश्लेषण पद्धति के आधार पर यह स्पष्ट किया है कि प्रत्येक पहलू में क्या

भेद है ? उसकी आवश्यकता क्यों हैं ? और उसे कैसे क्रियान्वित किया जा सकता है । इसके अतिरिक्त उन्होंने पुस्तक के दूसरे भाग में सन्दर्भ पुस्तकों को वर्गीकृत ग्रन्थ सूची दी है ।[1]

वास्तव में तृतीयक सूचना स्रोतों के विकास में क्रान्तिकारी चरण सन् 1950 के बाद प्रारम्भ हुआ । क्योंकि सन् 1950 के बाद देश–विदेश में जन–समुदाय की बाढ़ ने अनेक नई–नई समस्याओं को उत्पन्न कर दिया । जिसके परिणामस्वरूप अन्न, वस्त्र और आवास की कमी चहूँ ओर दिखाई देने लगी तथा इस कमी को पूरा करने में प्राकृतिक सम्पदा अपूर्ण सिद्ध होने लगी । इस कमी को पूरा करने हेतु विद्वान, शासक वर्ग तथा वैज्ञानिकों द्वारा विशिष्ट प्रयास आरम्भ कर दिये गए । इन प्रयासों को पूर्ण करने के लिए नये–नये शोध कार्यों और आविष्कारों का प्रयोग होने लगा । शोध कार्यों में पुनरावतृत्ति रोकने, सर्वत्र चल रहे शोध कार्यों को क्रमिक स्वरूप प्रदान करने तथा शोध कार्यों में लग रही शक्ति और समय का संरक्षण और संवर्धन करने हेतु प्रत्येक स्तर पर गहन सन्दर्भ सेवा के रूप में ग्रन्थालयों का भरपूर सहयोग आवश्यक है । इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि इन शोध कार्यों में संलग्न सभी विद्वानों का स्तर पूर्व के विद्वानों की तरह न तो स्वयं सेवक था और न ही उनके लिए यह संभव था । अतः इन विद्वानों के लिए एक निश्चित समय सीमा में साहित्यान्वेषण का कार्य और मार्ग अत्यन्त दुरूह होता जा रहा था । इन सब के परिणामस्वरूप अनगिनत साहित्य का प्रकाशन सामूहिक शोध के रूप में हो रहा था । इसी तरह सूक्ष्म

---

1 सुन्दरेश्वरन, के.एस., "सन्दर्भ सेवा सिद्धान्त एवं प्रयोग, पृ 36–37

साहित्य का भी तीव्र विकास हो रहा था । इन सबका सदुपयोग एवं गवेषणा में संलग्न विद्वानों के समय की बचत हेतु सन्दर्भ सहायक साहित्यों का सर्वेक्षण और चयन कर अद्यतन विचारों पर प्रकाश डालने वाले सहित्य का विकेन्द्रीकरण की विविध पद्धतियों के माध्यम से उनके सामने प्रस्तुत करते हैं ।[1]

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि नित नये प्रकाशनों तथा समय सीमा के तहत शोध एवं अन्वेषण कार्य को पूरा करने के कार्य में मदद प्रदान करने हेतु गन्थालय तथा अन्य स्थानों पर उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण अत्यन्त आवश्यक माना जाने लगा । वास्तव में यह कार्य भी अत्यन्त कठिन था क्योंकि रोज हो रहे साहित्यान्वेषण के कारण सन्दर्भ ग्रन्थों का परिचय तथा सन्दर्भों के स्वरूप में अनेक परिवर्तन हो रहे थे । आधुनिक समय में सन्दर्भो के स्वरूप को मुख्यतः निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है –

1. नया सन्दर्भ ग्रन्थ,
2. सन्दर्भ ग्रन्थों का नया संस्करण,
3. अस्थायी सामयिक पाठ्य सामग्री ।[2]

ग्रन्थालयों में प्रायः तीनों प्रकार की सामग्री नयी और पुरानी दोनों ही आती रहती है । नये सन्दर्भ ग्रन्थ समय समय पर कय, दान तथा विनिमय के माध्यम से प्राप्त किये जाते हैं । इसी तरह सन्दर्भ ग्रन्थों को अद्यतन रखने के लिए इन सन्दर्भ ग्रन्थों के नये–नये संस्करण आते रहते हैं । इसी तरह अस्थायी

---

1 Rangnathan, Dr. S.R., "Evolution of Reference and Documentation Service." Lib. Sc. Vol2, N.3 1965 Sept. pp. 275-292

2 सुन्दरेश्वरन, के.एस., " सन्दर्भ सेवा सिद्धान्त और प्रयोग" पृ. 100

सामयिक पाठ्य सामग्री भी ग्रन्थालयों में अनेक रूपों में प्राप्त होती है । इनमें प्रमुख है –

1. समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं की कतरनें,
2. विवरण पत्र,
3. पुस्तिका (फोल्डर एवं पेम्फलेट्स),
4. सूचना पत्र (Hand Bills),
5. विज्ञापन पत्र ।

उपरोक्त सभी सन्दर्भ सूचनाओं के संग्रहण, चयन और वर्गीकरण के साथ–साथ इन्हें योग्य क्रम में संयोजित रखना तथा उपयोगिता के समय उनका प्रस्तुतीकरण अत्यन्त आवश्यक होता है।

इन सन्दर्भों का अधिकाधिक उपयोग तभी हो सकता है जबकि शोधकर्ताओं विद्वानों तथा अन्य अध्येताओं को समय पर सन्दर्भ सामग्री प्राप्त हो । अतः इन सभी सन्दर्भ सामग्रियों में से उपयुक्त सन्दर्भ सामग्री का उपयुक्त समय पर उपयुक्त व्यक्ति को उपलब्ध कराने हेतु सन्दर्भ सेवा के विस्तार की आवश्यकता महसूस होने लगी । इस आवश्यकता को समय की कमी ने और अधिक विस्तृत स्वरूप प्रदान कर दिया । ऐसी स्थिति में ग्रन्थालय विज्ञान के विद्वानों ने इस स्थिति के समाधान हेतु प्रश्नों का समझ कर उसका उत्तर खोजने हेतु मार्ग निर्धारण पद्धतियों का विकास प्रारम्भ किया । प्रश्नों के उत्तर तथा उनसे सम्बन्धित सन्दर्भों का चयन हेतु अपनायी जाने वाली इसी मार्ग निर्धारण के दौरान विकसित की जाने वाली प्रक्रिया ने सूचना के तृतीयक स्रोत

का विस्तृत विकास किया इनमें प्रमुख रूप से निम्न साधनों का तृतीयक सूचना स्रोतो के नाम से जाना जाता है–

1. अब्दकोष,
2. विश्वकोष,
3. वार्षिकी,
4. हस्त पुस्तक और नियम पुस्तिका,
5. निर्देशिका,
6. जीवनी कोष
7. वांगमय सूची की वांगमय सूची,
8. साहित्य दर्शिकाएँ,
9. शोध प्रगति तालिका,
10. डेटाबेस निर्देशिकाएँ,
11. सूक्ष्म साहित्य ।

अध्याय-४

निर्देशिकाएं : अभिप्राय, विकास, उपयोगिता तथा इनके प्रकार

अध्याय -४

निर्देशिकाएं : अभिप्राय, विकास, उपयोगिता तथा इनके प्रकार

ए.एल.ए. शब्दावली के अनुसार "निर्देशिका व्यक्तियों अथवा संगठनों की एक कमबद्ध तालिका को कहते हैं जो प्रायः अनुवर्णिक अथवा वर्गीकृत कमानुसार आंकलित की गई होती है । जिसमे व्यक्तियों के पते तथा सम्बद्धता तथा संगठनों के पते, उनके पदाधिकारी, कार्य तथा अन्य इसी प्रकार के तथ्यों का उल्लेख होता है ।" इस कथन से निर्देशिका का अर्थ स्पष्ट हो जाता है । लेकिन व्यवहारिक जीवन में इसका उपयोग विस्तृत एवं व्यापक रूप में किया जाता है समाचार पत्रों तथा सामयिकियों की तालिकाओं को भी निर्देशिका की संज्ञा दी जाती है । अनेक प्रकार के उक्त संदर्भ उपकरणों में एक भाग ऐसा होता है जो निर्देशिका का कार्य करता हैं । पंचागों तथा शब्दकोशों में भी निर्देशिका की सामग्रियों का उल्लेख प्रचुर मात्रा में होता है । निर्देशिकाओं की सूचना की मात्रा में भिन्नता होती है तथा इनमें आंकलन पद्धति प्रायः अनुवर्णिक होती है ।

निर्देशिकाओं से अनेक प्रकार के संगठनों तथा संस्थाओं जैसे– विद्वत परिषदों तथा संघों वैज्ञानिकों एवं साहित्यिक परिषदों, व्यावसायिक संगठनों एवं संघों, ट्रेड यूनियन तथा व्यापारिक संघों, से सम्बन्धित अनेक प्रकार की सूचना प्राप्त होती है ।

इनमें संस्था एवं संगठनों के अनेक प्रकार से विवरण जैसे–नाम, पता पदाधिकारियों की तालिका, सदस्यों की योग्यता तथा विशेषज्ञीकरण का क्षेत्र एवं विषय, कार्य क्षेत्र तथा सुलभ सुविधाओं आदि की जानकारी प्राप्त होती है । निर्देशिकाओं से जीवन चरित सूचना स्रोत भी सम्बद्ध होता है । लेकिन कुछ ऐसी कृतियाँ एवं सूचना स्रोत होते हैं जिनसे निर्देशिकाओं की कुछ सूचना को प्राप्त कर सकते हैं । जैसे– वार्षिकी, पंचाग, विश्व–कोष गजेटियर, "गाइड बुक" तथा भू–चित्रावलियाँ आदि ।

निर्देशिकाओं का उद्भव मनुष्य की आवश्यकताओं के परिणमस्वरूप हुआ है । मनुष्य की आवश्यकताएँ आज दिन–दूनी रात–चौगुनी हो रही है । विचार–विनिमय का क्षेत्र विस्तृत हो रहा है । फलस्वरूप उद्देश्य की पूर्ति हेतु उसे विश्व के हर कोने से सम्पर्क बनाये रखना है । स्थानीय रूप से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक विद्यमान विविध वस्तु, व्यक्ति, संस्था, शासन और उनके क्रिया कलापों का परिचय हर समय आवश्यक रहता है । इस प्रकार के परिचय के बिना आज उसका कार्य सफल होना संभव नहीं है । स्मृति के आधार पर इस प्रकार का परिचय तत्काल प्राप्त करना संभव नहीं है । बौद्धिक शक्ति की अपनी सीमा है । इसलिए उपयुक्त विषयों पर प्रकाश डालने वाले संदर्भ ग्रंथ की महती आवश्यकता है । इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु 'निर्देशिका का उद्भव हुआ है ।

नर्देशिका का उद्भव 18वी शताब्दी में हुआ । सन् 1738 में सर्वप्रथम इगलैण्ड में एक व्यापरिक निर्देशिका का प्रकाशन हुआ । उसका नाम है – Brown's Directory of list of Principal

traders' तब से बराबर विविध प्रकार की निर्देशिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं । आज सामान्यतः हर प्रमुख संस्था और विशिष्ट व्यक्तियों से सम्बन्धित निर्देशिकाएँ उपलब्ध है । इनमें साधरणतः अकारानुक्रम से एतद् संस्था, व्यक्ति और वस्तु का परिचय दिया रहता है ।

आमतौर पर निर्देशिकाओं का उपयोग निम्नांकित जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता है –

1. किसी व्यक्ति विशेष अथवा किसी संगठन विशेष का पता तथा टेलीफोन नम्बर,
2. किसी व्यक्ति का पूरा नाम तथा उसकी वर्तनी, किसी संगठन अथवा संस्था का नाम तथा पूर्ण पता तथा उसके विशिष्ट अधिकारी तथा विशेषज्ञ,
3. किसी वस्तु के उत्पादन करने वाले का विवरण तथा उत्पादित वस्तुओं की विशेषता तथा उसकी सेवाएं,
4. किसी "फर्म" अथवा संगठन अथवा संस्था का कौन अध्यक्ष है अथवा कौन किस कार्य का दायित्व रखता है ।
5. संस्था अथवा संगठन के किसी व्यक्ति अध्यक्ष, अथवा सचिव अथवा संचालक अथवा प्रबन्धक का संक्षिप्त परन्तु अद्यतन जीवन चरित वृतान्त,
6. किसी संस्था, किसी फर्म, या राजनीतिक दल का ऐतिहासिक सामयिक विवरण एवं तथ्य, स्थापना का वर्ष तथा सदस्यों की संख्या,
7. व्यापारिक उपयोग के लिए आवश्यक विवरण, जैसे कुछ

व्यक्तियों का चयन, कुछ कम्पनियों का चयन अथवा संगठनों का चयन जिससे किसी क्षेत्र में उनसे पत्राचार किया जा सके ।

8. सामाजिक अथवा व्यापारिक सर्वेक्षण के लिए चयनात्मक नमूनों के रूप में उपयोग करना जिसके लिए इन्हें मूल स्रोत माना जाता है ।

निर्देशिकाओं का अत्यधिक उपयोग समाजशास्त्री करते हैं जिसका उद्देश्य किसी अध्ययन के लिए उपयुक्त समूहों की जानकारी प्राप्त करना होता है । लेकिन निर्देशिकाएँ वस्तुतः मानव तथा उसकी संस्थाओं एवं संगठनों से सम्बन्धित होती है, अतः उनका उपयोग अनेक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये किया जाता है ।

अकादमिक शोध तथा अध्ययन में निर्देशिकाओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहता है इसी कारण ग्रन्थालयों में निर्देशिकाओं को कोटि की सूचना की अत्यधिक मांग की जाती है । निर्देशिकाएँ अनेक प्रकार की होती है इन्हें इनके स्वरूप के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है जो निम्नानुसार है –

1. अन्तर्राष्ट्रीय निर्देशिकाएँ,
2. राष्ट्रीय निर्देशिकाएँ,
3. स्थानीय निर्देशिकाएँ,
4. शासकीय निर्देशिकाएँ,
5. व्यवसायिक निर्देशिकाएँ,
6. निवेश निर्देशिकाएँ,
7. संस्थागत निर्देशिकाएँ,
8. व्यापारिक एवं औद्योगिक निर्देशिकाएँ,

9. वैज्ञानिक, विद्वत परिषदों की निर्देशिकाएँ,

10. ग्रन्थालयी निर्देशिकाएँ,

11. पुरस्कार विजेताओं की निर्देशिकाएँ,

अन्तर्राष्ट्रीय निर्देशिकाओं में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की जानकारी प्रदान की जाती है । इनमें अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का विवरण अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम इत्यादि की जानकारी सम्मिलित की जाती है। प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय निर्देशिकाओं का विवरण निम्नानुसार है ।

World of Learing - Europa Publications, 2003 -, 53rd Ed. p., 2238

' वर्ल्ड ऑफ लरनिंग का प्रकाशन'' यूरोपा पब्लिकेशन्स के द्वारा किया जाता है जिसकी ख्याति सर्वत्र है और यह संगठन प्रकाशन जगत में अपना विशिष्ट स्थान रखता है । यह उच्च शिक्षा एवं अध्ययन के सम्पूर्ण क्षेत्रों को समाहित करने वाली एक ऐसी निर्देशिका है जिसमें प्रमुखतः– शिक्षण संस्थाओं, ग्रन्थालयों, संग्रहालयों, कला–विथिकाओं, विद्वत–परिषदों तथा शोध–संस्थाओं सहित महत्वपूर्ण प्रकाशनों का उल्लेख किया गया है । विद्वत संगठनों की ''वर्ल्ड ऑफ लरनिंग'' एक मात्र मानक एवं प्रमाणिक अन्तर्राष्ट्रीय निर्देशिका है जिसमें विश्व के प्रायः सभी विद्वत संस्थाओं एवं परिषदों का उल्लेख मिलता है । संस्थाओं की सूचना– नाम, पते, टेलीफोन नम्बर, टेलेक्स, संस्थापना वर्ष, नियंत्रण –राज्य अथवा व्यक्तिगत भाषा का प्रयोग, शिक्षण सत्र की अवधि, कुलाधिपति तथा कुलपति, रेक्टर, प्राचार्य, अध्यक्ष आदि के नाम, उप–कुलपति, उपाध्यक्ष, कुलसचिव प्रधान प्रशासनिक

अधिकारी, ग्रन्थालयी, अध्यापकों की संख्या, छात्रों की संख्या, सामयिक प्रकाशनों के विवरण तथा विनिमय के रूप में इनकी सुलभता, संकायाध्यक्षों एवं संकायों के नाम, सभी विषयों के प्रोफेसरों, अध्यक्षों, प्राध्यापकों का विषयानुसार नाम तथा संस्था की कार्य पद्धति तथा उसका कार्यक्षेत्र अनेक प्रकार के क्रियाकलापों सहित, निर्देशकों के नाम तथा पते आदि के साथ क्रमबद्ध रूप में उल्लखित है ।

इसमें 5900 विश्वविद्यालय एवं कालेजों, 600 शोध संस्थानों 3300, संग्रहालयों एवं कला-विथिकाओं तथा 4800, वद्वत-परिषदों, 3550 पुस्तकालयों, 26000 प्रकाशनों के अतिरिक्त पृथक अनुभाग में 500 से ज्यादा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे यूनेस्को आदि का पूर्ण विवरण के साथ उल्लेख किया गया है इसमें लगभग 200 देशों के उच्च शिक्षा एवं अध्ययन की क्षेत्र के 30,000 संस्थानों एवं 2,00,000 व्यक्तिगत सूचनाऐं सम्मिलित हैं । प्रथम भाग में 400 अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं का विवरण अफगानिस्तान एवं कतार की संस्थाओं के साथ दिया गया है । द्वितीय भाग में रोडेशिया से लेकर जाम्बिया तक की संस्थाओं का उल्लेख है । द्वितीय भाग के अन्त में सभी संस्थाओं की एक कमबद्ध एवं उत्तम प्रकार की अनुक्रमणिका दी गयी है ।

"वर्ल्ड ऑफ लरनिंग" वस्तुतः विद्वत तथा शैक्षिक एवं शोध संस्थाओं की एक विशाल विस्तृत, व्यापक एवं अद्यतन सूचना का स्रोत है जो इस क्षेत्र में अपना अद्बितीय स्थान रखता है ।

मौलिक सूचना स्रोत की यह एक सर्वोत्तम संदर्भ कृति है ।

भारतवर्ष की संस्थाओं में अकादमियों विद्वत परिषदों, शोध संस्थाओं, ग्रन्थालयों, पुरासंग्रहालयों, संग्रहालयों, कला विथिकाओं, विश्वविद्यालयों, संस्थानों, विश्वविद्यालयों के स्तर के राष्ट्रीय संस्थाओं, कला एवं संगीत के संस्थाओं तथा चुने हुए प्रमुख कॉलेजों का उल्लेख तालिकाबद्ध रूप में किया गया है । सभी संस्थाओं का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है ।

यद्यपि इसकी सूचना की मात्रा में भिन्नताएँ है जो वस्तुतः संस्थाओं के अनुसार हैं । लेकिन यह किसी प्रकार की बौद्धिक एवं शैक्षिक तथा शोधार्थ सम्पर्क के लिये यह सन्दर्भ कृति के रूप में अद्वितीय एवं अमूल्य सूचना स्रोत है जिसे अद्यतन एवं परिपूर्ण विद्वत संस्थाओं की एक अन्तर्राष्ट्रीय निर्देशिका होने का श्रेय दिया जाता है । इसका 53वां संस्करण ऑनलाइन भी उपलब्ध है । जिसमें 2000 अतिरिक्त वेबलिंक्स एवं संस्थानों का विस्तारित कवरेज को सम्मिलित किया गया है इसमें विश्व क्षेत्र, देश, राज्यवार, शहर, संस्था का नाम, संस्था प्रकार, संस्थापना वर्ष, प्रकाशन, वैयक्तिक नाम, विषय विशेषज्ञों आदि अनुसार उपयोक्ता हेतु अभिगम की सुविध प्रदान की गई है । साथ ही ऑन लाइन संकल्पना, पैटर्न एवं वुलियन पैटर्न द्वारा भी खोजने (Search) की सुविध प्रदत्त है ।

Europa Yearbook- London: Europa, 1959- 2 Vols. Annual.

इस अब्दकोश में निर्देशिका भी सम्मिलित है जिसके प्रथम

खण्ड में अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों तथा यूरोपीय देशों का सोवियत संघ एवं टर्की के साथ उल्लेख किया गया है । द्वितीय भाग में अफ्रीका, उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा एशिया का उल्लेख है । प्रथम खण्ड के प्रथम भाग में अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों को अनुवर्णिक क्रमानुसार व्यवस्थित किया गया है । इसमें संयुक्त राष्ट्र तथा अन्य अग्रणीय अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का विस्तृत विवरण दिया गया है । अल्पज्ञात अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के कार्य, सदस्यता पता संस्थापनावर्ष का उल्लेख किया गया है ।

प्रथम खण्ड की अनुक्रमणिका के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की तालिका दी गई है । निर्देशिका से सम्बन्धित भाग में प्रत्येक देश के अन्तर्गत संगठनों के नाम, पते तथा अन्य उपयोगी तथ्य समाचार पत्रों तथा सामयिकियों के विवरण, प्रकाशक, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केन्द्र, बैंक, इन्श्योरेंस, चेम्बर ऑफ कॉमर्स, व्यापारिक संघों, ट्रेड यूनियन, एयरलाइन्स, रेलवे, जहाज संगठन तथा विश्वविद्यालयों का उल्लेख किया गया है ।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की जानकारी के लिए 'यूरोपा इयरबुक' एक उत्तम प्रकार का सूचना स्रोत है । ग्रन्थालयों में इसका होना संदर्भ कार्य के लिए अति आवश्यक है ।

International Handbook of Universities and other Institutions of Higher Education - 7th Ed.- Paris: International Association of Universities, 1978.

इस हेण्डबुक का सम्पादन कीज एवं एटकेन (H.M.R. Keyes and D.J. Ait Ken) ने किया है जो विश्वविद्यालयों तथा उच्च शिक्षा संस्थाओं की एक अन्तर्राष्ट्रीय निर्देशिका है । इसमें 110 देशों के

विश्वविद्यालयों तथा उच्च शिक्षा के सभी संस्थाओं का उल्लेख प्रत्येक देश के अनुसार किया है । यह निर्देशिका दो अन्य निर्देशिकाओं की एक अनुषंगी कृति है जो निम्न है । –

[i] American Universities and Colleges / ed. by W. Todd Furniss- Washington, D.C.- American Council of Education.

[ii] Common Wealth Universities Yearbook - London: Association of Commonwealth Universites.

इसका प्रकाशन मैकमिलन प्रेस, लन्दन ने किया है । देशों का आंकलन अनुवर्णिक क्रम में किया गया है और तत्पश्चात प्रदेश के विश्वविद्यालयों तथा कॉलेजों का उल्लेख उनके विभिन्न संकायों के साथ किया गया है । सूचना के रूप में विश्वविद्यालय का नाम, संस्थपना वर्ष, कुलपति का नाम, संकाय तथा संकायाध्यक्षों के नाम, छात्रों की संख्या, संक्षिप्त ऐतिहासिक विवरण, शैक्षणिक सत्र, उपाधियों आदि का उल्लेख किया है । लेकिन विवरण बहुत ही संक्षिप्त है ।

यूनाइटेड नेशन्स यूनिवर्सिटी तथा यूरोपियन यूनिवर्सिटी इन्स्टीट्यूट का भी उल्लेख किया गया है जो विशिष्ट विश्वविद्यालय की श्रेणी में आते हैं । परिशिष्ट में इन्टरनेशनल एसोशियेशन ऑफ यूनिवर्सिटीज का परिचय दिया गया है तथा इसके पदाधिकारियों का उल्लेख है तत्पश्चात अनुवर्णिक क्रम में सभी देशों तथा उनके विश्वविद्यालयों का उल्लेख किया गया है । अनुक्रमणिका जो अत्यन्त क्रमबद्ध एवं सुविधाजनक है उसे

66 पृष्ठों में सविस्तार दिया गया है जिससे किसी भी संस्था संबंधी सूचना को आसानी से प्राप्त की जा सकती है । सामयिक प्रकाशनों की तालिका भी दी गई है । यह संघ प्रत्येक दो वर्षों में अपनी संक्षिप्त निर्देशिका " World List of Universities" जिसमें विश्व के 6,000 विश्वविद्यालयों तथा उच्च शिक्षा संस्थाओं का उल्लेख है, उसे संशोधित करता है ।

Statesmens' Yearbook - London: Macmillan Press, 1864 - Annual.

इस अब्दकोश में निर्देशिका भी सम्मिलित है जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का उल्लेख किया गया है । इसमें संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.) तथा इससे सम्बद्ध सभी अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों का उल्लेख किया गया है ।

इसमें वर्ल्ड काउंसिल ऑफ चर्चेज, इन्टरनेशनल ट्रेड यूनियनिस्म, यूरोपिय संगठन –OECD, NATO, आदि का विवरण दिया गया है । अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में कोलम्बो प्लान, सीटो (SEATO), सेन्टो (CENTO), अरब लीग, अफ्रीकन एकता संगठन (Organaisation of African Unity) आदि । इन संगठनों की सूचना में इन के उद्‌भव, कार्य, संगठन, मुख्य कार्यालय, अध्यक्ष का नाम, सचिव का नाम तथा इनके प्रकाशनों आदि का विवरण दिया गया है । सूचनात्मक दृष्टि से यह उपयोगी है लेकिन सूचना की मात्रा सीमित है ।

Yearbook of International Organisations.-Brussels: Union of International Associations, 1974, Annual.

यह "इयरबुक" जो एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की एक निर्देशिका है । निर्देशिकाओं में यह काफी लोकप्रिय एवं उपयोगी रही है ।

इसमें 4,310 संगठनों एवं संस्थाओं का उल्लेख तालिकाबद्ध रूप में नाम, पता, संस्थापना वर्ष, उद्देश्य तथा कार्यक्षेत्र, आकार, कार्मिक, वित्तिय स्रोत एवं सुविधा परामर्शदायी स्थिति एवं प्रकृति, क्रियाकलाप, प्रकाशनों का विवरण, सदस्यता आदि की सूचना के साथ किया गया है । अनेक प्रकार की अनुक्रमणिकाएँ तथा परिशिष्ट भी दिए गए हैं । अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं तथा उनके विशेषज्ञों एवं क्रियाकलापों की जानकारी प्राप्त करने के लिये यह संदर्भ कृति एक पर्याप्त उपयोगी सूचना का स्रोत है ग्रन्थालयों में इसका होना आवश्यक है ।

Yearbook of the United Nations, 1946/47- New York: United Nations Office of Publications, 1947, Annual

यह कृति अब्दकोश एवं निर्देशिका दोनों का काम करती है । इसमें संयुक्त राष्ट्र की वार्षिक कार्यविधियों तथा क्रियाकलापों तथा इसकी एजेन्सियों के कार्यक्रमों का विवरण दिया गया है । इसके दो भाग है – प्रथम भाग में राजनीतिक, आर्थिक सामाजिक तथा सुरक्षा के प्रश्नों का उल्लेख होता है, और दूसरे भाग में अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं तथा संयुक्त राष्ट्र के IAE, ILO, UNESCO, WHO, UPU तथा IDA के साथ सम्बन्धों का उल्लेख है । अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की एक निर्देशिका के रूप में सीमित क्षेत्रों के सम्बन्ध में यह सूचनाप्रद है ।

निर्देशिका का दूसरा वर्ग राष्ट्रीय निर्देशिकाओं से सम्बन्धित है वे सभी निर्देशिकाएँ राष्ट्रीय निर्देशिकाएँ कहलाती है । जिनमें राष्ट्रीय स्तर की तथ्यों का समावेश किया जाता है । इनके कुछ उदाहरण निम्नानुसार है ।–

All India Telephone Directory- Published by Bharat Sanchar Nigam Limited.

सन् 2001 में प्रकाशित यह डायरेक्ट्री भारत के समस्त टेलिफोन उपभोक्ताओं की सूची जिलेवार और राज्यवार प्रस्तुत करती है वास्तव में यह निर्देशिका विभिन्न शहरों और जिलों में बनने वाली टेलीफोन डायरेक्ट्रियों का राज्यवार और सम्पूर्ण देश के अनुसार एकीकरण है ।

All India Educational Directory, Chandigarh - All India Directories Publishers, 1972.

ऑल इण्डिया डायरेक्टरीज पब्लिशर्स, चण्डीगढ़ द्वारा प्रकाशित यह निर्देशिका भारत वर्ष के समस्त स्कूलों तथा महाविद्यालयों की सूची प्रस्तुत करती है । इस निर्देशिका के माध्यम से सूचना प्राप्त करने वालों को विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं की जानकारी उनकी विशेषताओं तथा उनमें कार्यरत शिक्षकों की जानकारी प्राप्त हो सकती है ।

Directory of Exporters of Indian Producers and manufacturers- Manager of Publication.

भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित 1961 से हर वर्ष प्रकाशित होने वाली इस निर्देशिका में भारत के सभी उत्पादों के निर्यातक तथा उनके निर्माताओं के नाम और पते दिये हुये हैं जिनके द्वारा कोई भी व्यक्ति इन संस्थाओं से आसानी से सम्पर्क स्थापित कर सकता है ।

Indian Industries. Reference book and directory- Published by Industries Publications, 1969 Annual.

इण्डियन इन्डस्ट्रीज पब्लीकेशन्स मुम्बई के द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली यह निर्देशिका भारतीय उद्योगों की सूची प्रस्तुत करती है । इसके साथ ही इस निर्देशिका में इन उद्योगों के उत्पाद, उनमें लगनेवाला कच्चा माल तथा बाजारों की विस्तृत जानकारी दी जाती है । इसके अतिरिक्त भारतीय उद्योगों के द्वारा वर्ष भर में किये जाने वाला उत्पादन, विकास दर तथा संभावनाओं के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी जाती है ।

निर्देशिकाओं का तीसरा प्रमुख वर्ग स्थानीय निर्देशिकाओं का है । सम्भवतः सर्वाधिक प्रयोग में लायी जाने वाली दो प्रकार की स्थानीय निर्देश्किाएँ होती है –

(1) नगर निर्देशिकाएँ,

(2) दूरभाष निर्देश्किाएँ ।

नगर निर्देशिकाओं से व्यक्तियों के पूर्ण पतों को ज्ञात करने में सुविधा होती है । संयुक्त राज्य अमेरिका तथा अन्य पाश्चात्य

देशों में नगर निर्देशिकाएँ अति आवश्यक सूचना के स्रोत के रूप में व्यक्तियों के निवास स्थान को ज्ञात करने के लिए मानी जाती है । इनका संकलन एवं प्रकाशन भी समय-समय पर किया जाता है । अमेरिका की आर.एल. पॉक कम्पनी, डेटरायट, जिसकी स्थापना 1870 में हुई थी, ने 800 से अधिक इस प्रकार की निर्देशिकाओं का प्रकाशन किया है ।

सर्वाधिक प्रयोग में लाई जानेवाली निर्देशिका दूरभाष की होती है । टेलीफोन डायरेक्ट्री प्रायः सभी नगरों की पृथक-पृथक होती है । जिसका प्रकाशन एवं संकलन भारतवर्ष में पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ डिपार्टमेंट करता है । पूरे भारतवर्ष की टेलीफोन डायरेक्ट्री भी तैयार की जाती है ।

व्यापारियों की सुविधा के लिए अमेरिका में "National Business Telephone Directory ed. by S.R. Green Field - Detroit: Gale Research Co., 1986" बड़ी ही लोकप्रिय निर्देशिका मानी जाती है जिसके 1800 पृष्ठों में 4,00,000 से अधिक लोगों से सम्पर्क स्थापित करने की दूरभाष निर्देशिका है जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका के व्यापारियों के दूरभाष का उल्लेख कम्पनियों के अनुवर्णिक क्रमानुसार किया गया है । साथ ही कम्पनी का नाम, पूर्ण पता, जिप कोड, तथा टेलीफोन नम्बर दिए गए हैं । इस प्रकार का उल्लेख प्रायः सभी दूरभाष निर्देशिकाओं में किया जाता है ।

शासकीय निर्देशिकाओं में पोस्ट आफिसों, नौ सेना के

अधिकारियों तथा केन्द्रीय, राज्य एवं स्थानीय सरकारों की निर्देशिकाएं सम्मिलित हैं । इसके कुछ प्रमुख उदाहरण निम्न हैः-

All Indian Civil list. Bombay, Associated Advertisers and Printers, Half Yearly.

एसोसियेटेड एडवर्टाइजर्स, मुम्बई के द्वारा अर्द्धवार्षिक रूप से प्रकाशित होने वाली इस निर्देशिका में भारतीय शासन के विभिन्न पदों पर कार्यरत अखिल भारतीय सेवा तथा राज्य सेवा के कर्मचारियों की सूची, उनके पदनाम, घरेलू पते तथा फोन नम्बर के साथ दी जाती है ।

India, Post and Telegraphs (Director General of) Post and Telegraph Guide, 1970, Delhi, Manager of Publications, 1970.

भारतीय डाक तार विभाग के प्रकाशन कक्ष द्वारा वार्षिक रूप से प्रकाशित होने वाली निर्देशिका में भारतीय डाक तार विभाग में कार्यरत सभी कर्मचारियों की सूची उनके पदनाम, आवासीय पते के साथ प्रस्तुत की जाती है । यह निर्देशिका सन् 1970 से प्रतिवर्ष नियमित रूप से प्रकाशित की जाती है ।

India Home Affairs (Ministry of) All India Civil List. New Delhi, Manager of Publication, 1970.

भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा सन् 1970 से प्रतिवर्ष वार्षिक रूप से प्रकाशित होने वाली इस निर्देशिका में गृह मंत्रालय तथा उसके अधीन कार्यरत सभी ऐजेन्सियों के

अधिकारियों और कर्मचारियों के नाम, पदनाम, पते, सूचीबद्ध रूप में प्रकाशित किये जाते हैं इसके अतिरिक्त प्रत्येक राज्य के गृह मंत्रालय के तहत कार्यरत सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों की सूची भी इस निर्देशिका के राज्य खण्ड में दी जाती है ।

State Civil Lists: Every State State of India Publisher its civil list.

प्रत्येक राज्य के जनसम्पर्क विभाग द्वारा वार्षिक रूप से राज्य सेवा तथा राज्य में कार्यरत अखिल भारतीय सेवाओं के कर्मचारियों की सूची प्रकाशित की जाती है यह निर्देशिका राज्य स्तरीय सूचनाओं के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्देशिका मानी जाती है ।

चौथे प्रकार की निर्देशिका व्यावसायिक संगठनों से सम्बन्धित होती है जैसे- ग्रन्थालयी मण्डल, चिकित्सक मण्डल, विधि विशेषज्ञ, विज्ञान शिक्षक मण्डल आदि । निम्नलिखित निर्देशिकाएँ व्यावसायिक तथा शोध संस्थाओं एवं संगठनों की जानकारी प्राप्त करने में सूचनाप्रद सिद्ध होती है । कुछ चुनी हुई ऐसी कृतियों का उल्लेख निम्न प्रकार है -

Directory of Educational Research Institutions in Asian Region-2nd ed. Bangkok: UNESCO Regional Officer for Education in Asia, 1970.

शिक्षा जगत के अनुसंधानों तथा सूचना सेवा के एक कार्यक्रम की व्यवस्था सुलभ करने के लिए यूनेस्कों के शिक्षा के क्षेत्रीय कार्यालय बैंकाक ने इस निर्देशिका संकलन किया है जिसमें

170 शोध संस्थाओं का उल्लेख है जो शैक्षणिक अनुसंधानों की दृष्टि से विशिष्ट एवं प्रमुख स्थान रखती है । शैक्षणिक अनुसंधान पद का उपयोग विकास तथा प्रसार की अभिव्यक्ति के लिए किया गया है । इसमें निहित सूचना संस्थाओं तथा अनेक देशों के शासन से प्राप्त विवरणों पर आधारित है ।

इसकी प्रविष्टियों में प्रत्येक संस्था का नाम, पता, अध्यक्षों के पद, संस्थापना वर्ष, प्रशासनिक स्थान, वित्तीय साधनों के प्रमुख स्रोत, कर्मिक संस्था का लक्ष्य एवं कार्यक्षेत्र, इसके विभाग/ इकाइयाँ, शोध परियोजनाओं की तालिका, चल रहे शोध परियोजनाओं की तालिका, पत्रिकाएँ, चयनात्मक प्रकाशनों की तालिका, प्रमुख अध्ययन एवं सर्वेक्षण के सारांश का उल्लेख किया गया है । संस्थाओं को देशों के अनुसार तालिकबद्ध किया गया है । अन्त में एशिया के शैक्षणिक शोध परियोजनाओं की अनुक्रमणिका प्रस्तुत की गई है । यह निर्देशिका सम्बन्धित क्षेत्र की विस्तृत सूचना से युक्त है तथा प्रमाणिकता की दृष्टि से विश्वसनीय है । शिक्षा जगत के शोध तथा नियोजन के क्षेत्र से सम्बद्ध आयोजकों एवं प्रशासकों तथा शोधार्थियों को इस कृति से पर्याप्त मार्गदर्शन प्राप्त होता है ।

Research Centres Directory/ ed. by Mary Michelle Watking.- 11th Ed. - Detroit: Gali Research Co., 1987, 2 Vols.

संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा के 9200 सक्रिय शोध इकाइयों तथा संस्थाओं की यह निर्देशिका 17 प्रमुख विषय क्षेत्रों की पांच प्रमुख श्रेणियों जीव–विज्ञानों, भौतिक विज्ञानों,

अभियांत्रिकी, व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक नीति एवं कार्य, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन तथा बहुमुखी (अन्तर्विषयी) विषय एवं समन्वयकारी केन्द्र की सूचना प्रस्तुत करती है । इसके अतिरिक्त शोध में सहायक इकाइयों जैसे– Computation Centres, Statistical Laboratories एवं Survey Units के भी विवरण दिए गए हैं ।

प्रत्येक प्रविष्टि में 15 बिन्दुओं की पूर्ण सूचना दी गई है । विषय एवं नामों की अनुक्रमणिका दी गई है । जिससे 4,000 विषय विशिष्टताओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है ।

Research Services Directory / ed. by M.M. Watking and R.J. Huffman. - 3rd ed.-Detroit: Gale Research Co., 1986, 641 p.

इस निर्देशिका में 3,600 उन संस्थाओं एवं संगठनों का विवरण दिया गया है जो शोध सेवा को शुल्कों के आधार पर सुलभ करते हैं । कुछ निःशुल्क संगठनों के भी विवरण दिए गए हैं जो शोध कार्य में सहायता एवं सेवाओं का आयोजन करते हैं । इसमें परामर्शदायी संगठनों, अनुबन्धक प्रयोगशालाओं तथा विशेषज्ञों का उल्लेख भी किया गया है जो अनुसंधान एवं विकास में विशेषज्ञीकरण करते हैं । प्रविष्टियों में फर्मों, कर्मिक एवं शोधार्थियों, अनुसंधान के प्रमुख क्षेत्र एवं विषय, क्रियाकलाप, सुविधाएँ आदि का उल्लेख है । अनुवर्णिक, भौगोलिक, क्मिक तथा विषय की अनुक्रमणिकाएँ विधिवत प्रस्तुत की गई है । शोध से सम्बन्धित अनुबंधीय एवं शुल्कों पर आधारित सेवाओं की जानाकारी इससे प्राप्त की जा सकती है ।

Scientific and Technical Organisations and Agencies Directory / ed by, M.L. Young- Detroit: Gale Research Co., 1985, 2 Vols.

भौतिक विज्ञानों, अभियांत्रिकी तथा प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित एजेन्सियों की सामयिक सूचना की दृष्टि से यह एक अद्वितीय एवं विश्वसनीय एवं प्रामाणिक निर्देशिका है । जिसमें 12,000 संगठनों एवं एजेन्सियों का उल्लेख किया गया है जो इन क्षेत्रों में अपनी प्रमुख भूमिका अदा कर रहे हैं संगठनों तथा ऐजेन्सियों को 13 प्रकार की श्रेणियों में विभक्त किया जो अनेक प्रकार के व्यावहारिक एवं शुद्ध विज्ञानों के क्षेत्र में विशिष्टता को प्राप्त कर चुके हैं ।

कुछ निर्देशिकाएँ व्यापार एवं उद्योग से सम्बन्धित होती हैं जो सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत निगमों तथा कम्पनियों के विस्तृत प्रतिवेदनों का विवरण प्रस्तुत करती है ।

अधिकांशतः निर्देशिकाओं का प्रकाशन व्यापारिक संगठनों द्वारा किया जाता है । टेलीफोन की निर्देशिकाओं की संख्या अधिक है । शासकीय एजेन्सियों तथा संघों द्वारा पर्याप्त निर्देशिकाएँ प्रकाशित की जाती हैं । इनके प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं –

All India Instrument Manufacturers and Dealers Association, Bombay. Director of Indian Instruments, 1969.

ऑल इण्डिया इन्सट्रूमेंट मेन्यूफेक्चरर्स एण्ड डीलर्स एसोसियेशन, मुम्बई द्वारा भारतीय इन्स्ट्रूमेंट उद्योग के विकास निवेश परिदृष्य तथा भावी संभावनाओं तथा उसे जुड़े हुए लोगों

की एक निर्देशिका 1969 में जारी की गई थी । इसे पढ़कर निवेश तथा व्यवसायिक अवसरों की जानकारी प्राप्त हो जाती है । इसके साथ ही यह भी ज्ञात हो जाता है कि इस उद्योग में निवेश करते समय उपलब्ध संसाधन विशेषकर मानवीय संसाधन कहाँ से उपलब्ध हो सकते हैं ।

Kothari's Economics and Industrial guide of India Madras, Kothari, 1973.

कोठारी पब्लिकेशन, मद्रास द्वारा भारत के आर्थिक एवं औद्योगिक परिदृश्य पर जारी की गई ये निर्देशिका भारत में उपलब्ध निवेश अवसरों एवं लाभदायिकता का स्पष्ट रूप से वर्णन करती है ।

Directory of Manufactures and their products using ISI mark. New Delhi, The Foreign Window, 1972.

भारतीय उद्योगों में गुणवत्ता के स्तर को स्पष्ट करते हुए ISI मार्क के स्तर का उत्पादन करने वाले उद्योगों की निर्देशिका भारतीय मानक संस्थान द्वारा 1972 में जारी की गई थी । यह निर्देशिका उन विदेशी खरीददारों के लिए अत्यन्त उपयोगी थी जो भारतीय उद्योगों से माल खरीदते थे । इसके साथ ही यह निर्देशिका ISI मार्ग के स्तर पर उत्पादन करने वाली औद्योगिक इकाइयों का नाम, उनके प्रमुख अधिकारियों के नाम और पते भी इस निर्देशिका में थे जिससे विदेशी खरीददारों को इन उद्योगों से सम्पर्क करना सहज एवं आसान हो सके ।

Pharamaceutical Directory of India, Bombay, Star Publication, 1963.

यह निर्देशिका भारत में दवा उद्योगों पर एक विशिष्ट निर्देशिका है । इस निर्देशिका में दवा उद्योग से जुड़े उत्पादक, विक्रेता एवं अन्य प्रमुख प्रबन्धकों के नाम और पते दिये हुए हैं । इस निर्देशिका से भारत में दवा उद्योग में निवेश की स्थिति आसानी से स्पष्ट हो जाती है ।

निर्देशिकाओं का सावतां प्रमुख वर्ग संस्थागत निर्देशिकाओं का है । ऐसी निर्देशिकाओं में स्कूलों, संस्थानों, विश्वविद्यालय तथा अन्य शोध एवं शिक्षा संस्थानों, ग्रन्थालयों, अस्पतालों, संग्रहालयों तथा अन्य इसी प्रकार की संस्थाओं की निर्देशिकाएँ आती हैं । इनके प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं –

Agrawal (DV) and Gurubachan Singh, All India Educational Directory, Chandigrah, All India Directories Publishers, 1972.

डी.व्ही. अग्रवाल और गुरूवचन सिंह द्वारा निर्मित एवं ऑल इण्डिया डायरेक्ट्रीज पब्लिशर्स, चण्डीगढ़ द्वारा 1972 में अखिल भारतीय शैक्षणिक निर्देशिका जारी की गई इस निर्देशिका में भारतवर्ष के सभी शिक्षा संस्थाएँ तथा उनके संचालक तथा प्राचार्य के नाम और पते दिए गए थे । इसके अतिरिक्त इस निर्देशिका में इन संस्थाओं के विशेषताएँ एवं विभिन्न राज्यों में शैक्षणिक संस्था प्रारम्भ करने के नियम दिए गए हैं ।

Directory of Institutions for Higher Education, New Delhi, Ministry of Education, 1971.

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने उच्च शिक्षा के कार्य में संलग्न संस्थाओं की एक निर्देशिका जारी की थी । इस निर्देशिका में देश भर के समस्त उच्च-शिक्षा संस्थानों के नाम, उनकी संचालक संस्थाओं के नाम और पते सम्मिलित किये गये हैं । इसके साथ ही इन संस्थाओं के प्राचार्य, निर्देशक तथा प्राध्यापकों के भी नाम और पते दिए गए थे । ये निर्देशिका देश भर में उच्च शिक्षा में उपलब्ध अवसरों पर विस्तृत प्रकाश डालती है ।

Directory of Municipla Corporations in India, Bombay, All India Institute of Local Self Government, 1964.

भारतवर्ष के सभी नगर निगमों पर एक विशिष्ट निर्देशिका अखिल भरतीय स्थानीय शासन संस्थान द्वारा जारी की गई थी । इस निर्देशिका में सभी नगर-निगमों का इतिहास, उनके अध्यक्ष एवं महापौरों के नाम, निगम परिषद की संरचना तथा नगर निगमों का वित्तीय स्वरूप इत्यादि पर प्रमणिक जानकारी उपलब्ध करायी गई थी ।

International Association of Universties: World list Universities, Other Institutions of Higher Education, University Organizations, 1971-72, Paris, International Association of Universities. 1971.

अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय संगठन, पेरिस द्वारा 1971-72 में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों की

निर्देशिका जारी की गई थी । इस निर्देशिका में विश्व भर में संचालित सभी विश्वविद्यालयों के नाम और पते, उनके कुलपतियों के नाम और पते, उनसे सम्बद्धता प्राप्त कर संचालित महाविद्यालयों के नाम और पते तथा उनमें संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों की जानकारी दी गई थी । यह जानकारी महाद्वीप तथा देशों के आधार पर निर्मित खण्डों और उपखण्डों में दी गई थी ।

व्यापारिक और औद्योगिक निर्देशिकाओं का अपना अलग महत्व एवं विशेष स्थान है ये निर्देशिकाओं के ८वे प्रमुख वर्ग के रूप में जानी जाती है । ऐसी निर्देशिकाएँ मुख्यतः उत्पादकों की सूचना प्रस्तुत करती है जैसे – कम्पनियों की निर्देशिकाएँ, औद्योगिक निर्देशिकाएँ, व्यक्तिगत सेवाओं की निर्देशिकाएँ । निम्नलिखित निर्देशिकाएँ व्यावसायिक एवं व्यापारिक सूचना की दृष्टि से अति उपयोगी एवं सूचनाप्रद हैं –

Organisations Master Index / ed. by D.M. Allard. Detroit: Gale Research, Co., 1987, 1120p.

इस निर्देशिका से लाखों अनुसंधानकर्ताओं को जिन प्रश्नों एवं समस्याओं के उत्तर, व्यापारिक एवं व्यावसायिक संघो, संस्थानों, शोध केन्द्रों, शासकीय एजेंसियों, परामर्शदायी संगठनों, संग्रहालयों "ट्रेड एवं लेबर यूनियन्स" तथा अन्य संगठनों, संस्थाओं एवं अन्य कार्यक्रमों के द्वारा दिये जाते हैं । उनका उत्तर मात्र इस निर्देशिका से आसानी से दिया जा सकता है । जिसमें 50 प्रमुख स्रोतों से सूचना सामग्री का संकलन किया गया है । इसमें लगभग 1,50,000 उद्धरणों को प्रस्तुत किया गया है । जिसमें संगठनों को अनुवर्णिक क्रमानुसार तालिकाबद्ध किया गया है ।

इसकी सूचना प्रमुखतः वहीं है जिनकी पाठकों को प्रायः आवश्यकता पड़ती है और जिन्हें प्राप्त करने के लिए संदर्भ ग्रन्थालयी अनेक स्रोतों का सहारा लेते हैं । अपने ढंग की यह एक पर्याप्त सूचनाप्रद निर्देशिका है ।

Indian Industrial directory - Delhi: World Directory Publisher, 1981.

औद्योगिक एवं व्यापारिक तथा आयात-निर्यात संबंधी सूचना की यह एक विशालतम, पर्याप्त व्यापक एवं विस्तृत निर्देशिका है । जिसका विस्तार अन्तर्राष्ट्रीय है । 20 भागों में सभी प्रकार के औद्योगिक संगठनों एवं संस्थानों को तालिकाबद्ध किया गया है । प्रारम्भ में सामान्य सूचना दी गई है । आयात-निर्यात का उल्लेख भी किया गया है । बैंकों की तालिका पृथक से दी गई है । इसमें दूतावासों की भी तालिका अंन्तिम भाग में दी गई है।

यह एक उपयोगी एवं सूचनाप्रद औद्योगिक निर्देशिका है । किसी भी औद्योगिक एवं व्यापारिक ग्रन्थालयों में इसका होना अति आवश्यक है ।

American Book trade Directory Comp. and ed. by J.C. Press.- 33rd ed. New York: R.R. Bowker Company, 1987, 1711 p.

इस निर्देशिका में 24,000 बुक स्टोर, प्रकाशकों, "जॉबर्स" थोक-विक्रेताओं एवं वितरकों का उल्लेख किया गया है । इनके नाम, पूर्ण पते, दूरभाष, ग्राहकों की प्रकृति, स्वामित्व, संस्थापना वर्ष, विषय विशेषताओं का उल्लेख इसमें किया गया था । फर्मों के नाम तथा भौगोलिक अनुक्रमणिका पृथक से दी गई है ।

इसका प्रकाशन प्रति दो वर्षों में सन् 1915 से किया जा रहा है । इसमे अमेरिका के अतिरिक्त कनाडा, ब्रिटेन तथा आयरलैण्ड के पुस्तक व्यावसायियों की भी सूचना दी गई है । वर्तमान संस्करण में 26,000 बुक विक्रेताओं तथा 2000 थोक विक्रेताओं के विवरण दिए गए हैं, जो राज्यों एवं शहरों के अनुसार आंकलित है ।

All India Directory of Book Trade / R.K. Gupta- New Delhi: Atlantic Publishers and Distributors, 1982, 2 pts.

संम्पूर्ण भारत के ग्रंथ व्यवसाय एवं प्रकाशकों के पूर्ण पते इस डायरेक्ट्री में दिए गए हैं । जिसे अनेक खण्ड़ों में प्रकाशित करने की योजना है । सूचना के विवरण में – स्थापना वर्ष, प्रकाशित पुस्तकों की संख्या, प्रकाशनों की विशेषता – स्कूल की पुस्तकें स्नातक स्तरों की पुस्तकें, स्नातकोत्तर स्तरकी पुस्तकें अथवा सामान्य पुस्तकें, विषय विशेषता, अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीति, भौतिकी, रसायन शास्त्र, आयुर्विज्ञान, अभियांत्रिकी, किन भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित की गई है, आदि का विवरण, प्रत्येक प्रकाशक द्वारा प्रकाशित आख्याओं की संख्या आदि का उल्लेख किया गया है । पुस्तक विक्रेता, वितरक, "होलसेलर्स" अथवा "रिटेलर्स" है, इसका भी संकेत किया गया है ।

इनके पते वर्गीकृत किये गये हैं जो राज्य, जिला तथा शहर के अनुसार प्रस्तुत किये गये हैं । इसके तृतीय भाग में अग्रणी एवं प्रमुख ग्रन्थालयों, विदेशी पुस्तक वितरकों तथा प्रकाशकों की सूचना प्रस्तुत की गई है । इसके अतिरिक्त इस भाग में अग्रणी

एवं प्रमुख विदेशी प्रकाशकों के वितरकों तथा विदेशी पुस्तकों के आयात करने वालों की सूचना दी गई है । पुस्तकों के विक्रय में वृद्धि करने के लिए यह प्रकाशकों के लिए उपयोगी है और ग्रन्थालयों तथा पुस्तक विक्रेताओं के लिए पुस्तकों को प्राप्त करने के लिए सूचनाप्रद है ।

निर्देशिकओं का नौवाँ प्रमुख वर्ग वैज्ञानिक और विद्वत परिषदों की निर्देशिकाओं का है । इस वर्ग में वैज्ञानिक और विद्वत परिषदों से सम्बन्धित संस्थाओं और व्यक्तियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाती है । इसके कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं –

Directory of Scientific Research Institutions in India - Delhi: Indian National Scientific Documentation centre, 1969.

वैज्ञानिक शोध एवं विकास के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका अदा करने वाले 913 संस्थाओं की सूचना इस निर्देशिका में प्रस्तुत की गई है, जो इस क्षेत्र की एक प्रमुख एवं अत्यन्त विस्तृत भारतीय वैज्ञानिक संस्थाओं की अद्वितीय निर्देशिका एवं अनूठी "गाइड" है।

प्रश्नावलियों के माध्यम से 768 ईकाईयों से सूचना का संग्रह करने तथा 145 संस्थाओं के विवरण गौण स्रोतों से संकलित करने के पश्चात् इसे तैयार किया गया है । यह दावा किया गया है कि शोध एवं विकास के क्रियाकलापों के 90 प्रतिशत प्रयोगों का उल्लेख इसमे किया गया है । जिन संस्थाओं के शोध एवं विकास के कार्यक्रमों को इसमे सम्मिलित किया

गया है, उनमें प्रयोगशालाओं, शोध संस्थाओं केन्द्रों, ब्यूरो, परीक्षण केन्द्रों, संस्थानों, राजकीय विभागों, विश्वविद्यालयों के विज्ञान विभागों, उच्च अध्ययन के केन्द्रों, महाविद्यालय तथा औद्योगिक उपक्रम आदि रखे गये हैं ।

इसकी प्रविष्टियों में जो विवरण दिए गए हैं उनमें संस्था का नाम, पता, टेलीफोन, तार देने का संकेत, संस्थापना वर्ष, शोध कर्मियों की संरचना, वार्षिक बजट, ग्रन्थालय के कृतियों की प्रकृति एवं संख्या, उसके विभाग तथा प्रमुख संस्था का इतिहास, उद्देश्य एवं कार्य उपलब्धियों, शोध का क्षेत्र, विशिष्ट सुविधाएँ तथा संस्थाओं के प्रकाशनों का उल्लेख किया गया है । प्रत्येक संलेख के अन्त में जिसदिन प्रश्नावली प्रस्तुत की गयी है । उसका भी उल्लेख किया गया है ।

निर्देशिका के अन्तर्गत संलेखों को विषय-वस्तु पृष्ठ के मुख्य पद्धति के अनुसार आंकलित किया गया है जिन्हें संस्थाओं का नियंत्रण रखने वाली निकाय के संक्षिप्त वर्णन अथवा संस्था के संगठन एवं आकार के वर्णन के साथ प्रारम्भ किया गया है । प्रत्येक की पृथक-पृथक विषय वस्तु तालिका दी गई है । प्रारंभ में संस्थाओं की एक अनुवर्णिक तालिका प्रस्तुत की गई है । इसके अतिरिक्त नामों की अनुक्रमणिका, पत्रिकाओं की अनुक्रमणिका तथा विषय अनुक्रमणिका पृथक से दी गई है । नामों की अनुक्रमणिका में सभी संस्थाओं के अध्यक्षों तथा विभागाध्यक्षों की भी प्रवृष्टियाँ दी गई हैं । विषय अनुक्रमणिका के अन्तर्गत शोध कार्य का क्षेत्र, उसके अनेक विभाग एवं

इकाइयाँ, विशिष्ट प्रकार के उपकरण तथा सुविधाएँ, महत्वपूर्ण शोधों की उपलब्धियाँ, प्रमुख एवं विशिष्ट शोध कार्य संबंधी सूचनाओं की जानकारी का प्रावधान किया गया है ।

इण्डियन नेशनल साइंटिफिक डाक्यूमेंटेशन सेन्टर के द्वारा तैयार एवं संकलित किए जाने के कारण यह पर्याप्त सूचनाप्रद प्रामाणिक एवं विश्वसनीय है । किसी भी संदर्भ संकलन की यह कृति एक अद्वितीय एवं अत्यंन्त उपयोगी निर्देशिका है ।

Government Research Directory / ed. by K.Gill and S.E.Tufts.- 4th ed.- Detroit: Gale Research Co., 1986, 977p.

संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) के शासकीय अनुसंधान कार्यक्रमों का पूर्ण विवरण एवं विस्तृत जानकारी सम्मिलित की गई है जिसमें शासकीय व्यवस्था के अन्तर्गत कार्यरत 4,000 एजेन्सियों का उल्लेख है, जो अनुसंधान के क्षेत्र में अपनी प्रमुख भूमिका अदा कर रही है । अनेक प्रकार के अनुसंधानों की शासकीय एजेंसियों की जानकारी के लिए यह एक अद्वितीय निर्देशिका है लेकिन यह मात्र अमेरिका तक ही सीमित है ।

Internationala Research Centres Directory, 1986&87/ ed. by Kay Gill and D.L. Smith.- 3rd ed.- Detroit: Gale Research Co., 1986, 1110p.

विश्व के 130 देशों के 4,200 शोध संगठनों तथा संस्थाओं की तालिका इसमें पूर्ण विवरण के साथ प्रस्तुत की गई है जो शोध के क्षेत्र में अपनी प्रभावशाली भूमिका अदा कर रहे

हैं। इसमें सभी प्रकार की शोध सुविधाओं, शासकीय, विश्वविद्यालयीन तथा व्यक्तिगत शोध फर्मों का उल्लेख किया गया है । जिसमें शोध केन्द्रों, संस्थाओं, शोध एवं विकास संगठनों, सांख्यिकीय प्रयोगशालाओं, सर्वेक्षण ईकाईयों, शोध समन्वय कार्यालयों तथा व्यावहारिक शोध तथा न्यास संकलन केन्द्रों का उल्लेख किया गया है ।

इसको अद्यतन रखने के लिए निरन्तर परिशिष्टों का प्रकाशन किया जाता है । 1986-87 के परिशिष्ट में 1,000 नवीन शोध केन्द्रों का उल्लेख है । यह निर्देशिका अन्तर्राष्ट्रीय शोध केन्द्रों की जानकारी की एक सूचनाप्रद कृति है । इसके चौथे संस्करण (1988) में 145 देशों के 6,000 शोध संस्थानों का उल्लेख 2 खण्डों के 1600 पृष्ठों में किया गया है । इसकापूरक अंक भी इसे अद्यतन रखने के लिए प्रकाशित किया जाता है ।

निर्देशिकाओं का दसवाँ प्रमुख वर्ग ग्रन्थालयीन निर्देशिकाओं का है इन निर्देशिकाओं में ग्रन्थालयों की सूचनाएँ सम्मिलित की जाती है । इनके कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं –

Bowker Annual of Library and book trade Information- New York: R. R. Bowker, 1956, Annual.

वांगमय सूचियों के प्रकाशन के क्षेत्र में बाउकर कम्पनी का नाम सर्वविदित है जो अपने प्रकाशनों के लिए अद्वितीय लब्ध प्रतिष्ठित नाम है । यद्यपि अब इसके स्वामित्व में परिवर्तन आ गया है ।

"बाउकर एन्युअल" की अनेक विशेषताएँ हैं । यह पंचाग, हेण्डबुक, निर्देशिका और तथ्यों का प्रदान करने की एक उन्नत संदर्भ कृति का कार्य करती है । ग्रन्थालयों की सांख्यिकीय स्थिति तथा ग्रन्थ–उद्योग एवं व्यापार के आँकड़े तथा अन्य विवरणों को प्रदान करती है । इसके अतिरिक्त इस शब्दकोश में पुस्तकों का "कैलेण्डर" प्रगति एवं लाभप्रद घटनाएँ, ग्रन्थालयों के मानकीकरण, अधिनियम, अनुदान, कन्थालयों के पुरस्कार एवं "अवार्ड" विविध विषयों के नवीन प्रकाशन, व्यापारिक एवं ग्रन्थालयियों की दृष्टि से पुस्तकों की स्थिति, ग्रन्थालय शिक्षा, राज्यस्तरीय, क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संघों की निर्देशिका आदि का उल्लेख है जो सूचनाप्रद है । संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रमुख ग्रन्थालयों की तालिका उनके पतों तथा दूरभाष संख्या सहित दी गई है । संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) के विगत वर्ष के संक्षिप्त विवरण एवं तथ्यों का उल्लेख आलेखों के रूप में इसमें प्रकाशित किया जाता है । प्रायः सभी देशों के ग्रन्थालयों द्वारा आयोजित सेवाओं का उल्लेख इसमें मिलता है जो पाठकों के लिए अत्यधिक उपयोगी है । इसे संक्षेप में बाउकर एन्युअल भी कहते हैं ।

World Guide to technical Information and documentation services 2nd ed.- Paris UNESCO Press, 1975.

93 देशों के 476 केन्द्रों का उल्लेख इस निर्देशिका में किया गया है जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र तथा राष्ट्रीय संस्थाएँ जो प्रमुख विषयों से सम्बन्धित है उन्हें सम्मिलित किया गया है । इसका संकलन एफ.आई.डी. (FID) के सचिवालय द्वारा प्रश्नावलियों

के माध्यम से सूचना संग्रह कर यूनेस्कों के लिए किया गया है । 100 देशों का प्रश्नावलियाँ भेजी गई थी ।

इस निर्देशिका के प्रारम्भ में उन देशों की अनुवर्णिक तालिका प्रस्तुत की गई है । इसके पश्चात अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्रों, राष्ट्रीय केन्द्रों तथा राष्ट्रीय संस्थाओं की प्रवृष्टियाँ दी गई है । राष्ट्रीय संस्थाओं को देशों के अनुसार तालिकाबद्ध किया गया है इन केन्द्रों तथा संस्थाओं की प्रविष्टियों में – केन्द्र का नाम, पता, संक्षिप्त इतिहास, ग्रन्थालय का संकलन, सेवाएँ जिन्हें आयोजित किया जाता है – सारांशकरण, वांगमय सूचियाँ, साहित्य खोज, अनुवाद, प्रलेखन, रिप्रोडक्शन, तथा प्रकाशनों के विवरण का उल्लेख किया गया है । राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय निर्देशिकाओं का संदर्भ दिया गया है । जिससे आवश्यकता पड़ने पर पूर्ण विवरण ज्ञात किया जा सके ।

प्रलेखन केन्द्रों, ग्रन्थालयों तथा शोध संस्थाओं में इससे सूचना प्राप्त करने में बड़ी सहायता प्राप्त होगी । अतः ऐसी संस्थाओं में इस निर्देशिका की उपयोगिता अधिक है ।

Directory of Special and Research Libraries in India / compiled by IASLIC- Calcutta : IASLIC, 1962.

IASLIC द्वारा संकलित एवं प्रकाशित इस निर्देशिका में भारत के तत्कालीन 400 अनुमानित ग्रन्थालयों में से 173 विशिष्ट प्रकार के ग्रन्थालयों को तालिकाबद्ध किया गया है जो अनुसंधान की दृष्टि से विशिष्टता रखते हैं और जिनका संकलन भी विशिष्ट

प्रकार का है । इसमें विशिष्ट एवं पर्याप्त मात्रा में शोध सामग्रियों की दृष्टि से समृद्धशाली ग्रन्थालयों को ही स्थान प्रदत्त किया गया है ।

प्रत्येक प्रविष्टि में ग्रन्थालयों से सम्बन्धित पूरा नाम, पता, संस्थापना वर्ष, क्षेत्रफल, ग्रन्थों की व्यवस्था का स्थान, अध्ययन कक्ष, अनेक कक्षों का विवरण, ग्रन्थालय परिदृश्य एवं महत्ता, वित्तीय स्थिति, सम्बन्धित पैतृक निकाय, विषय-क्षेत्र, वार्षिक बजट, पाठक, संसाधन, वार्षिक अधिग्रहण, प्रसूची व्यवस्था, कर्मिक तथा उनके वेतन, मुक्त प्रवेश व्यवस्था, नित्य प्रति पाठ्य सामग्रियों के आदान-प्रदान की संख्या, गन्थालयी का नाम तथा उसका स्थान तथा वेतन आदि का उल्लेख किया गया है ।

प्रविष्टियों को ग्रन्थालयों के नाम के अनुवर्णिक क्रमानुसार आंकलित किया गया है । नामों की भिन्नता की स्थिति में प्रतिनिर्देशियों को प्रस्तुत किया गया है । नामों की अनुक्रमणिका भी दी गई है । अन्य ग्रन्थालयों की तालिका अनुवर्णिक क्रमानुसार अन्त में दी गई है ।

यह एक उपयोगी निर्देशिका है जो भारतीय परिपेक्ष्य में एक उत्तम प्रयास है जिससे सूचनात्मक सामग्रियों की जानकारी में सहायता प्राप्त होती है ।

Libraries in India, 1951 - New Delhi. Manager of Publications [1952].

इसमें 1200 ग्रन्थालयों का उल्लेख है जो मार्च 31, 1951 तक की स्थिति का द्योतक है । 5000 से कम कृतियों वाले सार्वजनिक ग्रन्थालयों को इसकी तालिका में सम्मिलित नहीं किया गया है । ग्रन्थालयों को छः समूहों में विभक्त किया गया है – भारत सरकार के ग्रन्थालय, राज्य सरकारों के ग्रन्थालय, विश्वविद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन ग्रन्थालय, शोध संस्थाओं के ग्रन्थालय, प्रयोगशालाओं तथा सार्वजनिक स्कूलों के ग्रन्थालय तथा सार्वजनिक ग्रन्थालय बहुत पुराने पड़ जाने के कारण इसका भी महत्व मात्र ऐतिहासिक ही रह गया है ।

अनेक प्रकार के राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों तथा सम्मानों को प्रतिवर्ष विशिष्ट प्रकार के व्यक्तियों को प्रदान किये जाते हैं इनका भी उल्लेख आवश्यक है क्योंकि इनसे भी आवश्यक सूचना समय पड़ने पर प्राप्त की जा सकती है ।

Awards, Honours and Prizes.- Dietroit: Gale Research Company, 1986.

यह पुरस्कार के विजेताओं तथा पुरस्कार या सम्मान प्रदान करने वाली संस्थाओं की एक अन्तर्राष्ट्रीय निर्देशिका है जिसमें 625 विषयों तथा क्रियाकलापों के क्षेत्रों के 15,000 पुरस्कारों का उल्लेख तीन खण्डों में किया गया है । इसमें पुरस्कार का सम्भवतः कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं बचा है ।

प्रथम खण्ड – Vol. 1 United States and Canada

इसमें 8,600 अमेरिका तथा कनाडा के पुरस्कारों तथा पुरस्कार प्रदान करने वाली संस्थाओं का आंकलन संस्थाओं के अनुसार किया गया है । इसमे संस्था की अनुक्रमणिका, पुरस्कारों की विषयों की अनुक्रमणिका तथा पुरस्कारों की अनुवर्णिक अनुक्रमणिका पृथक–पृथक दी गई है । इसका सम्पादन सिगमैन ने किया है।

द्वितीय खण्ड – Vol. 2, International and Foreign

इसमें 5,000 पुरस्कारों की प्रविष्टियों का उल्लेख है जो अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा प्रदान की जाती है । इन्हें विषयानुसार आँकलित किया गया है । पुरस्कारों की विषय अनुक्रमणिका, भौगोलिक अनुक्रमणिका, विषयों तथा प्रतिनिर्देशियों की तालिका इसमें पृथक से दी गई है । इसमें विश्व के 58 देशों के पुरस्कारों का विवरण है । इसका सम्पादन वासरमैन ने किया है ।

किस संस्था द्वारा कौन–सा पुरस्कार किसकों, क्यों और किस उपलक्ष्य एवं योगदान के लिए प्रदान किया जाता है और उसे कौन सी संस्था प्रदान करती है, इसका संक्षेप में उल्लेख किया गया है ।

National Teachers Award those Who Won it -

इस राष्ट्रीय पुरस्कार की स्थापना 1958 में हुई थी । यह अध्यापकों को प्रदान किया जाने वाला सर्वोत्तम एवं सर्वोच्च पुरस्कार है जो भारत में अध्यापकों को शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्टि योगदान हेतु दिया जाता है । इसमें इस पुरस्कार के 2,459 विजेताओं का उल्लेख वर्ष, राज्य और जिला के अनुसार किया

गया है । स्त्री एवं पुरूष विजेताओं का पृथक-पृथक उल्लेख है । उन स्कूलों का भी उल्लेख किया है जहाँ के दो अध्यापकों को पुरस्कार मिला है । पुरस्कार विजेताओं के आँकड़े तथा विश्लेषणात्मक सामग्री क्रमबद्ध रूप से दी गई है ।

Encyclopaedia of Soldiers with Highest Gallantry Awards-

भारतीय सेना की तीनों सेनाओं के पुरस्कार विजेताओं की यह कृति वस्तुतः "Who's Who" का कार्य करती है, जिन्हें परमवीर चक्र, महावीर चक्र, वीर चक्र एवं विक्टोरिया क्रॉस प्राप्त हुए है । ऐसे पुरस्कार विजेताओं के 1360 सैनिकों जिसमें सभी श्रेणियों के सैनिक सम्मिलित हैं, का पूर्ण विवरण उनके जीवन वृतान्त के साथ दिया गया है । इसमें विजेताओं के चित्र भी दिए गए हैं । पुरस्कार विजताओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी दी गई है । 1948, 1962, 1965 तथा 1971 में जिन सैनिकों द्वारा वीरता एवं शौर्य के पुरस्कार अर्जित किए, उनका पृथक उल्लेख किया गया है तथा भारत के बाहर वीरता एवं शौर्य के पुरस्कार अर्जित करने और मरणोपरान्त पुरस्कार प्राप्त करने वालों का विस्तृत उल्लेख किया गया है । किन-किन धर्मावलम्बियों ने कितने पुरस्कार प्राप्त किये उन्हें धर्मानुसार वर्गीकृत किया गया है जिससे सैनिकों की धर्मानुसार पुरस्कार प्राप्ति की स्थिति ज्ञात हो सके । किन्हें "वीरता" तथा शौर्यता के दो बार पुरस्कार प्राप्त हुए, वे परिवार जिन्हें दो बार पुरस्कार प्राप्त हुआ है तथा "सिविलियन" जिन्हें पुरस्कार दिया गया है, उनका भी उल्लेख है ।

अध्याय-५

वार्षिकी : अभिप्राय विकास, उपयोगिता तथा इनके प्रकार

अध्याय -५

वार्षिकी : अभिप्राय विकास, उपयोगिता तथा इनके प्रकार

वार्षिकी प्रत्येक वर्ष में एक बार प्रकाशित होती है । अंग्रेजी में इसे इयरबुक (Year Book), एलमेनेक (Almanac) एवं एन्यूअल (Annual) कहा जाता है जबकि हिन्दी में सामान्यतः वार्षिक ग्रन्थ पंचाग या जंत्री और एतद् विषयक ग्रन्थ आदि नामों से जाना जाता है ।

वार्षिक ग्रन्थ कमिक प्रकाशन का एक प्रमुख प्रकार है । अन्य कमिक प्रकाशनों के विपरीत यह वर्ष में केवल एक बार प्रकाशित होता है । इसलिए इसका अध्ययन एक स्वतंत्र सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में किया जाता है । यह विविध विषयों से सम्बद्ध प्रमुख सूचनाओं और तथ्यों को काल-कमानुसार प्रस्तुत करता है । एतद् विषय से सम्बद्ध विगत वर्षीय स्वरूप को जानने का यह प्रमुख साधन है । यद्यपि इसमें संचित विषय विगत वर्ष का होता है । दूसरे शब्दों में इसकी प्रकाशन तिथि तक की सूचनाएँ इसमें सम्मिलित रहती है । इसलिए लुईस शोर का यह उपदेश है कि "विकास कम विगत वर्ष की गतिविधि और सामयिक घटनाओं से सम्बद्ध प्रश्नों के लिए सर्वप्रथम वार्षिक ग्रन्थों का अवलोकन करो ।[1] आधारभूत सूचना स्रोत विश्वकोश का यह पूरक साहित्य है । विश्वकोशों में एक निश्चित अवधि तक की सूचनाएँ अंकित / संकलित रहती है ।

1 Shores, Louis." Basic Reference Book" p.253.

उनका वार्षिक विकास या प्रगति को वार्षिक ग्रंथ सूचित करता है । इस प्रकार विविध स्रोतों से सम्बद्ध मानवीय क्रिया–कलापों पर प्रगति परक सामयिक सूचना प्रस्तुत करने वाले वार्षिक प्रकाशन को वार्षिक ग्रंथ कहते हैं । William A Katz ने इसकी उपयोगिता और आवश्यकता को इसके निम्नांकित छः विशेषताओं के आधार पर सिद्ध किया है –

1. **नूतनता** – इसमें नवीनतम तथ्य और सूचनाएँ संचित रहती है । किसी व्यक्ति, विषय या घटना से सम्बद्ध नई बातों को जानने का यह तत्कालिक साधन है । दूसरे शब्दों में नूतनता इसका प्रमुख गुण है ।

2. **संक्षेप में तथ्य** – एतद् विषयक नवीन तथ्य या आँकडे इसके अवलोकन से संक्षेप में जाने जा सकते हैं ।

3. **विकास क्रम** – इसकी नवीनता सम्बद्ध विषय के विकास क्रम, स्थिति या स्वरूप को अप्रत्यक्ष रूप से इंगित करती है । इसलिए गवेषु विद्वानों का एक प्रमुख सहायक साधन है । ऐतिहासिकारों के लिए विगत वर्षों की सूचना, घटना आँकडे प्राप्त करने का यह एक संदर्भ ग्रन्थ है । इसलिए पुराने वार्षिक ग्रंथ अपना पृथक ऐतिहासिक महत्व रखते हैं ।

4. **स्रोत सूचक** – बहुत से प्रमाणिक वार्षिक ग्रंथ अंकित सूचना या तथ्य के आधारभूत साहित्य का सन्दर्भ उद्घृत करते हैं, ताकि उनका अवलोकन कर उनके बारे में विशेष जानकारी प्राप्त की जा सके ।

5. **निर्देशिका और जीवनी सम्बन्धी सूचना** –कई वार्षिक ग्रन्थों में प्रमुख व्यक्तियों की जीवनी, व्यवसाय, पता आदि उल्लिखित रहते हैं।

6. मनोरंजक वाचन– अनेक वार्षिक ग्रन्थ आजकल विविध प्रकार के विषयों से संचित रहते हैं । इसीलिए विशेषतः सन्दर्भ एवं सूचना सेवा में संलग्न कार्यकर्ताओं को मनोरंजन के साथ नवीन विषयों से परिचित होने के लिए ये अच्छे सहायक ग्रन्थ हैं।

इस प्रकार वार्षिक ग्रन्थ विविध व्यक्ति, विषय, घटना, तथ्य और उनकी प्रगति से सम्बद्ध नवीन और अद्यतन सूचनाओं को संक्षेप में प्रस्तुत करता है । नवीनता और अ्द्यतनीयता इसका प्राण है । इन गुणों से सम्पन्न और विविध विषयों से सम्बन्धित अन्य कोई सन्दर्भ ग्रन्थ विद्यमान नहीं है । अतएव वार्षिक ग्रन्थ की आवश्यकता स्वयं सिद्ध है ।

वार्षिक ग्रन्थ का पुरातन प्रकार पंचांग या जंत्री का इतिहास बहुत पुराना है । मकरन्द की सारणी भारत का उपलब्ध प्राचीनतम उदाहरण है । आधुनिक अर्थ और रूप में वार्षिक ग्रन्थ का उदय सन् 1758 में हुआ । एडमण्ड बर्क के द्वारा सम्पादित अंग्रेजी का प्रथम वार्षिक ग्रन्थ 'Annual Register of World Events' उसी वर्ष प्रकाशित हुआ । यह अन्तर्राष्ट्रीय समान्य वार्षिक ग्रन्थ का उदाहरण है । अन्तर्राष्ट्रीय वार्षिक ग्रन्थ का उद्भव सन् 1827 में 'Year Book of Facts in Science and Arts' से होता है निम्नांकित अंग्रेजी के वार्षिक ग्रन्थ अपनी शताब्दी पूरा कर चुके हैं ।

1. Annual Register of world Events, 1758;
2. Congress National Year Book, 1845;
3. Wisdom cricketer's Almanack, 1863;
4. Statesman's Year Book, 1864; and
5. World Almanack, 1868

वार्षिकी को उसके विषय, संरचना एवं भौगोलिक सीमा के

आधार पर निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है:-

1. सामान्य वार्षिकी,
2. विषयगत वार्षिकी,
3. पंचांग या जंत्री

इनका विवरण निम्नानुसार है –

<u>सामान्य वार्षिकी</u>

भौगोलिक आधार पर इसमें सम्बद्ध प्रदेश के समस्त प्रमुख विषयों पर वर्तमान स्थिति का विवरणात्मक परिचय दिया रहता है, पर्याप्त आँकड़े, चार्ट, अनुक्रमणिका आदि से यह पूर्ण रहता है । सम्बन्धित प्रदेश की भौगोलिक, राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, प्रशासकीय, रक्षा, वैज्ञानिक क्रियाकलाप आदि से सम्बद्ध प्रश्नों का उत्तर इससे आसानी से जाना जा सकता है। कुछ सामान्य वार्षिक ग्रन्थों में विषयों का विवचेन विशेषतः विवरणात्मक शैली से और कुछ में आँकड़ों के माध्यम से प्रस्तुति विद्यमान रहती है । इसीलिए एएलए ग्लॉसरी (ALA glossary) ने इसकी परिभाषा इन शब्दों में अंकित की है :

"विवरणात्मक अथवा सांख्यिकीय रूप में सामयिक सूचना देनेवाले वार्षिक प्रकाशन को वार्षिकी कहते हैं [1]" इस दृष्टि से सामान्य वार्षिकी दो प्रकार की होती है ।

1. कथन शैली या विवरणात्मक
2. सांख्यिकीय वार्षिकी ।

इनके प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित है –

भारत–वार्षिकी संदर्भ ग्रन्थ, 2002 नई दिल्ली, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत शासन, 1953

---

1 "ALA Glossary of Library Terms" pp.100

भारत शासन के सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा भारत वार्षिकी संदर्भ ग्रंथ का प्रकाशन किया जाता है जिसमें भारत राष्ट्र से सम्बन्धित सभी जानकारियाँ संकलित एवं सम्मिलित की जाती हैं ।

भारतीय अब्दकोश, 2000; पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् 1960.

बिहार सरकार की राजभाषा परिषद् द्वारा सन् 1960 से भारतीय अब्दकोश नाम से एक वार्षिक ग्रंथ का प्रकाशन किया जाता है जिसमें भारत से सम्बन्धित तथ्यों को संकलित एवं प्रदर्शित किया जाता है ।

हिन्दुस्तान समाचार वार्षिकी 2001, नई दिल्ली, हिन्दुस्तान समाचार सहकारी समिति, 1967

हिन्दुस्तान समाचार सहकारी समिति द्वारा प्रतिवर्ष हिन्दुस्तान समाचार वार्षिकी का प्रकाशन किया जाता है जिसमें वर्ष भर के समाचारों का संकलन प्रकाशित किया जाता है ।

Britain: An Official Hand Book, 2001. London; British Information Services, 1972.

ब्रिटिश इनफॉरमेंशन सर्विस, लंदन द्वारा 1972 से ब्रिटेन की जानकारियों से सम्बन्धित विशेष रिपोर्ट वार्षिक रूप से जारी की जाती है ।

Britannica Book of the year 2001. Chicago, Encyclopedia Britannica, Inc. 1938.

ब्रिटेनिका एक प्रसिद्ध विश्वकोश है । जिसे वार्षिक रूप से जारी किया जाता है । यह एक अत्यन्त प्रतिष्ठित एवं विश्वसनीय प्रकाशन है ।

Europa Year Book, 2001. London, Europa Publications, 1946. 2Vol.

यूरोपा द्वारा जारी वार्षिकी एक प्रतिष्ठित प्रकाशन है । यह 1946 से प्रतिवर्ष दो खण्डों में प्रकाशित किया जाता है ।

Indian Annual Register. Calcutta, Indian Annual Register Office, 1918

इण्डियन एन्यूअल रजिस्टर ऑफिस, कलकत्ता द्वारा जारी इण्डियन एन्यूअल राजिस्टर एक महत्वपूर्ण वार्षिकी है । जिसमें भारत से सम्बन्धित सांख्यिकीय तथ्यों को जारी किया जाता है ।

Hindustan Year Book and Who's Who, 2000, Calcutta, MC Sarkar, 1932.

एम०सी० सरकार पब्लिकेशन, कलकत्ता द्वारा हिन्दुस्तान वार्षिकी प्रतिवर्ष जारी की जाती है इस प्रकाशन में अन्य तथ्यों के अलावा देश के प्रमुख लोगों के नाम तथा उनके प्रमुख कार्यो का विवरण दिया जाता है ।

India, A Reference Annual, 2001-02

New Delhi, Ministry of Information and Broadcasting, 1953

भारत वार्षिकी संदर्भ ग्रंथ 2001, नई दिल्ली, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत शासन, 1953 भारत शासन के सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा भारत वार्षिकी संदर्भ ग्रंथ का प्रकाशन किया जाता है । यह अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होने वाला एक प्रमुख प्रकाशन है । जिसमें भारत से सम्बन्धित सभी तथ्यों को प्रदर्शित किया जाता है ।

India,. Statistical Organization, Statistical Abstracts of the Indian Union. Delhi, Manager of Publications, 1950.

भारत सरकार के सूचना प्रसारण विभाग के प्रकाशन प्रभाग के

द्वारा इण्डिया के नाम से सांख्यिकीय सारांश वार्षिक रूप से जारी किया जाता है ।

The Statesman Year Book, 2000. London Macmillan, 1864.

दुनियाँ के प्रसिद्ध प्रकाशन मैकमिलन कम्पनी द्वारा स्टेट्मेन इयर बुक का प्रकाशन सन् 1864 से प्रतिवर्ष किया जाता है । यह विश्व की घटनाओं का जानने के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाशन है ।

राष्ट्रीय महत्व के विविध तथ्यों / कार्यो को सार्वजनिक आधार पर क्रियात्मक रूप देने के लिए आजकल अनेक संस्था, सोसाइटी और संघ बने हुए हैं । इस प्रकार के समष्टि निकाय न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी स्थापित हैं । इन संस्थाओं से सम्बद्ध विषयों और कार्यों की प्रगति को सूचित करने के लिए अनेक विषयगत वार्षिक ग्रंथ प्रकाशित किए जाते हैं । इनमें एतद विषयों और कार्यों से सम्बद्ध विविध पक्षों पर तथ्य सूचना और आँकड़े दिए रहते हैं । विविध विषय और संस्थाओं की प्रगति को जानने के लिए ये बहुत उपयोगी साहित्य है ।

Yearbook of the United Nations

संयुक्त राष्ट्र संघ का यह अब्दकोश इस संघ के सभी क्रियाकलापों एवं कार्यक्रमों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करता है । जो प्रतिवर्ष आयोजित किये जाते हैं । साथ ही इसकी अन्य एजेन्सियों तथा निकायों के भी कार्य विवरण इसमें प्रस्तुत किये जाते हैं । इसके दो भाग है । प्रथम भाग में राजनीतिक, आर्थिक तथा सम्बन्धित वर्ष की अवधि में संयुक्त राज्य की बैठकों में पूछे गये सुरक्षा एवं सामाजिक प्रश्नों के विवरण का उल्लेख होता है । इसमें अनेक प्रकार के परिशिष्ट एवं अनुक्रमणिका दी गई होती है जिसमें

नामों एवं विषयों की प्रविष्टियाँ होती हैं । इससे सूचना सामग्री को प्राप्त करने में सुविधा होती है प्रत्येक अध्याय के अन्त में प्रलेखीय संदर्भ दिये गये हैं । जो अत्यधिक उपयोगी हैं ।

The Commonwealth Year Book – London: HMSO, Foreign and Commonwealth Office, 1987.

राष्ट्रों के "ब्रिटिश कॉमनवेल्थ" का कोई औपचारिक संविधान की रूप रेखा नहीं है और इसके सदस्य राष्ट्रों पर कोई अध्यादेशात्मक बंधन भी नहीं है यह राष्ट्रों का एक एच्छिक समूह है जो अभी एक विकासमय स्वरूप में है । इसके 49 राष्ट्र सदस्यों में से 26 गणतन्त्र राष्ट्र हैं और 18 क्वीन एलिजाबेथ को अपने-अपने राष्ट्र का प्रमुख मानते हैं । 5 अन्य राष्ट्रों में अपने राजतंत्र हैं । जो सर्वमान्य हैं ।

यह अब्दकोश राष्ट्रकुल देशों की वैविध्यता तथा इनके निवासियों की भिन्नताओं के सम्बन्ध में पर्याप्त सूचना प्रस्तुत करता है जो उनके इतिहास संविधान आश्रित अधिक्षेत्र, सामाजिक भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा अध्यापकों, राजनायिकों, व्यापारिक प्रतिनिधियों तथा पर्यटकों के लिये अतिआवश्यक है । राष्ट्रकुल देशों की सूचना की दृष्टि से यह एक उपयोगी संदर्भ कृति है ।

Facts on File Year Book

विश्वकोशों के विख्यात प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित सामान्य अब्दकोश अति लोकप्रिय एवं उपयोगी माने जाते हैं । लेकिन "Facts on file Year book" तथा "Annual Register of World Events" दोनों का उपयोग प्रमुख तिथियों, घटनाओं, प्रमुख व्यक्तित्व वाले पुरूषों तथा विगत वर्ष के सूचनात्मक विवरण एवं समाचार की जानकारी के लिये उद्यत संदर्भ कृति के रूप में किया जाता है । यद्यपि इस दृष्टि

से "New York Times Index" समान रूप से उपयोग में लाया जाता है ।

"Facts on file Year book" वस्तुतः "Facts on file" साप्ताहिक विश्वस्तरीय समाचार पत्रिका है जिसमें संसार के प्रमुख समाचारों का साप्ताहिक प्रकाशन होता है और जिसका संचयी अनुक्रमणिकाकरण किया जाता है । उसके ही वार्षिक पूर्ण संचयी विवरण का ही एक अब्दकोश है जिसके अन्तर्गत चार प्रमुख श्रेणियों अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, संयुक्त राज्य के मामले, अन्य राष्ट्रों तथा समान विषय शीर्षकों के अनुसार विवरण प्रस्तुत किया जाता है । लेकिन 50% सूचना सामग्री अमेरिका से सम्बन्धित होती है । जिसका एक प्रथम भाग होता है । सामान्य सूचना हेतु सम्पूर्ण विवरण का 10 प्रतिशत निश्चित होता है । तथ्यों में प्रमुखतः अर्थव्यवस्था, श्रम, शिक्षा, कला, खेलकूद, अपराध आदि प्रस्तुत किये जाते हैं । इसकी सूचना वास्तविक एवं वस्तुनिष्ठ होती है और प्रस्तुत करने की शैली स्पष्ट होती है ।

इस वार्षिकी के दस वर्षीय तथा पेंतालीस वर्षीय अंक भी प्रकाशित किये हैं । जिससे पूर्वव्यापी सूचना की प्राप्ती में बड़ी सुविधा होती है । जो अनेक दृष्टिकोणों से अति उपयोगी संदर्भ स्रोत हैं ।

Times of India Directory and Yearbook including Who's Who, Mumbai, 1914

इसका प्रकाशन विख्यात अंग्रेजी समाचार पत्र Times of India प्रेस के प्रबन्धकों द्वारा 1914 से एक वार्षिकी के रूप में बम्बई से किया जा रहा है । इस अब्दकोश की एक महत्वपूर्ण एतिहासिक

पृष्ठभूमि है । इसका प्रकाशन प्रारम्भ में "Indian Yearbook" के आख्यान्तर्गत होता था जिसे कालान्तर में "Indian and Pakistan Yearbook and Who's Who" के आख्या के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाने लगा । 1954–55 से इसका प्रकाशन वर्तमान आख्या अन्तर्गत किया जा रहा है ।

यह अब्दकोश व्यापारिक निर्देशिका अब्दकोश तथा जीवनचरित्र कोश तीनों की एक मिश्रित संदर्भ कृति है । इसकी सूचना विशेष रूप से भारत तक ही सीमित एवं सम्बन्धित है । जिन प्रकरणों, विषयों तथा तथ्यों का उल्लेख इसमें मिलता है वे क्रेताओं के लिये व्यापारिक निर्देशिका, प्रकृति एवं अन्य साधन, कृषि पर आधारित उद्योग, शिक्षा एवं विज्ञान, सामाजिक कल्याण के कार्यक्रमत, जनसंख्या, व्यापार उद्योग, वित्तीय स्थिति, संचार, राज्यों तथा केन्द्र शासित अधिक्षेत्रों, प्रशासनिक एवं राजनयिक अधिकारियों, निर्वाचन एवं विधायक कौन–कौन है । भारत की मानचित्रावलियाँ, राज्य तथा संसार आदि प्रकरणों से संम्बन्धित विषय एवं तथ्य है।

अनेक प्रकार के पर्याप्त विवरण जो आसानी से अन्य स्रोतों से प्राप्त नहीं किये जा सकते उन्हें इस कृति से प्राप्त किया जा सकता है । इसमें व्यापरिक संगठनों की तालिका विषयानुसार दी गई है । शोध संस्थानों की तालिका, भारत सरकार के नाम, राज्य के प्रशासनिक अधिकारी एवं कर्मी, भारत के विदेशों में पदस्थ राजदूतों के नाम, भारत में विदेशी राजनयिकों के नाम तथा विदेशों का प्रतिनिधित्व, "Who's Who in India" सभी भारतीय राज्यों के विभिन्न प्रकार की सांख्यकीय, मौलिक, विधायक, राज्य प्रमुखों तथा विधायकों के क्षेत्र, सांसदों आदि का विवरण इस अब्दकोश में स्पष्ट रूप से दिया है ।

भारत से सम्बन्धित विवरणात्मक एवं सांख्यिकीय आंकड़ों की सूचना पर्याप्त मात्रा में इस अब्दकोश में दी गई है । भारतीय ग्रन्थालयों में भारत की विविध सूचना सामग्री की यह एक उपयोगी एवं उद्यत संदर्भ की सर्वोत्तम कृति है ।

Manorama Year Book — A Handy Encyclopedia of Modern Knowledge – Kottayam: Malayala Manorama.

मनोरमा इयरबुक का प्रकाशन विगत कई वर्षों से राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र "मलयाला मनोरमा" कोट्‌टायम, द्वारा किया जा रहा है । जो सबसे सस्ता अब्दकोश है और जिसे अधिक लोकप्रियता विगत वर्षों में प्राप्त हुई है ।

एक खण्डीय कृति "मनोरमा इयरबुक" भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की विविध सूचना तथा आधार तथ्यों का प्रमाणिक एवं वास्तविक विवरण प्रदान करती है । मानव क्रियाकलाप के सभी पक्षों तथा मानव ज्ञान के सभी अंगों की एक उद्यत सूचना स्रोत की यह कृति बड़ी ही उपयोगी सिद्ध हुई है ।

विश्व के सभी देशों का परिचायक विवरण, मानचित्र सहित अनेक सांख्यिकीय तथ्यों के साथ उल्लेख किया गया है । विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सभी प्रमुख विकास, उपलब्धियों तथा आंकड़ों का उल्लेख किया हैं । अंतरिक्ष आयुर्विज्ञान, स्वास्थ, अविष्कारों, खोजों एवं अनुसंधानों तथा नवीनतम वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी उपलब्धियों का स्पष्ट उल्लेख किया गया है । ग्रन्थालय, कार्यालय, व्यक्तिगत उपयोग के लिये यह अब्दकोश उपयोगी एवं विस्तृत सूचना का स्रोत है ।

विषयानुसार वार्षिकी के उदाहरण निम्नानुसार है –

अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य

Annual Survey of Industries, Department of Industry Government of India, New Delhi 1967.

सन् 1967 से प्रतिवर्ष सतत् प्रकाशित होने वाली इस वार्षिकी में भारत के उद्योगों से सम्बन्धित विशिष्ट सामग्री तथा समंकों का संग्रहण होता है ।

Economic Survey, Ministry of Finance, Government of India.

भारत के वित्त मंत्रालय द्वारा प्रतिवर्ष आर्थिक सर्वेक्षण का प्रकाशन किया जाता है । इस प्रकाशन में वर्ष भर में विद्यमान / घटित आर्थिक क्षेत्र के समंकों तथा कार्य प्रदर्शनों का विस्तृत ब्यौरा रहता है ।

Report on Currency and Finance, Reserve Bank of India, Bombay.

भारत रिजर्व बैंक द्वारा प्रतिवर्ष भारत की आर्थिक और वित्तीय स्थिति का लेखा-जोखा इस वार्षिकी में दिया जाता है ।

सांख्यिकी

Demographic Year Book, Department of Economic & Social Affairs, United Nation's Organisation, New York. 1949.

संयुक्त राष्ट्रसंघ के आर्थिक एवं समाजिक कार्य प्रभाग द्वारा इस वार्षिकी का प्रकाशन प्रतिवर्ष सन् 1949 से सतत् किया जा रहा है । इस वार्षिकी में विश्व भर के जनसंख्या संबंधी समंकों को प्रकाशित किया जाता है ।

Statistical Outline of India 1999-2000, Department of Economics and Statistics, Tata services Limited, Mumbai.

टाटा सर्विस लिमिटेड, मुम्बई द्वारा स्टेटिस्टीकल ऑउटलाइन ऑफ इण्डिया एक प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित सांख्यिकीय प्रकाशन है । टाटा सर्विस द्वारा प्रतिवर्ष नियमित रूप से प्रकाशित किया जाता है । इस प्रकाशन में 298 सांख्यिकीय सारणियों / तालिकाओं का प्रयोग किया जाता है ।

शिक्षा (Education)

International Year Book of Education, Paris, UNESCO, 1971.

यूनेस्कों द्वारा 1971 से प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा पर एक वार्षिकी का प्रकाशन किया जाता है । इसमें शिक्षा के स्तर एवं सम्बन्धित तथा विभिन्न शिक्षा संस्थानों पर विशिष्ट जानकारी दी जाती है ।

Indian Year Book of Education, New Delhi, National Council of Educational Research and Training New Delhi, 1961.

एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली द्वारा भारत में स्कूल शिक्षा पर एक अत्यन्त महत्वपूर्ण वार्षिकी का प्रकाशन इण्डियन इयर बुक ऑफ एज्यूकेशन के नाम से किया जाता है । तीन खण्डों में प्रकाशित होने वाले इस वार्षिकी में भारत के स्कूल शिक्षा की स्थिति एवं आँकड़ों का प्रकाशन किया जाता है ।

Commonwealth Universities Year Book London, Association of Common Wealth Universities 1978.

राष्ट्रमंडल विश्वविद्यालय संघ द्वारा राष्ट्रमंडलीय देशों के विश्वविद्यालयों पर एक वार्षिकी का प्रकाशन किया जाता है । इस वार्षिकी में राष्ट्रमंडलीय देशों के उच्च शिक्षा पर विशेष सामग्री दी जाती है ।

राजनीति विज्ञान

Year Book of World Affairs London, Institute of World Affairs 1972.

लंदन इंस्टीट्यूट ऑफ वर्ड अफेयर्स द्वरा इस वार्षिकी का प्रकाशन वर्ष 1972 से लगातार किया जा रहा है । इस वार्षिकी में विश्व की प्रमुख राजनैतिक घटनाओं तथा उनका भावी राजनीति पर पड़ने वाले प्रभावों का आंकलन किया जाता है ।

Amnesty's Year Book on Human Rights, Amnesty International Geneva.

एमेनेस्टी इन्टरनेशनल द्वारा मानवाधिकारों के प्रश्न पर प्रतिवर्ष एक विशेष प्रतिवेदन जारी करती है । प्रतिवर्ष जारी होने वाला यह वार्षिक प्रतिवेदन एक विशिष्ट किस्म की वार्षिकी है । इस प्रतिवेदन में पूरे वर्ष की अवधि में मानवाधिकारों के उल्लंघन तथा विश्व के प्रत्येक देश में मानवाधिकार की स्थिति पर विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाता है ।

Political Handbook and Atlas of The world, New York, Simon and Schuster, 1927.

साइमन एवं सुचस्टर द्वारा प्रारम्भ की गयी इस वार्षिकी का प्रकाशन प्रत्येक वर्ष साइमन और सुचस्टर पब्लिकेशन, न्यूयार्क द्वारा किया जाता है । इस प्रकाशन में विश्व के समस्त देशों के राजनैतिक मानचित्र एवं घटनाक्रम का विशिष्ट विवरण प्रस्तुत किया जाता है ।

विधि

Year Book of the International Law Commission, New York, United Nations, 1949.

संयुक्त राष्ट्रसंघ के अन्तर्राष्ट्रीय लॉ कमीशन द्वारा 1949 से

प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय विधि वार्षिकी का प्रकाशन किया जाता है । इस प्रकाशन में अन्तर्राष्ट्रीय कानून के बारे में विस्तृत विवरण दिया जाता है ।

भाषा और साहित्य

हिन्दी वार्षिकी, नई दिल्ली, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय 1971.

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा 1971 से हिन्दी वार्षिकी का प्रकाशन किया जाता है । इसमे हिन्दी के नये लेखकों तथा नये कृतियों पर एक विशेष विवरण प्रकाशित किया जाता है ।

इण्डिया टुडे साहित्य वार्षिकी, इण्डिया टुडे प्रकाशन नई दिल्ली।

इण्डिया टुडे भारत की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है । इसके द्वारा प्रतिवर्ष एक साहित्य वार्षिकी का प्रकाशन किया जाता है । इसमें पूरे वर्ष भर के साहित्य की दशा और दिशा पर विस्तृत विवरण प्रकाशित किया जाता है ।

पत्रकारिता

Press and Advertisers Year Book, New Delhi, INFA Publications.

इण्डियन न्यूज एण्ड फीचर एलायंस द्वारा इस वार्षिकी का प्रकाशन प्रत्येक वर्ष किया जाता है । इस प्रकाशन का प्रारम्भ एलाइंज द्वारा 1968-69 से किया गया है । इसमें प्रेस तथा विज्ञापन की प्रमुख प्रवृत्तियों पर विस्तारपूर्वक से प्रकाश डाला जाता है ।

विज्ञान एवं अभियांत्रिकी

Year Book of Science and Technology, New York, McGraw-Hill, 1976.

मेकग्रा-हिल्स प्रकाशन विश्व का एक लब्ध प्रतिष्ठित एवं विश्वसनीय प्रकाशन है । इस प्रकाशन द्वारा वर्ष 1976 से प्रतिवर्ष

विश्व में हो रहे विज्ञान और तकनीकी के विकास पर एक वार्षिकी का प्रकाशन किया जाता है ।

Indian Dairy Year Book. New Delhi, Indian Council of Agricultural Research.

वर्ष 1960 से भारतीय कृषि शोध परिषद द्वारा भारत में डेयरी विकास पर एक वार्षिकी का प्रकाशन किया जाता है । इस प्रकाशन में डेयरी में तकनीकी विकास तथा डेयरी उत्पादन की नई तकनीकों पर जानकारी प्रदान की जाती है ।

ग्रंथालय विज्ञान

Bowker Annual of Library and Book Trade Information. New York, R.R. Bowker 1956.

बाउकर सीरीज के तहत ग्रन्थालय एवं पुस्तक व्यापार के क्षेत्र से सम्बन्धित सूचना का वार्षिक प्रकाशन 1956 से लगातार किया जा रहा है । यह पुस्तकालयों तथा पुस्तक व्यापार के क्षेत्र में संलग्न लोगों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सूचनाप्रद प्रकाशन है ।

खेल

Wisdom Year Book, Lords, International Cricket Council.

अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद् द्वारा प्रतिवर्ष विज्डम क्रिकेट वार्षिकी का प्रकाशन किया जाता है । इसमें क्रिकेट से जुडे महत्वपूर्ण आँकड़े तथा सम्बन्धित खिलाड़ियों एवं अन्य लोगों का विवरण रहता है ।

Indian Cricket Field Annual, Mumbai, Taraporevala

भारतीय क्रिकेट की दशा और दिशा पर एक महत्वपूर्ण वार्षिकी तारापोरवाला द्वारा प्रकाशित की जाती है ।

पंचाग या जंत्री

वार्षिकी के सभी वर्गों में यह सबसे पुराना वर्ग है । इसमें

मानवीय व्यवहार के अनुसार एक निश्चित सिद्धान्त पर समय या काल को तिथि, वार, मास, वर्ष, शताब्दी, युग इत्यादि के रूप में विभाजित किया जाता है । इसी के साथ पूरे वर्ष में ग्रहों की गतिविधियाँ तथा मनुष्यों पर उसके प्रभावों का विवेचन इसमें रहता है । पंचाग में ये सभी बाते निहित रहती हैं । कुछ पंचाग जिन्हें अंग्रेजी में Almanac नाम से जाना जाता है, में केवल ग्रहों की स्थिति दी हुई रहती है । इस प्रकार के पंचाग में ग्रहों की स्थिति का विस्तृत विवेचन रहता है । आमतौर पर पंचाग को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है ।

1. अन्तर्राष्ट्रीय पंचाग–एलमेनेक,

2. राष्ट्रीय पंचांग

पंचागों या जंत्री के प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित है –

सिद्धायु कालदर्शक पंचाग, नीमच सिद्धायु वैद्यनाथ कालदर्शक प्रकाशन, नीमच ।

सिद्धायु वैद्यनाथ कालदर्शक प्रकाशन नीमच द्वारा प्रकाशित यह पंचाग भारत का एक लोकप्रिय पंचाग है ।

लाला रामस्वरूप का पंचाग, जबलपुर लाला रामस्वरूप एण्ड संस जबलपुर ।

लाला रामस्वरूप एण्ड संस द्वारा प्रकाशित यह पंचाग मध्य भारत का एक महत्वपूर्ण पंचाग है ।

राष्ट्रीय पंचाग, कलकत्ता, रीजनल मीटिरियोलॉजीकल सेंटर, नॉटिकल आलमेनक यूनिट, 1978.

राष्ट्रीय मीटिरियोलॉजीकल सेंटर, नॉटिकल आलमेनक यूनिट, द्वारा वर्ष 1978 से 12 भारतीय भाषाओं में राष्ट्रीय पंचाग जारी किया जाता है ।

अध्याय-६

वांगमय सूचियों की वांगमय सूची: अभिप्राय, उद्देश्य, क्रमिक विकास तथा प्रकार

अध्याय -६

वांगमय सूचियों की वांगमय सूचीः अभिप्राय, उद्देश्य, क्रमिक विकास तथा प्रकार

अभिलिखित ज्ञान के नियंत्रण हेतु विभिन्न प्रकार की ग्रन्थसूचियों का जन्म हुआ । निर्माणकर्ताओं की आवश्यकता एवं उद्देश्यों में अन्तर के कारण ग्रन्थसूची की प्रकृति में पर्याप्त भिन्नता दृष्टिगत होती है । अनेक ग्रन्थसूचियों का संकलन व्यावसायिक उद्देश्य के लिए किया जाता है जबकि अनेकानेक ग्रन्थूचियाँ ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु अथवा स्वान्तः सुखाय हेतु निर्मित की जाती है । एक आंकलन के अनुसार 9,600 प्रकार की ग्रन्थसूचियाँ हो सकती है । जबकि एक अन्य आंकलन के अनुसार ग्रंथसूचियों की विभिन्न तीन प्रकार की विशिष्टताओं के आधार पर 1,47,956 प्रकार की ग्रंथसूचियाँ हो सकती है । इसके अतिरिक्त भी कुछ अन्य ग्रंथसूचियाँ हो सकती हैं । इसके अतिरिक्त कुछ ग्रंथसूचियाँ स्वतंत्र रूप से भी प्रकाशित होती हैं तथा किसी ग्रंथ, पत्रिका तथा अन्य प्रलेखों के पृष्ठों में भी अंकित होती हैं ।

इस प्रकार विभिन्न प्रकार की ग्रंथसूचियों की बहुलता के कारण ग्रंथ सूचियों की सूची निर्मित करना आवश्यक हो जाता है। इसके द्वारा उपयोगकर्ताओं को यह निर्देश प्राप्त होता है कि उपलब्ध सहस्त्रों ग्रंथसूचियों में से कौन सी ग्रंथसूची उसके लिए अभिष्ठ है । ग्रंथसूचियों की सूची के द्वारा विशिष्ट विषय क्षेत्र से सम्बन्धित प्रकाशन के प्रारंभिक काल से लेकर अब तक की समस्त सामग्री उपलब्ध होती है । इस प्रकार की ग्रंथसूची मात्र महत्वपूर्ण ग्रंथसूचियों तथा

सर्वोत्कृष्ट संदर्भ कार्यो को ही अभिलिखित नहीं करती अपितु उनका विस्तृत तथा निश्चित मात्रा में वर्णन भी प्रस्तुत करती है ।

विभिन्न विषयों के क्षेत्र में विशाल एवं प्रचुर मात्रा में दिनों–दिन साहित्य के उत्पादन के कारण तथा उनके नियंत्रण के उद्देश्य की दृष्टि से अनेक प्रकार की वांगमय सूचियों का निर्माण किया गया है । जिन–जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जिन–जिन वांगमय सूचियों का संकलन एवं निर्माण किया गया है, वे अपने अपने ढंग से उन उद्देश्यों की पूर्ति कुछ सीमाओं के साथ करती है । परिणामतः वांगमय सूचियों के संख्यात्मक बाहुल्य के कारण वांगमय सूचियों की वांगमय सूची का अविर्भाव हुआ है । वांगमयसूचियों की वांगमयसूची एक आवश्यक आवश्यकता हो गई है क्योंकि प्रकाशित वांगमय सूचियों की संख्या इतनी अधिक हो गई है कि उनकी जानकारी तथा उनकी उपादेयता का अनुमान लगाना कठिन हो गया है ।

अतः इस वांगमय सूची में वांगमय सूचियों की तालिका प्रस्तुत की जाती है जिनसे अध्येताओं को उपयोगी वांगमय सूचियों की जानकारी विषयानुसार, स्थानानुसार तथा व्यक्तिगत वांगमय सूचियों के माध्यम से दी जा सके । जिन वांगमय सूचियों को सन्दर्भ एवं संकेत इनके माध्यम से किया जाता है, वे किसी पृथक प्रकाशित कृति के रूप में हो सकती है, अथवा किसी पुस्तक के एक अंश के रूप में हो सकती है, अथवा किसी सामयिकी में प्रकाशित आलेख के एक भाग के रूप में अथवा किसी अन्य प्रलेख के रूप में हो सकती हैं ।

किसी एक निश्चित वांगमय सूची को ज्ञात हो जाने के बाद उसमें तालिकाबद्ध कृतियों की जानकारी प्राप्त करना सरल हो जाता है ।

सन् 1686 में जेनेवा में प्रकाशित अन्तोनी तेस्सीआर की "कैटालॉग्स" प्रथम ग्रंथ सूचियों की सूची के रूप में मान्य है इसका

पूरक खण्ड 1705 में प्रकाशित हुआ । यद्यपि तेस्सी आर की सूची में निहित सभी सूची–संलेख ग्रंथसूचियों से सम्बन्धित नहीं थे । परन्तु फिर भी यह इसप्रकार का प्रथम प्रयास था जो तत्कालीन आवश्यकता को प्रकट करता है । इसके अतिरिक्त कुछ समय पश्चात कई महत्वपूर्ण संकलन किये गये ।

1. **बिब्लियोथेका बिब्लियोग्राफी :**

यह जुलियस पेत्साहाल्ट द्वारा संकलित की गयी, जिसका प्रकाशन 1866 में लाइपजिंग में हुआ । इस सूची में 5500 संलेख थे, जो पूर्ण रूप से ग्रंथ सूचियों से सम्बन्धित नहीं कहे जा सकते । इस सूची में ग्रंथ विक्रेताओं तथा बिक्री हेतु तैयार की गयी अन्य ग्रंथसूचियों का समावेश किया गया था । इसका व्यवस्थापन वर्णानुक्रम में है, तथा लेखक एवं अज्ञात लेखक की आख्या अनुक्रमणिका भी दी गई है । इस सूची का पुर्नमुद्रण वर्ष 1961 में किया गया ।

2. **बिब्लियोग्राफी डेस बिब्लियोंग्राफीजः**

इस ग्रंथसूची का प्रकाशन 1883 में लियोन वाली द्वारा किया गया, जिसका बाद में पूरक खण्ड प्रकाशित हुआ । दोनों खण्डों में 10,000 संलेखों को अंकित किया गया है । इसका व्यवस्थापन लेखकों के अनुवर्णक्रमानुसार था । सूची के मुख्य भाग के पश्चात विषय अनुक्रमणिका है ।

3. **मैन्युअल डी बिब्लियोग्राफीः**

इसका प्रकाशन वर्ष 1897 में हेनरी स्टाइन द्वारा किया गया । जिसमें 5500 संलेख अंकित है । इनका व्यवस्थापना अनुवर्ण क्रम में है । प्राचीन सामग्री हेतु यह बहुत उपयोगी कृति है । इसमें विश्व के प्रमुख ग्रंथालयों की सूचियों की तालिका दी गयी है । विषय–परक ग्रंथसूची के दृष्टि से भी यह एक महत्वपूर्ण ग्रंथसूची है ।

अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथसूचियों की सूची वर्ल्ड बिब्लियोग्राफी ऑफ बिब्लियोंग्राफीज ।

थियोडोर बेस्टमैन द्वारा संकलित इस ग्रंथसूची का प्रकाशन सर्वप्रथम सन् 1939-40 में हुआ । पॉच भागों में विभक्त इसके चौथे संस्करण का प्रकाशन सन् 1965-67 में हुआ था । यह ग्रंथसूची अब तक की प्रकाशित सभी ग्रंथसूचियों की सूची में सर्वश्रेष्ठ तथा क्लासिक है ।

इसमें पन्द्रहवी शताब्दी से लेकर सन् 1963 तक की अवधि में स्वतंत्र रूप से प्रकाशित 1,17,187 ग्रंथसूचियाँ उल्लिखित हैं । जो 50 भाषाओं से सम्बन्धित हैं । वस्तुतः इसका विषय क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय है ।

संलेखों का व्यवस्थापन 15,000 शीर्षकों एवं उपशीर्षकों में किया गया है । उपयोगकर्ता के विभिन्न अभिगमों की पूर्ति हेतु अनुक्रमणिका खण्ड दी गई है ।

संदर्भ स्रोतों के क्षेत्र में यह बहुत व्यापक है । विभिन्न देशों एवं विभिन्न कालों में प्रकाशित विशेषकर प्राचीन ग्रंथसूचियों के लिए यह अत्यन्त उपयोगी है । मध्यम तथा वृहद् ग्रंथालयों के लिए यह एक अत्यन्त उपयोगी उपकरण है ।

Bibliographical Services through out the World:

ग्रंथसूची की इस सूची के तीन खण्ड सन् 1961-72 की अवधि में यूनेस्कों द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें सन् 1950-59, 1960-64 तथा सन् 1965-69 की अवधि में हुई । वांगमयी सेवाओं का उल्लेख किया गया है प्रविष्टियों का व्यवस्थापन देशों के अनुसार प्रकाशित है । पूर्वव्यापी ग्रंथसूचियों के सम्बन्ध में यह एक उपयोगी प्रकाशन है ।

Register of National Bibliography:

डब्ल्यू.पी. कोर्ट के द्वारा संकलित यह सूची सन् 1905 में प्रकाशित हुई थी जिसका पूरक खण्ड सन् 1912 में प्रकाशित हुआ । स्वतंत्र रूप से प्रकाशित ग्रंथसूचियों के अतिरिक्त इसमें ग्रंथों तथा पत्रिकाओं में निहित ग्रंथसूचियों को भी सम्मिलित किया गया है । संलेखों का व्यवस्थापन विषयों के अनुवर्णक्रमानुसार है ।

संदर्भ हेतु यह एक उत्कृष्ट रचना है यद्यपि अंग्रेजी भाषा की सामग्री को अधिक प्रमुखता दी गई है परन्तु इसका विषय क्षेत्र विस्तृत तथा अन्तर्राष्ट्रीय है ।

Bibliographies, Subject and National:

इसका प्रकाशन सन् 1959 में आर0एल0 कालसिन अन्तर्राष्ट्रीय प्रलेखन फेडरेशन द्वारा किया गया । इसमें वांगमयी तथा सार सेवाओं की सूची प्रस्तुत की गयी है जिनका व्यवस्थापन यूनिवर्सल डेसीमल वर्गीकरण द्वारा विषयानुसार किया गया है । यह एक अन्तर्राष्ट्रीय सेवा है । प्रथम खण्ड में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित सामयिक प्रकाशनों की ग्रंथसूचियाँ सम्मिलित है । दूसरे खण्ड में सामाजिक विज्ञान, शिक्षण तथा मानविकी से सम्बन्धित ग्रंथसूची सम्मिलित की गई है । पूर्वव्यापी ग्रंथसूची के लिए यह एक उपयोगी कृति है ।

Bibliography, Documentation, Terminology, Paris: UNESCO, 1962, Biomonthly.

यह एक सामयिक सूची है । जिसका प्रकाशन यूनेस्कों द्वारा 1962 में द्विमासिक रूप से किया जाता है । यह अंग्रेजी, फ्रांसीसी, स्पेनिश तथा अन्य सभी भाषा में प्रकाशित होती है । ग्रंथसूची तथा प्रलेखन के संबंध में विभिन्न राष्ट्रीय कार्यकलापों तथा वांगमयी सेवाओं सम्बन्धी सूचनाओं का समावेश इसमें किया जाता है ।

1979 से इसे तथा ''यूनिशिष्ट न्यूज लेटर'' को एक साथ सम्मिलित कर एक नवीन आख्या "General Information programme - Unisist Bulletin" के अन्तर्गत प्रकाशन किया जा रहा है ।

विशिष्ट विषयों पर ग्रंथसूचियों की सूची

विशिष्ट विषयों पर भी ग्रंथसूचियों के सूची के संकलन के प्रयास किये गए हैं । जिनमें से निम्नांकित उल्लेखनीय है –

1. बारो, लेसी,ए बिब्लियोग्राफी इन रिलीजन, एन अर्वर, मिचिगन एडवर्ड ब्रास, 1955.

2. आडिट, सी.एम.: बिब्लियोंग्राफी ऑफ बिब्लियोग्राफीज ऑन सायकोलॉजी वाशिंगटन नेशनल रिसर्च कौन्सिल, 1928.

संदर्भ ग्रन्थों की सूचियाँ:

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संदर्भ ग्रंथों की सूचियों में भी ग्रंथसूचियों से सम्बन्धित सूचनाएँ उपलब्ध है । निम्नांकित सूचियाँ इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय हैं –

1. विनचेल,सी.एम.: गाइड टू रिफरेन्स बुक्स, आठवाँ संस्करण, शिकागो, अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसियेशन, 1967
2. वेलफोर्ड, गाइड टू रिफरेन्स मैटेरियल संस्करण 2–खण्ड 3 लन्दन, लाइब्रेरी एसोसियेशन, 1966–68
3. मेल क्लस लुइस, नावेलः लेस सोर्सेज, द ट्रेबिल बिब्लियोग्राफिक जेनेवा ड्रेज, 1950–58

<u>भारतीय ग्रंथूचियों की सूचीः</u>

भारत में अनेक ग्रंथसूचियाँ संकलित की गई है, जिनकी सूची डी.आर. कालिया तथा एम.के. जैन द्वारा संकलित बिब्लियोग्राफी, ऑफ बिब्लियोग्राफीज ऑन इण्डियन में उपलब्ध है। इसका प्रकाशन कंसेप्ट प्रकाशन दिल्ली द्वारा सन् 1975 में हुआ था । इस सूची में भारत से सम्बन्धित 1243 ग्रंथसूचियों, ग्रंथालय सूचियों, प्रलेख सूचियों आदि

की सूचनाएँ निहित है । लेखक तथा विषय अनुक्रमणिकाएँ भी दी गई हैं ।

इसके अतिरिक्त भारत में संदर्भ ग्रंन्थों की सूचियॉं भी संकलित की गयी है । जिसमें ग्रंथसूचियों की सूचनाएँ उपलब्ध है । कतिपय महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूचियॉं इस प्रकार है :

गिडवानी, एन.एन. एवं नावलीन द्वारा सम्पादितः गाइड टू रिफरेन्स मटीरियल ऑन इण्डिया जयपुर, सरस्वती पब्लिकेशन, 1974, 2 खण्ड सेनगुप्ता, बीः इण्डियानाः ए सेलेक्टेड लिस्ट ऑफ रिफरेंस एण्ड रिप्रेजेन्टेटिव बुक्स ऑन ऑल आसपेक्ट्स ऑफ इण्डियन लाइफ एण्ड कल्चर, कलकत्ता, वर्ड प्रेस, 1966:

इस प्रकार ग्रंथसूचियों का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है भारत में भी इस पर विशेष ध्यान दिया गया है ।

वांगमय सूचियों की वांगमय सूची के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं –

1. सामयिक वांगमय सूचियों की वांगमय सूची,
2. पूर्वव्यापी वांगमय सूचियों की वांगमय सूची,
3. संदर्भ कृतियों की मार्ग दर्शिकाएं ।

इनका विवरण निम्नलिखत है –

<u>सामायिक वांगमय सूचियों की वांगमय सूची</u>

Bibliographic Index: A Cumulative Bibliography of Bibliographies, 1937, N.Y.: H.W. Wilson Company, to date

यह सामयिक वांगमय सूचियों की विषय तालिका है जो वर्ष में तीन बार–अप्रैल, अगस्त औरदिसम्बर में प्रकाशित होती है । अंग्रेजी तथा विदेशी भाषाओं में प्रकाशित वांगमय सूचियॉं जो पचास अथवा इससे अधिक वांगमयात्मक उद्धरण की होती है, उन्ही को ही तालिकाबद्ध किया जाता है । पृथक कृतियों के रूप में प्रकाशित

वांगमय सूचियों, पुस्तिक़ाओं के रूप में प्रकाशित अथवा किसी पुस्तक अथवा किसी पत्रिका के आलेख के भाग के रूप में प्रकाशित वांगमय सूचियों को इसमें सम्मिलित किया जाता है ।

वांगमयात्मक सामग्रियों के संकलन हेतु 2600 विभिन्न भाषाओं की पत्रिकाओं में प्रकाशित वांगमय सूचियों को तालिकाबद्ध किया जाता है और किसी में 50 से अधिक वांगमयात्मक उद्धरण को भी सम्मिलित किया जाता है । नवीन संस्करणों तथा परिशिष्टों का भी उल्लेख किया जाता है । यह ''बिब्लियोग्राफिक इन्डेक्स'' वस्तुतः वांगमय सूचियों की एक प्रमुख वांगमय सूची है जिसके अन्तर्गत अनेक शीर्षकों के अनुसार किसी विषय, व्यक्ति, स्थान विशेष की वांगमयसूचियों का अवलोकन किया जा सकता है । इसमें वांगमय सूचियों के तालिकाकरण की आंकलन पद्धति अनुवर्णिक है और एक वर्ष तक की वांगमय सूचियों को सम्मिलित किया जाता है ।

विशेषज्ञों के लिए यह एक सामान्य वांगमय सूचियों का कार्य करती है और सामान्य अध्येताओं को वांच्छित सूचना मिल जाती है । एक बार इससे किसी वांगमय सूची का विवरण प्राप्त हो गया तो पुनः उस वांगमय सूची को ढूँढ्ना पड़ता है । इसके पश्चात उन पुस्तकों तथा आलेखों को ढूँढ्ना पड़ता है जिनमें तालिकाकृत वांगमय सूचियों का उल्लेख होता है । अतः अनेक प्रयासों के कारण अध्येता झुंझला जाता है । तथापि अपने ढंग की यह एक आम प्रकार की वांगमय सूचियों की वांगमय सूची है ।

<u>पूर्वव्यापी वांगमयसूचियों की वांगमय सूचियाँः</u>

A world Bibliography of Bibliographics and Bibliographical Catalogues, calendars, abstracts, digests, Indexes and the like / by Theodore bester man 4th ed.-Geneva : Societas. bibliographica, 1965-67, 5 vol.

लगभग 50 भाषाओं के इस संस्करण में 1,17,181 पूर्णतः तुलनाकृत एवं सत्यापित वांगमय सूची के खण्डों को आलेखबद्ध किया गया है । सभी विषयों की कृतियों, पाण्डुलिपियों एवं पेटेन्टों को इसमें तालिकाबद्ध किया गया है । इस कृति में उल्लेख की गई वांगमय सूचियाँ 15वीं सदी से लेकर सन् 1963ई. तक की अवधि की है । अतः इसका क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का है । संलेखों को 16,000 शीर्षकों तथा उपशीर्षकों के अनुसार अनुवर्णिक क्रमानुसार आंकलित किया गया है । प्रति-निर्देश प्रविष्टियों को पर्याप्त मात्रा में दिया गया है । अनुक्रमणिका के खण्ड में लेखकों के नामों, सम्पादकों, अनुवादकों सामयिकियों की आख्याओं, नाम रहित कृतियों, ग्रंथालयों तथा पुरातत्व संग्रहालयों के नामों एवं पेटेन्टों के अनुसार उपागम प्रस्तुत किए गए हैं । अनुक्रमणिक में वांगमय सूचियों को सम्मिलित नहीं किया गया है । जो उन्हीं शीर्षकों के अन्तर्गत आती है ।

संलेखों की सूचना अत्यन्त उपयुक्त है । लेकिन व्याख्या नहीं दी गई है । वेस्टरमैन की यह वांगमय सूचियों की वांगमय सूची एक उत्तम एवं श्रेष्ठ कृति मानी जाती है । ग्रंथालयों सूचना अधिगम के साधन के रूप में यह एक उपयोगी संदर्भ कृति है । इस संस्करण में अनेक मालाओं के खण्डों का पृथक-पृथक अनुसरण किया गया है जिसे "Besterman World Bibliography Series" के नाम से जाना जाता है । इन खण्डों को विषय संलेखों के अनुसार समूहीकृत किया गया है ।

Bibliographies, subject and national/Robert L. collison 3rd ed. London: crosby and Lockwood, 1968.

इस कृति में व्याख्या सहित विश्व की सर्वोत्तम वांगमय सूचियों एवं प्रसूचियों का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है ।

Bibliographical Services throughout the World, 1950-59, 1960-64, 1965-69, 1970-74, 1975-79, Suppliment, 1980, Paris: UNESCO, 1961-77, 4 Vol.

यह कृति पूर्ण व्यापी वांगमय सूचियों की दृष्टि से उपयोगी है । विश्व की सम्पूर्ण वांगमयात्मक सेवाओं का उल्लेख इन खण्डों में विभिन्न देशों के कमबद्ध विवरण के साथ किया गया है।

Bibliotheca Bibliographica/Julius Petzhldt-Leipzig: Engelmann 1886:

यह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की उत्तम प्रकार की कृति है जिसमें प्राचीन सामग्रियों को व्याख्या सहित तालिकाकृत किया गया है ।

Index Bibliographicus, –4th ed.– the Hague: FID, 1959 to date.

यूनिवर्सल डेसिमल क्लासीफिकेशन के अनुसार आंकलित विश्व की सभी सारांशकरण एवं वांगमयात्मक सेवाओं का उल्लेख इसमें किया गया है इसका क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय है और विषयानुसार आंकलन पद्धति अपनायी गयी है । संलेखों में आख्या, प्रकाशक, पते, प्रथम प्रकाशन का वर्ष, समयावधि, विस्तार– सारांशों एवं सभी सीमाओं की संख्या, अनुक्रमणिकाएँ तथा व्याख्या का विस्तार आदि का उल्लेख किया गया है यह एक महत्वपूर्ण पूर्वव्यापी वांगमयसूची है ।

A Register of National Bibliography; with a selection of the chief Bibliographical Books and Articles Printed in other Countries by william Prideaux courtney. - London: constable, 1905-12, 3 Vol.

इसमें अंग्रेजी में प्रकाशित राष्ट्रीय वांगमय सूची के उत्तम प्रकार की सामग्रियों का उल्लेख किया गया है और इसका क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय है, इसमें पुस्तकों पत्रिकाओं में प्रकाशित वांगमय सूचियों तथा स्वतंत्र रूप से प्रकाशित वांगमय सूचियों को तालिकाबद्ध किया गया है । विषयानुसार अनुवर्णिककम में संलेखों को आँकलित किया गया है।

संदर्भ कृतियों की मार्गदशिकाएँ:

वांगमयसूचियों के रूप में पर्याप्त सामग्रियों का प्रकाशन होता रहता है । इनकी संख्या इतनी अधिक हो गई है कि किसी शोधकर्ता एवं अध्येता के लिए उनमें से कौन उपयोगी है इसका चुनाव करना कठिन हो गयाहै । अतः संदर्भ कृतियों की मार्गदर्शिकाएँ अधिक सहायक सिद्ध होती है । वांगमयात्मक निर्देशिकाओं का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है –

1. सभी क्षेत्रों की अनुसंधान में सहायक सिद्ध होने वाली सामान्य संदर्भ स्रोतों एवं कृतियाँ,

2. किसी विशिष्ट क्षेत्र के शोधकार्य में सहायक सिद्ध होने वाली विशिष्ट संदर्भ स्रोतों एवं कृतियों से सुपरिचित एवं अवगत करना होता है । संदर्भ कृतियों की मार्गदर्शिकाएँ प्रमुख रूप से निम्नलिखित स्वरूप की होती है –

1. प्रत्येक अध्याय के पूर्ण संक्षिप्त परिचयात्मक टिप्पणी सहित आख्याओं की व्याख्यात्मक तालिकाएँ,
2. मूल स्रोतों को व्याख्या एवं तालिकाएँ प्रस्तुत करने वाली वे कृतियाँ जो पाठकों को अनुसंधानात्मक अध्ययन के उपकरणों से परिचय कराने वाली होती है।

इन संदर्भ कृतियों की मार्गदर्शिकाओं को वांगमयसूचियों की वांगमय सूची की संज्ञा दी जाती है और इस प्रकार यह एक निश्चित श्रेणी के साहित्य की द्योतक होती है । इनमें वांगमय सूचियाँ, अनुक्रमणिकाएँ एवं सारांशकरण संवाओं को भी सम्मिलित किया जाता है ।

संदर्भ कृतियों की वांगमय सूचियों में निम्नलिखित कृतियाँ महत्वपूर्ण मानी जाती हैं –

Bibliography of Bibiographies on India/ by D.R. Kalia and M.K. Jain Delhi; Concept Publishing Co., 1975.

यह 1243 वांगमय सूचियाँ, ग्रन्थालयों की प्रसूचियों, प्रलेख तालिकाओं, सारांशों, शोध प्रबन्धों, धारावाहिक प्रकाशनों की सूचियाँ आदि की एक अनुवार्षिक तालिका है, जो भारतीय सामग्रियों से सम्बन्धित है । अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं की कृतियों को इसमें सम्मिलित किया गया है । पाण्डुलिपियों की सूचियों को भी इसमें सम्मिलित किया गया है । लेखक एवं विषय अनुक्रमणिका अन्त में दी गई है ।

Guide to Reference Materials on India compiled and edited by N.N. Gidwani and K. Navalani Jaipur: Saraswati Publications, 1974, 2 Vols.

यह एक विस्तृत संदर्भमूलक कृति है । जिसमें वांगमय सूचियों एवं संदर्भ सामग्रियों का उल्लेख किया गया है जो मुद्रित तथा ''मिमियोग्राफ'' की गई है । इसमें सभी भारतीय भाषाओं की संदर्भ कृतियों को सम्मिलित किया गया है ।

Indian: A Select list of Reference and Representative Books on all aspects of Indian Life and Culture by B.Sengupta - Calcutta World Press, 1966.

यह एक उपयोगी कृति है जो चयनात्मक है और पूर्ण ग्रन्थात्मक विवरण व्याख्या सहित प्रस्तुत करती है ।

अध्याय–७

साहित्य दर्शिकाएं : अभिप्राय, विकास एवं उपयोगिता

अध्याय -७

साहित्य दर्शिकाएं : अभिप्राय, विकास एवं उपयोगिता

किसी विषय विशेष के साहित्य का उपयोग करने में सहायता एवं मार्गदर्शन करने के लिए जिन मार्गदर्शिकाओं का प्रकाशन किया जाता है, उसे साहित्य दर्शिकाए कहतें हैं । इन साहित्य दर्शिकाओं का प्रमुख कार्य विषय का मूल्यांकन एवं प्राथमिक स्थिति से लेकर उसके प्रौढ़ स्थिति तक का परिचय उपलब्ध कराना होता है । वास्तव में साहित्य दर्शिकाएं एक विशिष्ट प्रकार की अनुक्रमणिका होती है । जो अध्येता के लिए विषय को खोजने हेतु एक सुविधाजनक व उपयोगी मार्गदर्शक का कार्य करती है ।

वास्तव में साहित्य दर्शिकाओं के अन्तर्गत द्वितीयक और तृतीय स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं का संकलन किया जाता है । इन सूचनाओं में किसी विशेष विषयवस्तु के अतिरिक्त उसके साहित्य पर अधिक महत्व दिया जाता है । साथ ही किसी विषय के क्रमिक विकास में सहायक ग्रन्थात्मक उपकरणों, संस्थाओं एवं मौलिक विषय साहित्य का उपयुक्त विवरण इत्यादि भी प्रस्तुत करती है ।

विद्वानों के अनुसार साहित्य दर्शिकाएं निम्नलिखित कार्यों में अध्येताओं, विषय विशेषज्ञों अथवा सूचना चाहने वाले को मदद प्रदान करती है :-

1. किसी वस्तु, प्रलेख, प्रकरण, विषय तथा संदर्भ की जानकारी प्रदान करने में सहायता करना तथा खोज की प्रक्रिया को त्वरित एवं सरल बनाना,
2. किसी विषय क्षेत्र को विस्तृत स्थिति की जानकारी प्रदान करना,
3. नामकरणों की जानकारी प्रदान करना एवं निर्देशन करना,
4. सूचना पुर्नप्राप्ति के एक उपकरण एवं प्रक्रिया के रूप में सहायता प्रदान करना,
5. सूक्ष्म प्रलेखों की वांगमय सूची के रूप में विषयानुसार एवं सामान्य रूप से सामयिक जानकारी प्रदान करना,
6. किसी प्रलेख या पुस्तक को तैयार करते समय एक ही अनुक्रम में तथ्यों की यथासम्भव पूर्ति करना,
7. सूचना आवश्यकता की पूर्ति में वैज्ञानिकों, विद्वानों, विशेषज्ञों, अनुसन्धित्सुओं तथा अभियांत्रिकीविद इत्यादि को सहायता करना,
8. सामयिक चेतना सेवा तथा चयनात्मक सूचना सेवा के आयोजन में सहायता प्रदान करना और एक उपकरण के रूप में कार्य करना,
9. प्रलेख एवं पुस्तक में निहित सूचना के मध्य सम्बन्धों को व्यक्त करना,
10. किसी प्रलेख, संदर्भ, प्रश्न की जानकारी प्राप्त करने और उनकी खोज करने में सहायता प्रदान करना ।

उपरोक्त महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पादित करने वाली साहित्य दर्शिकाओं का विकास मूलतः अनुक्रमणिका तथा वांगमयसूचियों के विकास के साथ-साथ हुआ । साहित्य दर्शिकाओं के आधुनिक स्वरूप का प्रथम रूप सातवीं तथा आठवीं शताब्दी में तैयार की गयी बाइबिल की शब्द सूची थी । जिसका निर्माण Biblical Concordance के नाम से किया गया था । वास्तव में यह एक अनुक्रमणिका थी । यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि लगभग 17वीं शताब्दी तक अनुक्रमणिका का जिस रूप में प्रयोग किया जाता था वह वास्तव में साहित्य दर्शिकाओं का ही था । Index शब्द जो कि अनुक्रमणिका शब्द का अंग्रेजी रूपान्तरण है का सर्वप्रथम उपयोग रोमवासियों ने किया था । रोमन भाषा में Index शब्द का अभिप्राय किसी वस्तु अथवा सिद्धान्त के खोज तथा आविष्कार प्रगट करने वाले और सूचना देने वाले से था ।

इस प्रकार 17वीं शताब्दी तक सारणी विषय सूची तथा साहित्यिक दर्शिकाओं के रूप में होता था । इस प्रकार यह तथ्य स्पष्ट है कि साहित्य दर्शिकाओं का प्रारंभिक उद्‌भव अनुक्रमणिकाओं के साथ हुआ । किन्तु ज्ञान जगत के निरन्तर गतिशील और बहुआयामी विस्तार के साथ-साथ संदर्भ कृतियों का अभिमत अत्यन्त कठिन होता गया । इस कठिनतम अभिगम को सरल एवं सहज बनाने के उद्देश्य से अधिकतम द्वितीयक स्रोतों का उद्‌भव और विकास हुआ इनमें वांगमय सूची, प्रसूचीकरण, सारांशीकरण जैसी प्रमुख सेवाएँ थी ।

उपरोक्त सभी द्वितीयक स्रोतों से विशिष्ट साहित्य की जानकारी लेना भी अत्यन्त मुश्किल कार्य था । इसी कारण इन द्वितीयक सेवाओं से विषय विशेष के साहित्य को ज्ञात करने के

लिए कुछ मार्गदर्शक सेवाओं का विकास हुआ । इन सभी सेवाओं के विकास के परिणाम स्वरूप साहित्य दर्शिकाओं का वर्तमान स्वरूप उत्पन्न हुआ ।

इस प्रकार साहित्य दर्शिकाओं की संरचना में अनेक मार्गदर्शक सेवाओं का उपयोग मार्गदर्शक उपकरणों के रूप में किया जाता है । ये मार्गदर्शक उपकरण निम्नलिखित हैं :-

(1) संदर्भ स्रोत मार्गदर्शिका - संदर्भ स्रोतों को ज्ञात करने के लिए तैयार की जाने वाली मार्गदर्शिका साहित्य दर्शिकाओं का प्रमुख उपकरण है । इस के अन्तर्गत वांगमय सूचियों की मार्गदशिकाओं को शामिल किया जाता है । वास्तव में संदर्भ स्रोत की मार्गदर्शिका किसी सामान्य अथवा विशिष्ट विषय की वांगमय सूची की मार्गदर्शिका के रूप में भी प्रयुक्त होती है । इनके प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं -

Harvard Guide to American History /France Freidal - Rev. ed.- Cambridge : Harvard University Press, 1974. 2 vols.

Information Sources of Political Science of Political Science / Frederic Holler - Santa Barbar, California: ABC - Clio, 1975. 5 Vols.

Guide to Reference Materials on India Compiled and Edited by N.N. Gidwani and K. Navalani - Jaipur : Saraswati Publications, 1974, 2 Vols.

Guide to the World's Abstracting and Indexing Services in Science and Technology- Washington: National Fedration of Science Abstracting and Indexing Services, 1963

Bibliographic Index: A Cumulative Bibliography of Bibliographies - New York : H.W. Wilson Company, 1973 to date.

(2) ग्रन्थालयों की प्रसूची – किसी ग्रन्थालय अथवा अनेक ग्रन्थालयों की प्रसूची जिनका निर्माण सरलता से सूचनाओं एवं इच्छित पुस्तकों को प्राप्त करने हेतु किया जाता है। ये प्रसूचियाँ भी साहित्य दर्शिकाओं का कार्य करती हैं ।

(3) अनुक्रमणिकाएँ एवं सारांश सेवाओं का मूलतः द्वितीय स्रोतों की सेवाऐं माना जाता है । किन्तु संदर्भ के लिए एवं साहित्य को खोजने के लिए ये महत्वपूर्ण साहित्य दर्शिकाओं का कार्य करती है । वास्तव में समाचार पत्रों, पत्रिकाओं तथा अन्य संदर्भ ग्रन्थों की अनुक्रमणिकाओं का प्रयोग मूलतः साहित्य दर्शिकाओं के रूप में ही होता है । इन्हें निम्न उदाहरण के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है –

Index to the Times of India- Bombay, 1973 - Bombay Micro films and Index Service, Reference Department, Times of India, 1974 - Three times a year.

Index to Legal Periodicals - New York: H.W. Wilson Company, 1908 to date monthly.

Science Citation Index (SCI) - Philadelphia: Institute for Scientific Information, 1963 - Quarterly, Cumulated Annually and Quinguennially.

इसी तरह सारांशकरण सेवाओं द्वारा भी साहित्य के क्षेत्र में हो रहे तीव्र नवीनतम एवं बहुआयामी अनुसंधानों की सूचना अध्येताओं तक पहुँचाने का कार्य किया जाता है । वास्तविक रूप में सारांशकरण सेवाऐं अनुक्रमणिकाओं का ही विस्तृत रूप है । इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो सारांशकरण सेवा भी साहित्य दर्शिकाओं का ही एक स्वरूप परिलक्षित होता है । क्योंकि इनके

द्वारा साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों अथवा विषय विशिष्ट में हो रहे ज्ञान के विकास का संकेत एवं सूचना प्राप्त होती है । इनके प्रमुख उदाहरण निम्न हैं –

Bulletin Signaletique & Paris : Centre Nationale de la Recherche Scientifique, 1940, Frequency varies (Formerly Published as Bulletin analytique).

Library and Information Science Abstract - London: Library Association, 1950 - Bimonthly.

Economic Abstracts - The Hauge: Martinus Nijhoff 1953 - Semimonthly.

Abstracts of Working Paper in Economics - Cambridge : Cambridge University Press, 1986 - Quarterly.

Psychological Abstracts- 1927-, Washington, American Psychological Association, 1927, Monthly.

Biological Abstracts - Philadelphia: Biosciences Information Service (BIOSIS), 1926 Semi-monthly.

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि साहित्य दर्शिकाओं का विकास एक लम्बे समय से सूचना की आवश्यकता एवं आवश्यकताओं के स्तर के अनुरूप होता रहा है । इस विकास प्रक्रिया में विलियम फेड्रीक पूल, विल्सन, हेन्स पीटर सूक्ष्म, जॉर्शॉन विलिग्स, चार्ल्स एमीनी कटर तथा डॉ. एस.आर. रंगनाथन का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है ।

इन सभी विद्वानों द्वारा साहित्य दर्शिकाओं के विकास में दिये गए योगदानों का ही यह परिणाम था कि साहित्य दर्शिकाओं का प्रयोग अत्यन्त विस्तृत रूप में किया जाने लगा है ।

साहित्यिक दर्शिकाओं की आवश्यकताओं को आमतौर पर ज्ञान के हर क्षेत्र के पिपासुओं के द्वारा महसूस किया जाता रहा है । प्रस्तुत अध्ययन में सूचना उपयोगकर्ताओं को विभिन्न विषयों तथा उनके व्यवसायिक संरचना के अनुसार विभक्त किया गया है । साहित्यिक दर्शिकाओं की उपयोगिता को ज्ञात करने के उद्देश्य से प्रस्तुत अध्ययन के दौरान एक सर्वेक्षण का आयोजन किया गया । इस सर्वेक्षण में साहित्य दर्शिकाओं को उनके स्वरूप के अनुसार शोध छात्र तथा कार्यरत विशेषज्ञों का साक्षात्कार लिया गया । इस सर्वेक्षण के दौरान जिन व्यक्तियों का साक्षात्कार लिया गया उनसे निम्नलिखित प्रश्न पूछे गये ।

1. नाम
2. पता
3. शैक्षणिक योग्यता
4. व्यवसाय
5. क्या आप अपने तथा अपने अध्ययन के दौरान साहित्य निर्देशिकाओं का प्रयोग करते हैं ?
6. आपके सूचना प्राप्त करने की प्रक्रिया के दौरान साहित्य दर्शिकाओं की क्या उपयोगिता है ?

उपरोक्त प्रश्नों में अन्तिम दो प्रश्न मूलतः सर्वेक्षण के उद्देश्य को पूरा करने का कार्य करते हैं जबकि शेष प्रथम चार प्रश्न मूलतः सर्वेक्षित लोगों से सम्बन्धित सूचनात्मक प्रश्न थे । इन प्रश्नों का सम्बन्ध मुख्यतः यह पता करने के लिए था कि साहित्यिक दर्शिकाओं का उपयोग करने वाले व्यक्तियों का प्रकार क्या है ?

उपरोक्त सर्वेक्षण में सर्वेक्षित सूचना प्राप्तकर्ताओं का वर्गीकरण निम्नलिखित तालिका 7.1 में प्रदर्शित किया गया है ।

तालिका 7.1

साहित्य दर्शिकाओं के सर्वेक्षित उपयोगकर्ता

क.सं	विभिन्न संकायों के उपयोगकर्ता	उपयोगकर्ताओं का स्तर एवं संख्या		
		शोध छात्र	व्यवसायिक शोधकर्ता	योग
1.	मानविकी	3	7	10
2.	समाज विज्ञान	4	6	10
3.	विज्ञान	4	6	10
4.	अभियांत्रिकी	3	7	10
5.	आयुर्विज्ञान	4	6	10
	योग	18	32	50

(मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय के शोध छात्रों एवं विषय विशेषज्ञों को तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से सर्वेक्षण में सम्मिलित किया गया है)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण के दौरान पाँच विभिन्न संकाय के शोधकर्ताओं को सर्वेक्षण में शामिल किया गया है । इन शोधकर्ताओं को दो भागों में विभाजित किया गया है । ये भाग हैं –

1. **शोध छात्र** – इनके अन्तर्गत उन छात्रों को शामिल किया गया है जो स्नातकोत्तर उपाधि के पश्चात शोध उपाधि प्राप्त करने हेतु शोधरत है ।

2. **व्यवसायिक शोधकर्ता** – व्यवसायिक शोधकर्ता वर्ग मुख्यतः निम्न संस्थाओं में कार्यरत है –

1. शोध संगठनों,
2. महाविद्यालय,

3. विश्वविद्यालय,

4. गैर सरकारी संगठनों,

5. औद्योगिक संगठनों

पांच विभिन्न निकायों में कार्यरत उपरोक्त दोनों तरह के शोधकर्ता ज्ञान के क्षेत्र में नये–नये शोध करते रहते हैं । ये शोधकर्ता ही मूलतः साहित्य दर्शिकाओं के प्रमुख उपयोगकर्ता होते है ।

सर्वेक्षण का उद्देश्य साहित्य दर्शिकाओं की उपयोगिता का पता लगाना था । इस उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु उपरोक्त प्रश्नों में अन्तिम दो प्रश्न पूछे गए हैं । इन दोनों प्रश्नों में प्रथम प्रश्न शोधकर्ताओं द्वारा साहित्य दर्शिकाओं का प्रयोग करते हैं या नहीं, इस तथ्य से सम्बन्धित था । इस प्रश्न के उत्तर में प्राप्त तथ्यों को तालिका 7.2 में प्रदर्शित किया गया है –

तालिका 7.2

सर्वेक्षित सूचना प्राप्तकर्ताओं द्वारा सूचना प्राप्ति हेतु साहित्यिक दर्शिकाओं का प्रयोग

क्र.सं.	उपयोगकर्ता के संकाय	साहित्य दर्शिकाओं का उपयोग करने और न करने वाले उपयोगकर्ताओं का प्रतिशत		
		हाँ	नहीं	योग
1.	मानविकी	60	40	100
2.	समाज विज्ञान	70	30	100
3.	विज्ञान	80	20	100
4.	अभियांत्रिकी	100	0	100
5.	आयुर्विज्ञान	100	0	100
	योग	82	18	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सूचना प्राप्ति हेतु साहित्य दर्शिकाओं का प्रयोग करने वाले उपयोगकर्ताओं की संख्या अभियांत्रिकी तथा आयुर्विज्ञान विषय में शत प्रतिशत है । इसका तात्पर्य यह है कि अभियंत्रिकी तथा आयुर्विज्ञान विषय में शोध कार्य साहित्य दर्शिकाओं के प्रयोग के बिना पूर्ण कर पाना संभव नहीं है । इसके विपरित मानविकी, समाजविज्ञान तथा विज्ञान के क्षेत्रों में सूचना प्राप्ति हेतु साहित्य दर्शिकाओं का प्रयोग शत प्रतिशत नहीं है । बल्कि यह शत प्रतिशत से कुछ कम है । यह प्रतिशत क्रमशः 60, 70 तथा 80 है । यह प्रतिशत इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि परम्परागत विषयों में साहित्य दर्शिकाओं का प्रचार तो बढ़ा है किन्तु अभी इसका प्रयोग अधिक बढ़ने की काफी सम्भावना है । इस का एक अन्य कारण यह है कि अभी भी इन परम्परागत विषयों में कार्यरत शोधकर्ताओं को संभवतः साहित्य दर्शिकाओं के सम्बन्ध में पता नहीं है । अतः साहित्य दर्शिकाओं के उपयोग और स्वरूप पर यदि इन परम्परागत विषयों के अध्येताओं को प्रशिक्षित किया जाए तो साहित्य दर्शिकाओं के प्रयोग में वृद्धि की सम्भावना अत्यधिक हो जायेगी ।

इन प्रयोगकर्ताओं से जब यह पूछा गया कि साहित्य दर्शिकाओं का प्रयोग किन सूचनाओं का ज्ञात करने के लिए किया जाता है । इस प्रश्न के उत्तर में प्राप्त तथ्यों को निम्नलिखित तालिका 7.3 में प्रदर्शित किया गया है ।

तालिका 7.3

सर्वेक्षित सूचना प्राप्तकर्ताओं द्वारा सूचना प्राप्ति हेतु साहित्यिक दर्शिकाओं का प्रयोग

क्र.सं.	उपयोगिता के क्षेत्र	स्वीकार करने वाले उपयोगकर्ताओं का प्रतिशत		
		शोधकर्ता	व्यवसायिक	योग
1.	निर्देशन पद्धति	66	72	82
2.	विषय वस्तु की दशिता	66	72	82
3.	निर्देशात्मक अनुक्रमणिका	66	72	82
4.	सम्पूर्ण कृतियों की दर्शिता	66	72	82
5.	मानसिक एवं भौतिक निर्देशिका पद्धति	66	72	82
6.	कोई कार्य नहीं	34	28	18
	योग	100	100	100

उपरोक्त तालिका में समस्त सर्वेक्षित सूचना उपयोगकर्ताओं के 36 प्रतिशत उपयोगकर्ता शोध डिग्री अर्थात पीएच.डी. करने वाले शोधार्थी थे तथा शेष 64 प्रतिशत व्यवसायिक रूप से कार्यरत उपयोगकर्ता थे । इन उपयोगकर्ताओं द्वारा दिये गए उत्तरों से स्पष्ट है कि पीएच.डी. डिग्री हेतु शोध कार्य में संलग्न समस्त सर्वेक्षित शोधकर्ताओं में से लगभग 66 प्रतिशत शोधकर्ताओं ने तथा व्यवसायिक रूप से शोध कार्य में संलग्न समस्त सर्वेक्षित शोधकर्ताओं ने सर्वसम्मिति से साहित्य दर्शिकाओं को सूचना प्राप्ति में निम्नलिखित प्रकार से उपयोगी माना है :-

1. निर्देशन पद्धति के रूप में,

2. विषय वस्तु की दर्शिकाओं के रूप में,

3. निर्देशात्मक अनुक्रमणिका के रूप में,

4. सम्पूर्ण कृतियों की दर्शिकाओं के रूप में,

5. मानसिक और भौतिक निर्देशिका पद्धति के रूप में ।

सर्वेक्षण के दौरान विभिन्न शोधकर्ताओं ने साहित्य दर्शिकाओ के उपरोक्त क्षेत्रों में उपयोगिता सम्बन्धी जो विचार व्यक्त किये है उनका विवरण निम्नानुसार है-

निर्देशन पद्धति के रूप में

साहित्य की दर्शिकाएँ सूचना के उपयोगकर्ताओं के लिए उल्लिखित कृतियों की दर्शिका का कार्य करती है । इसके द्वारा किसी पुस्तक की विषय वस्तु, सम्पूर्ण कृतियों की जानकारी प्रदान करने का कार्य सम्पादित करती है । इसके अतिरिक्त शब्द सूची से किसी कृति विशेष में शब्दों का संदर्भ प्राप्त होता है । सर्वेक्षित शोधकर्ताओं द्वारा निर्देशन पद्धति के रूप में बताई गयी साहित्य दर्शिकाओं की उपयोगिता को सार रूप में निम्नानुसार व्यक्त किया जा सकता है ।

(अ) सम्पूर्ण कृतियों के संदर्भ को निर्दिष्ट रूप में स्पष्ट कर सकती है ।

(ब) विषय वस्तु के संदर्भ को स्पष्ट करती है ।

(स) किसी विषय विशेष पर विषय वस्तु की जानकारी तथा आवश्यक निर्देशन प्रदान करना ।

(द) किसी कृति विशेष के शब्दों का संदर्भ निर्देशन करना।

विषय वस्तु की दर्शिकाओं के रूप में

शोधकर्ता अथवा विषय विशेषज्ञ आमतौर पर किसी विषय क्षेत्र के संकलन की कृतियों की आख्या की जानकारी की अपेक्षा विशिष्ट सूचना अथवा विशेष प्रकार की सूचना अधिक उत्सुकतापूर्वक प्राप्त करना चाहते हैं तो उन्हें यह सूचना साहित्य दर्शिकाओं से आसानी से प्राप्त हो जाती है । सर्वेक्षित शोधकर्ताओं का मानना था कि साहित्यक दर्शिकाओं के माध्यम से मौलिक और द्वितीयक सूचना सामग्रियों की विशिष्ट आधार–सामग्रियों की जानकारी प्राप्त हो जाती है।

इसी प्रकार साहित्य दर्शिकाओं की अनुक्रमणिका संलेख, प्रलेखों के प्रारूप के दर्शिका का कार्य करते हैं । प्रलेखों के विषयवस्तु की जानकारी प्रदान करने में साहित्य दर्शिकाओं की अनुक्रमणिका संलेख शोधकर्ताओं का मार्गदर्शन करते हैं । ऐसा सर्वेक्षित शोधकर्ताओं का मानना था ।

<u>निर्देशात्मक अनुक्रमणिका के रूप में</u>

साहित्य दर्शिकाओं के द्वारा पुस्तकों की निर्देशात्मक अनुक्रमणिका का कार्य भी किया जाता है । यह पुस्तकों के अध्याय, प्रकरणों, नामों, संकलनों की सामग्रियों, पत्रिकाओं के आलेखों, और सारांशों की जानकारी प्रदान करने हेतु एक उपयोगी निर्देशात्मक अनुक्रमणिका पद्धति का कार्य करती है । ऐसा सर्वेक्षित शोधकर्ताओं का मानना है । इसके अतिरिक्त शोधकर्ताओं का यह भी मानना है कि सूचनाएँ समयानुसार, भाषानुसार तथा स्थानानुसार यत्र–तत्र बिखरे रहते हैं । अतः उन्हें स्मृति के आधार पर एकत्र करना तथा याद रखना अत्यन्त कठिन है । अतः ऐसी स्थिति में ये साहित्य दर्शिकाएँ अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है ।

सम्पूर्ण कृतियों की दर्शिका के रूप में

सामान्यतः ग्रन्थालयों में प्रसूची का उपयोग लेखक के नामों, कृतियों की आख्याओं तथा विषयों की जानकारी के लिए किया जाता है । इन कृतियों, मोनोग्राफों तथा प्रतिवेदनों इत्यादि की जानकारी के लिए विषय शीर्षकों का प्रयोग किया जाता है । इन विषय शीर्षक का उपयोग एक प्रकार की कृतियों को एक साथ उपयोग करने हेतु किया जाता है । इस तरह विषय सूचियों का उपयोग एक ही विषय के अलग-अलग कृतियों के अन्तर को स्पष्ट करने हेतु नहीं किया जाता है ।

सर्वेक्षित शोधकर्ताओं का यह भी मानना है कि वर्गीकरण मात्र एक ही श्रेणियों की कृतियों को ईकाई के रूप में सहबद्ध करता है । लेकिन वर्गीकरण का कृतियों की विषयवस्तु कोई प्रभाव वर्गीकरण पर परिलक्षित नहीं होता । ऐसी स्थिति में साहित्य दर्शिकाओं का उपयोग कर सम्पूर्ण कृतियों की स्थिति तथा पुस्तकों और पत्रिकाओं की विषय वस्तु तथा इनकी सहबद्धता और अन्तर को आसानी से ज्ञात किया जा सकता है ।

मानसिक और भौतिक निर्देशिका पद्धति के रूप में

साहित्य दर्शिका मानसिक और भौतिक स्मृति के निर्देशिक पद्धति के रूप में भी अत्यन्त उपयोगी है । ऐसा सर्वेक्षित शोधकर्ताओं का मानना है । शोधकताओं ने सर्वेक्षण के दौरान यह स्पष्ट किया कि स्मृति को तीव्रता प्रदान करने हेतु साहित्य दर्शिकाओं का उपयोग कृतियों की अनुक्रमबद्धता, सहचर्यकरण तथा वस्तुओं की पुनरावृत्ति टालने के लिए किया जाता है जो मानसिक और भौतिक रूप से स्मृति सहायक उपकरणों के रूप में कार्य करती है ।

अध्याय-८

शोध प्रगति तालिकाएं : अभिप्राय, उपयोगिता तथा प्रकार

अध्याय -८

शोध प्रगति तालिकाएं : अभिप्राय, उपयोगिता तथा प्रकार

आधुनिक समय में ज्ञान की सभी धाराओं में तीव्र गति से अनुसंधान चल रहे हैं । ये अनुसंधान विश्वविद्यालय शोध संस्थान, शोध प्रयोगशालाओं, गैर सरकारी संगठन, सरकारी संगठन, निजी क्षेत्र के औद्योगिक संगठन तथा व्यवसायिक शोध संस्थाओं इत्यादि के द्वारा अलग-अलग संचालित किये जा रहे हैं । इन शोध गतिविधियों के परिणामस्वरूप ज्ञान की हर विधा में प्रचुर मात्रा में शोध सामग्री का सृजन हो रहा है । बड़ी मात्रा में हो रहे शोध सामग्रियों के प्रकाशन ने सर्वत्र चल रहे व्यवहारिक एवं सैद्धांन्तिक शोध की पुनरावृति एवं अतिव्यापन की समस्या बड़े पैमाने पर उत्पन्न हो गयी है । इस समस्या से निजात पाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रयास किये गए हैं । इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप शोध-प्रगति तालिकाओं के रूप का अर्विभाव हुआ । शोध प्रगति-तालिका से तात्पर्य उन प्रकाशनों से हैं जो विभिन्न संस्थाओं में चल रहे शोध कार्यक्रम और परियोजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराती है ।

शोध प्रगति तालिकाओं में जो जानकारी उपलब्ध होती है उनका विवरण निम्नलिखित हैं -

1. परियोजनाओं का उल्लेख,
2. अनुसंधानकर्ता का नाम,
3. अनुसंधान की अवधि,
4. अनुदान या आर्थिक सहायता प्रदान करने वाली संस्था का उल्लेख,
5. उन संदर्भों का विवरण जिनमें उनके निष्कर्षो/प्रतिवेदनों का प्रकाशन किया गया होता है अथवा होने वाला होता है ।

इनका विवरण निम्नानुसार है –

परियोजनाओं का उल्लेख

शोध प्रगति तालिका का प्रमुख उद्देश्य शोध परियोजनाओं की प्रगति के बारे में बताना होता है । इसी कारण शोध – प्रगति तालिकाओं का प्रथम शीर्ष परियोजनाओं के नाम का होता है । शोध प्रगति तालिकाओं का निर्माण करते समय निर्माणकर्ता विषयवार परियोजनाओं का उल्लेख करते हैं । परियोजनाओं का उल्लेख करने की पद्धति को निम्नानुसार प्रदर्शित किया जा सकता है ।

S.No.	Title of Subject
1.	Environmental Study of Granite mining and Evaluation of land use using GIS & Remote sensing Techniques, in Part of Bundelkhand Region

अनुसंधानकर्ता का नाम

शोध प्रगति तालिका का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व अनुसंधानकर्ता का नाम तथा परिचय होता है । तालिका के इस भाग में अनुसंधान करने वाले का नाम, उसके संगठन का नाम तथा संगठन में उसकी

स्थिति का विवरण रहता है । अनुसंधानकर्ता की जानकारी शोध प्रगति तालिका में निम्नानुसार दी जाती है ।

S.No.	Title of the Project	Name of the Investigator	Position & Name of Organisation
1.	The Env..........Region	Prof. U.C. Singh	Professor of Earth Science , Jiwaji University, Gwalior
2.	Child......Region	Dr. S. Sachdeva	Prof. of Economics , SLP College Gwalior

<u>अनुसंधान की अवधि</u>

शोध प्रगति तालिका की तीसरी महत्वपूर्ण सूचना अनुसंधान की अवधि से सम्बन्धित होती है । अर्थात् अनुसंधान कार्य कितने समय तक चलेगा इस तथ्य की जानकारी रहती है । अनुसंधान कार्य के समाप्त होने की दशा में अनुसंधान की अवधि का उल्लेख शोध प्रगति तालिका में किया जाता है । शोध प्रगति तालिका में अनुसंधान की अवधि का उल्लेख निम्नानुसार किया जाता है ।

क्र.सं.	शोध कार्य का शीर्षक	शोधकर्ता का नाम	शोधकर्ता का पद एवं संगठन का नाम	शोध की अवधि
1.	ग्वालियर जिले में बाल श्रम की समस्या	डॉ0 एस. सचदेवा	सहा.प्राध्यापक एस.एल.पी. महाविद्यालय, ग्वालियर	2 वर्ष
2.	ग्वालियर जिले में चाय का विपणन	डॉ. ए.के. झा	सहा.निदेशक रॉबिन्सन शोध केन्द्र, ग्वालियर	1 वर्ष

अनुदान या आर्थिक सहायता प्रदान करने वाली संस्था का उल्लेख

शोध कार्यो को अनेक संस्थाओं द्वारा अनुदान प्रदान किया जाता है । इन संस्थाओं का उल्लेख किये बिना कोई भी शोध प्रगति तालिका अधूरी मानी जायेगी । शोध कार्यो को सहायता एवं अनुदान प्रदान करने वाली ये संस्थाएँ अलग-अलग हो सकती है । शोध प्रगति तालिका में इन संस्थाओं को निम्नानुसार प्रदर्शित किया जा सकता है ।

क्र. सं.	शोध परियोजना का शीर्षक	शोधकर्ता का नाम	शोधकर्ता का पद एवं संगठन	शोध की अवधि	अनुदान प्रदान करने वोली संस्था का नाम
1.	ग्वालियर जिले में बालश्रम समस्या	डॉ0एस. सचदेवा	सहा0 प्रा0, एस0एल0पी0 महाविद्यालय, ग्वालियर	2 वर्ष	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली
2.	ग्वालियर जिले में चाय का विपणन	डॉ.ए.के. झा	सहा. निदेशक रॉबिन्सन सेन्टर फॉर रिसर्च, ग्वालियर	1 वर्ष	डायनामिक इंडस्ट्री, नई दिल्ली

उन संदर्भो का विवरण जिनमें निष्कर्षो एवं प्रतिवेदन का प्रकाशन किया गया है

शोध-प्रगति तालिका का अंतिम महत्वपूर्ण अंग उन संदर्भो का विवरण होता है जिनमें प्रतिवेदन या निष्कर्षो का प्रकाशन किया गया है या किया जाना है । शोध-प्रगति तालिका में निम्नानुसार प्रदर्शित किया जा सकता है ।

क्र. सं.	शोध परियोजना का शीर्षक	शोधकर्ता का नाम	शोधकर्ता का पद एवं संगठन	शोध की अवधि	अनुदान प्रदान करने वाली संस्था का नाम	प्रतिवेदन का निष्कर्ष प्रकाशित करने वाले प्रकाशन का नाम
1.	ग्वालियर जिले में बाल श्रम की समस्या	डॉ0 एस. सचवेदवा	सहा.प्रा. एस.एल.पी. महाविद्यालय, ग्वालियर	2 वर्ष	यू.जी.सी. नई दिल्ली	EPW संदर्भ इकानॉमिस्ट
2.	ग्वालियर जिले में चाय का विपणन	डॉ0 ए.के. झा	सहा.निदेशक,रॉबिन्सन सेन्टर फॉर रिसर्च	1 वर्ष	डायनामिक इण्डस्ट्री, नई दिल्ली	A & M, Busisness India.

उपरोक्त सूचनाएँ अन्य अनुसंधानकर्ताओं विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों, व्यवसायियों को अनुसंधानकर्ता से सम्पर्क करने तथा कार्य के विशेष विवरण ज्ञात करने इत्यादि में अत्यन्त महत्वपूर्ण सुविधा प्राप्त हो जाती है ।

शोध प्रगति तालिक के सामान्य उद्भव के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है । फिर भी सामान्यतः यह तथ्य सर्वमान्य है कि आधुनिक समय में सबसे पहले शोध प्रगति तालिका का प्रकाशन 1955 में अर्जन्टाइना में किया गया । इस तारतम्य को अनेक देशों ने आगे बढ़ाया । विकासशील देशों में शोध प्रगति तालिका के प्रकाशन और संकलन को एक व्यापक रूप प्रदान करने के लिए युनेस्कों द्वारा काफी महत्वपूर्ण कार्य किया गया ।

विगत पांच दशकों से विकासशील देशों को अनुसंधान क्रियाक्रलापों की प्रगति से सम्बन्धित सूचना सुलभ कराने के प्रयास किए जा रहे हैं । लेकिन पिछले कुछ थोड़े से समय के दौरान विकासशील एवं विकसित देशों के मध्य इस प्रकार की सूचना

व्यवस्था उपलब्ध कराने के गंभीर प्रयास आरम्भ हुए हैं । इस सम्बन्ध में युनेस्कों द्वारा अपनी निर्देशिका यूनिशिष्ट के (UNISIST Guidelines on the conduct of a National Inventory of Current Research and Development Projects) के अनुसार विकासशील देशों में शोध प्रगति की सूचना के महत्व से नीति निर्धारकों तथा अनुसंधान नियोजकों को सुपरिचित करने का अधिक प्रयास किया है । इन सबका परिणाम यह हुआ कि विकासशील देशों में पाकिस्तान थाइलैंड और फिलीपिन्स ने वैज्ञानिक शोधप्रगति तालिका का संकलन सन् 1964 में प्रारम्भ किया गया । धीरे धीरे यह क्रम बढ़ता गया तथा सन् 1972 तक अनेक देशों में यह क्रम प्रारम्भ हो गया ।

युनेस्कों ने इस कार्य में और अधिक गतिशिलता लाने के उद्देश्य से सन् 1975 में विकासशील और विकसित देशों के मध्य एक संगोष्ठी आयोजित की । इस संगोष्ठी में अनुसंधान सूचना के प्रसार के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग पर बल दिया गया । इसके परिणामस्वरूप करेन्ट एग्रीकल्चर रिसर्च इन्फॉरमेशन सिस्टम (करिस) की स्थापना की गयी जिसके अस्सी विकासशील देशों में केन्द्र स्थापित किये गए । इसी तारतम्य में 1978 में सभी देशों में चल रहे शोध कार्यो की जानकारी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से युनेस्कों और स्मिथ सोनियन साइन्टिफिक इनफॉरमेशन एक्सचेन्ज के सहयोग से एक अन्तर्राष्ट्रीय निर्देशिका प्रकाशित की गयी । इस निर्देशिका का नाम "Information Service on Research in Progress: A World wide Directory" था ।

शोध प्रगति तालिका के संकलन का कार्य विभिन्न देशों में अलग-अलग समय पर आरम्भ हुआ । कुछ प्रमुख देशों में शोध प्रगति तालिका के विकास का विवरण निम्नानुसार है –

अर्जेन्टाइना –

अर्जेन्टाइना ने 1955 में सर्वप्रथम नेशनल कॉउन्सिल फॉर साइन्टिफिक एण्ड टेक्नीकल रिसर्च के नाम से शोध प्रगति तालिका प्रकाशित की । इस तालिका में 1660 अनुसंधान परियोजनाओं को वर्गीकृत ढंग से तालिकाबद्ध किया गया है । इस प्रकाशन में शोध परियोजनाओं का विस्तृत विवरण उपलब्ध कराया गया है । इसके पश्चात सन् 1972 में ब्यूनस आयर्स विश्वविद्यालय ने भी शोध कार्यों पर एक निर्देशिका प्रकाशित की ।

फिलिपीन्स –

फिलिपीन्स ने सर्वप्रथम शोध–प्रगति–तालिका का प्रकाशन सन् 1964–65 में "Handbook of Research in Philippines 1964-65" के नाम से किया गया जिसमें प्रमुख वैज्ञानिक क्षेत्रों के अनुसंधानों का पूर्ण विवरण दिया गया है । सन् 1966–69 की अवधि के शोधकार्यों को भी तालिकाबद्ध कर सन् 1972 में प्रकाशित किया गया ।

पाकिस्तान –

पाकिस्तान में वहाँ के नेशनल साइंस कॉउन्सिल तथा पाकिस्तान के राष्ट्रीय प्रलेखन केन्द्र (PAKSDOC) शोध–प्रगति–तालिका के निर्माण हेतु शोध परियोजनाओं की सूचनाओं का संकलन प्रारम्भ किया गया । इसका प्रकाशन सन् 1968 में किया गया । इस प्रकाशन में 3,000 अनुसंधान परियोजनाओं का पूर्ण विवरण दिया गया है ।

थाइलैण्ड –

थाइलैण्ड में शोध-प्रगति-तालिका के संकलन और प्रकाशन का कार्य नेशनल रिसर्च कॉउन्सिल के रिसर्च, कम्पाइलेशन और कोऑर्डीनेशन डिवीजन द्वारा सन् 1966 में प्रारम्भ किया गया तथा सन् 1967 में प्रकाशित किया गया । इसमें थाइलैण्ड में चल रही शोध परियोजनाओं के विस्तृत विवरण दिये गये हैं । कॉउन्सिल के रिसर्च विभाग ने सन् 1976 में एक अन्य शोध-प्रगति-तालिका का प्रकाशन किया । इस प्रकाशन में 2,000 अनुसंधान परियोजनाओं का उल्लेख किया गया है ।

भारत -

भारत में उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर प्रथम शोध-प्रगति-तालिका का प्रकाशन इन्सडॉक द्वारा सन् 1972 में किया था । "Current Research Projects in CSIR Laboratories" के नाम से प्रकाशित इस शोध-प्रगति-तालिका का प्रथम संस्करण सन् 1972 में तथाद्वितीय संस्करण सन् 1976 में प्रकाशित किया गया । इस प्रकाशन में 2,141 शोध परियोजनाओं का विवरण शामिल किया गया था । इन्सडॉक द्वारा इसी तरह की दूसरी शोध-प्रगति-तालिका का प्रकाशन सन् 1974 में "Directory of Scientific Research in Indian University". के नाम से किया गया । इसमें 9,903 शोध परियोजनाओं का उल्लेख है । इन परियोजनाओं में 11,000 वैज्ञानिक कार्यरत थे ।

आजकल भारत में शोध परियोजनाओं की सूचना शोध प्रगति तालिका के रूप में अनेक संस्थाओं द्वारा उपलब्ध कराई जा रही है ।

शोध प्रगति तालिका के प्रकाशन का उद्देश्य व्यवहारिक एवं

सैद्धान्तिक शोधों की पुनरावृति, अतिव्यापन से सतर्क रहने तथा शोधकर्ताओं को सम्बन्धित विषय में चल रहे शोध कार्यो से अद्यतन रखने का रहा है । समय के साथ–साथ विज्ञान तथा तकनीकी के क्षेत्रों में प्रारम्भ हुए इस प्रकाशन को अब लगभग ज्ञान के हर क्षेत्र में चल रहे शोध कार्यो की सूचना प्रसारित करने के कार्य हेतु उपयोग में लाया जाने लगा है। इन शोध प्रगति तालिकाओं का विद्धतजनों के मध्य उपयोगिता ज्ञात करने के लिए एक सर्वेक्षण का आयोजन किया गया । इस सर्वेक्षण में ज्ञान के विभिन्न संकार्यो से सम्बन्धित शोधकर्ताओं से शोध प्रगति तालिकाओं की उपयोगिता को बताने को कहा गया । इस सर्वेक्षण में अनुसंधानकर्ताओं से निम्न प्रश्न पूछे गए –

1. नाम

2 शोध का स्तर

3. विषय / संकाय

4. कार्य

5. क्या शोध कार्य के दौरान शोध प्रगति तालिका का प्रयोग करते हैं ।

6. शोध प्रगति तालिका के उपयोग से क्या फायदे हैं ।

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर हेतु 100 शोधकर्ताओं से प्राप्त किये गये इन शोधकर्ताओं का सम्बन्ध विभिन्न संकार्यों से था जिसका विवरण निम्नलिखित तालिका 8.1 में प्रदर्शित किया गया है ।

तालिका 4.1

विभिन्न संकाय के अनुसार सर्वेक्षित शोधार्थी

क्र. सं.	संकाय	शोधकर्ताओं की संख्या / अकादमिक डिग्री हेतु शोध	परियोजनाओं एवं शोध संगठनों में कार्यरत शोधार्थी	योग
1.	मानविकी	12	8	20
2.	समाज विज्ञान	10	10	20
3.	विज्ञान	8	12	20
4.	अभियांत्रिकी	5	15	20
5.	आयुर्विज्ञान	6	14	20
	योग	41	59	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शोध-प्रगति तालिका की उपयोगिता ज्ञात करने के लिए 5 विभिन्न संकायों से 100 शोधकर्ताओं का सर्वेक्षण किया गया । इन शोधकर्ताओं में निम्न दो तरह के शोधकर्ता थे ।

1. अकादमिक डिग्री हेतु शोध कार्य करने वाले शोधकर्ता।

2. विभिन्न शोध संस्थाओं, विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों तथा शोध परियोजना पर कार्यरत शोधकर्ता ।

भारत में शोध कार्यों की एक बड़ी संख्या अकादमिक डिग्री हेतु शोध कार्य में संलग्न शोधार्थियों की संख्या है । ये शोधार्थी मुख्यतः डाक्टरेट डिग्री प्राप्त करने हेतु शोध कार्य में संलग्न एवं

प्रयत्नशील हैं । इस सर्वेक्षण में 41 ऐसे शोधार्थियों का सर्वेक्षण कियागया है जो डॉक्टरेट डिग्री प्राप्त करने हेतु शोध कार्य कर रहे हैं ।

इसी तरह वैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों तथा अभियंत्रिकी से जुड़े ऐसे अनेक लोग हैं जो विभिन्न शोध संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा शोध परियोजनाओं पर शोध कार्य में संलग्न है । इन सर्वेक्षण में ऐसे 59 ऐसे शोधकर्ताओं का भी सर्वेक्षण किया गया है जो विभिन्न संस्थाओं में कार्यरत रहकर शोध कार्यों का संचालन कर रहे हैं । समाजशास्त्रियों को सम्मिलित करने का मुख्य उद्देश्य तुलनात्मक अध्ययन से है ।

शोध प्रगति तालिका की उपयोगिता ज्ञात करने हेतु किये गए इस सर्वेक्षण में मूलतः दो प्रश्नों को ज्ञात करने का कार्य किया गया है । इनमें से प्रथम प्रश्न शोध प्रगति तालिका के प्रयोग से सम्बन्धित था । इस प्रश्न के उत्तर में प्राप्त तथ्यों की तालिका 8.2 में प्रदर्शित किया गया है ।

इस तालिका से स्पष्ट है कि शोध प्रगति तालिका का प्रयोग लगभग सभी संकाय के सदस्यों द्वारा किया जाता है । समग्र रूप से देखने पर यह स्पष्ट होता है कि मानविकी और समाज विज्ञान विषय में शोध-प्रगति-तालिकाओं का प्रयोग अभी अधिक नहीं बढ़ा है । इन संकायों में क्रमशः 40 एवं 45 प्रतिशत शोधकर्ता शोध प्रगति तालिका का प्रयोग करते हैं जबकि विज्ञान संकाय में 90 प्रतिशत शोधकर्ता शोध प्रगति तालिका का प्रयोग करते हैं । इसी तरह अभियांत्रिकी तथा आयुर्विज्ञान संकाय में शोध कार्य कर रहे सभी शोधकर्ताओं द्वारा शोध-प्रगति तालिका के प्रयोग करते हैं ।

तालिका 4.2

शोधकर्ताओं द्वारा शोध प्रगति तालिका का प्रयोग

क्र.सं.	संकाय	शोधकर्ताओं का स्तर एवं संख्या		
		अकादमिक	कार्यरत	योग
1.	मानविकी	4 (33)	4 (50)	8 (40)
2.	समाज विज्ञान	3 (30)	6 (60)	9 (45)
3.	विज्ञान	6 (75)	12 (100)	18 (90)
4.	अभियांत्रिकी	5 (100)	15 (100)	20 (100)
5.	आयुर्विज्ञान	6 (100)	14 (100)	20 (100)

नोट :- कोष्ठक में प्रदर्शित संख्या कुल सर्वेक्षित संख्या का प्रतिशत है ।

शोधकर्ताओं के स्तर के आधार पर शोध प्रगति तालिकाओं के प्रयोग करने वाले और न करने वालों की स्थिति पर ध्यान देने से यह स्पष्ट होता है कि अकादमिक डिग्री हेतु शोध कार्य कर रहे शोध कर्ताओं में समाजविज्ञान और मानविकी संकाय में शोध कर रहे छात्रों द्वारा शोध प्रगति तालिका का प्रयोग बहुत कम किया जाता है । जिनका प्रतिशत क्रमशः 30 तथा 33 है । इसी तरह विज्ञान संकाय में 75% अकादमिक डिग्री हेतु शोध कार्य में संलग्न शोधकर्ता शोध प्रगति तालिका का प्रयोग करते हैं । जबकि अभियांत्रिकी एवं आर्युविज्ञान विषय में शोध-प्रगति तालिका का प्रयोग करने वाले शोध छात्रों का प्रतिशत 100 था ।

इसी तरह विभिन्न संगठनों में कार्यरत शोधकर्ताओं के दृष्टिकोण से प्राप्त समंकों का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि शोध प्रगति तालिकाओं का प्रयोग करने वाले शोधकर्ताओं की संख्या मानविकी तथा समाज विज्ञान संकायों में कम है जहाँ इनकी संख्या क्रमशः पचास और साठ प्रतिशत है । अन्य सभी सर्वेक्षित संकायों में इनकी संख्या शत प्रतिशत है । इस विश्लेषण में एक तथ्य अत्यन्त ध्यान देने योग्य है । कि जिन शोधकर्ताओं का प्रयोग न करने की बात कही गयी है । उन्हें शोध प्रगति तालिकाओं के बारे में कोई ज्ञान ही नहीं था ।

इस सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य शोध- प्रगति तालिकाओं की उपयोगिता ज्ञात करना था । यही इस सर्वेक्षण का दूसरा मुख्य उद्देश्य था । इस प्रश्न के उत्तर में प्राप्त समंको का प्रदर्शन तालिका 8.3 में प्रस्तुत किया गया है -

तालिका 8.3

शोध प्रगति तालिकाओं की उपयोगिता

क्र. सं.	शोध प्रगति तालिकाओं की उपयोगिता	उपयोगिता मानने वाले शोधकर्ताओं की	
		संख्या	प्रतिशत
1.	पुनरावृति से बचाव	65	65
2.	अतिव्यापन से बचाव	65	65
3.	शोध की गई दशाओं से अद्यतन रहने में उपयोगिता	65	65
4.	परियोजना तैयार करने में	65	65
5.	संदर्भ प्राप्त करने में	65	65
6.	अनुदान प्रदान करने वाली संस्था का विवरण प्राप्त करने में	65	65
7.	कोई उपयोगिता नहीं	35	35
	योग	100	100

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध प्रगति तालिकाओं को उपयोगी मानने पर सर्वेक्षित शोधकर्ता दो भागों में विभाजित है एक भाग उन लोगों का है जो इसे उपयोगी मानते हैं तथा दूसरा भाग उन लोगों का है जो इसे उपयोगी नहीं मानते ।

सर्वेक्षण के दौरान शोध प्रगति तालिका को उपयोगी मानने वाले लगभग 65 प्रतिशत सर्वेक्षित शोधकर्ताओं ने कुल मिलाकर में शोध प्रगति तालिकाओं के निम्नलिखित उपयोग बताये –

1. शोध कार्यो में पुनरावृति पर रोक लगाने का कार्य शोध प्रगति तालिका के द्वारा किया जाता है ।

2. शोध कार्यो में अतिव्यापन (Overlaping) की समस्या उत्पन्न नहीं होती ।

3. शोधकर्ताओं को शोध गतिविधियों में चल रही नई दशाओं एवं दिशाओं में अद्यतन रहने में शोध प्रगति तालिका अत्यन्त महत्वपूर्ण सहायक रहती है ।

4. शोध प्रगति तालिका शोध परियोजना तैयार करने में अत्यन्त मददगार एवं सूचनाप्रद रहती है ।

5. शोध प्रगति तालिका शोध कार्यो हेतु विभिन्न विशेषज्ञों तथा शोध कार्यो का सन्दर्भ प्राप्त करने में अत्यन्त मददगार सिद्ध होती है ।

6. शोध प्रगति तालिका शोधकर्ताओं को अनुदान प्राप्त करने में अत्यन्त मददगार सिद्ध होती है ।

इस सर्वेक्षण का दूसरा भाग उन शोधकर्ताओं का है जो शोध प्रगति तालिकाओं को अनुपयोगी मानने वालों का है । सर्वेक्षण में शोध प्रगति तालिका को अनुपयोगी मानने वाले वे शोधकर्ता है जो शोध प्रगति तालिका के बारे में ही नहीं जानते । इससे एक तथ्य

स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आता है कि अभी भी मानविकी तथा समाज विज्ञान संकायों में विश्वविद्यालयीन, महाविद्यालयीन शिक्षकों एवं अन्य शोधकर्ताओं में शोध प्रगति तालिका के प्रयोग एवं उपयोगिता के बारे में प्रशिक्षण की आवश्यकता है ।

शोध प्रगति तालिकाओं का प्रारम्भ विज्ञान और तकनीकी विषय से होकर अब ज्ञान के सभी क्षेत्रों में पहुँच चुका है । इसी कारण अब शोध प्रगति तालिकाओं के अनेक वर्गों का भी निर्माण हो गया है । वृहत रूप से शोध प्रगति तालिकाओं को निम्नलिखित आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है ।

1. संरचना के आधार पर,
2. विषय के आधार पर,
3. भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर ।

इनका विवरण निम्नानुसार है –

संरचना के आधार पर

संरचना के आधार पर शोध प्रगति तालिकाओं को पुनः तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है । ये भाग निम्नलिखित है–

(अ) चालू शोध

(ब) पूर्ण हो चुके शोध कार्यो की प्रगति तालिका,

(स) डॉक्टरल शोध कार्यो की प्रगति तालिका ।

इनका विवरण निम्नानुसार है –

(अ) चालू शोध कार्यो की प्रगति तालिका – चालू शोध कार्यो (Research Work in Progress) से तात्पर्य उन शोध कार्यो से है जिनका कार्य पूरा नहीं हुआ है । चालू शोध कार्यो की प्रगति तालिका को निम्न उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है –

Current Research Progress in CSIR Laboratories - 1972 to 1974.

Information Service on Research in Progress: A world wide Directory.

(ब) पूर्ण हो चुके शोध कार्यों की प्रगति तालिका – पूर्ण हो चुके शोघ कार्यों की प्रगति तालिका से तात्पर्य उन शोध परियोजना की तालिका से है जो पूर्ण हो चुके हैं । ऐसे शोध प्रगति तालिका का उदाहरण निम्नानुसार है –

Directory of Doctoral thesis Awarded in Social Sciences in India.

(स) डॉक्टरल शोध कार्यो की प्रगति तालिका – डॉक्टरल शोध कार्यो की प्रगति तालिका एक महत्वपूर्ण संरचनात्मक शोध प्रगति तालिका है । इस शोध प्रगति तालिका का उदाहरण निम्नलिखित है –

Directories of Scientific Research in Indian University (in progress).

<u>विषय के आधार पर</u>

विषय के आधार पर भी शोध– प्रगति तालिकाओं को वर्गीकृत किया जा सकता है । आजकल सभी विषयों में शोध प्रगति तालिका का निर्माण किया जा रहा है । अलग–अलग एसोसियेशन तथा परिषद अपने अपने विषय तथा संकाय में अलग–अलग शोध प्रगति तालिका तैयार कर रही है ।

<u>भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर</u>

भौगोलिक सीमा के आधार पर भी शोध –प्रगति तालिका का वर्गीकरण किया जा सकता है । ये वर्गीकरण निम्नानुसार हो सकता है –

(अ) राष्ट्रीय शोध प्रगति तालिका,

(ब) अन्तर्राष्ट्रीय शोध प्रगति तालिका,

(स) महादेशीय शोध प्रगति तालिका ।

उपरोक्त तीनों प्रकार की शोध प्रगति तालिकाओं का उदाहरण निम्नानुसार है –

(अ) <u>राष्ट्रीय शोध प्रगति तालिका</u>

Directory of Ongoing Researches in Korea in Science and Technology.

(ब) <u>अन्तर्राष्ट्रीय शोध प्रगति तालिका</u>

Information Services on Research in Progress: A world wide Directory.

(स) <u>महादेशिय शोध प्रगति तालिका</u>

ASCA: Handbook of Scientific Research in Asia.

अध्याय-९

डेटाबेस तथा इनकी निर्देशिका: अभिप्राय विकास तथा प्रकार

अध्याय -९

डेटाबेस तथा इनकी निर्देशिकाः अभिप्राय विकास तथा प्रकार

आधुनिक युग में सूचना के क्षेत्र में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रयोग अत्यन्त बढ़ता जा रहा है । कम्प्यूटरों के आगमन और बढ़ते प्रयोग ने सूचना विज्ञान के क्षेत्र में एक नई क्रांति को जन्म दिया है । यह क्रांति सूचना क्रांति के नाम से जानी जाती है । इस क्रांति में डेटाबेस निर्देशिकाओं का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है । भारत और अमेरिका इस प्रकार के डेटाबेस निर्देशिकाओं के उत्पादन में अग्रणी है । अनेक सारांशकरण, अनुक्रमणिकाकरण एवं वांगमयात्मक सेवाएँ भी डेटाबेस निर्देशिकाओं का निर्माण कर रही हैं । इन सब स्थितियों में ग्रन्थालयी के लिए डेटाबेस निर्देशिकाओं की जानकारी रखना अत्यन्त आवश्यक हो गया है ।

सामान्यतः सूचना सामग्रियों के यंत्रेण पठनीय स्रोत, जिनकी व्यवस्था कम्प्यूटर के माध्यम से किया जाता है, डेटाबेस के नाम से जाने जाते हैं । डेटाबेस की यंत्रेण पठनीय संचिका (Machine Readable File) के नाम से भी जाना जाता है । कम्प्यूटर की दुनिया में डाटा बेस एक ऐसा साफ्टवेयर है जिसमें सूचनाओं को सुव्यवस्थित क्रम में क्रमबद्ध सूचनाओं का संग्रह होता है । इन सूचनाओं को आमतौर पर कम्प्यूटर के मेग्नेटिक टेप, हार्ड डिस्क, फ्लॉपी डिस्क, तथा सीडी में संग्रहित किया जाता है । इन सूचनाओं

का अवलोकन करने के लिये कम्प्यूटर प्रश्नावली का प्रयोग करना पड़ता है ।

वास्तव में देखा जाये तो तकनीकी रूप से सूचनाओं के संग्रहण को डेटाबेस कहा जा सकता है । चाहे उसका संग्रहण सूक्ष्मस्वरूप अथवा मैग्नेटिक टेप में हो । किन्तु सूचना तकनीक और कम्प्यूटर की तकनीकी शब्दावली में इसे कम्प्यूटर द्वारा पुर्नप्राप्ति में सहायक सामग्री के रूप में मान्य किया गया है । इसप्रकार डेटाबेस एक कम्प्यूटिंग अवधारणा है, जिसे व्यापारिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी, शैक्षणिक जगत में प्रयुक्त किया जाता है। उपरोक्त विवरण से जो तथ्य स्पष्ट होते है उनके अनुसार हम यह कह सकते हैं कि सूचनाओं की कोई भी वृहत संचिका जिसे कम्प्यूटर प्रणाली में निहित एवं समाहित किया जाता है डेटाबेस कहलाता है । इस डेटाबेस प्रक्रिया का इस्तेमाल कर कोई भी सूचना अत्यन्त अल्प समय में सहजता से प्राप्त की जा सकती है ।

डेटाबेस का निर्माण अनेक प्रकार के कार्यो को करने के लिए किया जाता है । वास्तव में यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सूचनाओं को समय-समय पर अद्यतन रखी एवं संकलित की जा सकती है । डेटाबेस संरचना का प्रयोग कर निम्नलिखित कार्यो का सम्पादित किया जा सकता है:-[1]

(1) डेटाबेस में नया जोड़ सकते हैं ।

(2) डेटाबेस को सॉर्ट कर (छाँट) सकते हैं ।

(3) डेटाबेस का अनुक्रमणिका तैयार कर सकते हैं ।

(4) डेटाबेस फाइल में रिकार्ड खोज सकते हैं ।

(5) डेटाबेस को इच्छानुसार आवश्यक स्वरूप में प्रिंट कर सकते हैं ।

---

1 शर्मा, प्रभाकर, " कम्प्यूटर उपयोजना" पृ 411

(6) डेटाबेस को सम्पादित कर सकते हैं ।

(7) डेटाबेस से व्यर्थ एवं अनुपयोगी रिकार्ड को हटा सकते हैं ।

डेटाबेस प्रणाली के उपरोक्त कार्यों तथा विशेष्ताओं का प्रयोग कर इसका ग्रन्थालय तथा सूचनासेवाओं के आधुनिकीकरण में प्रयोग धीरे-धीरे बढ़ने लगा है । ग्रन्थालय तथा सूचना सेवाओं के आधुनिकीकरण का प्रमुख उद्देश्य अध्येताओं को सम्पूर्ण विश्व में नित्यप्रति विकसित ज्ञान का विवरण कम से कम समय में न्यूनतम मूल्य पर सुलभ कराना तथा नित्यप्रति ज्ञान के विकास की प्रक्रिया से उसे अद्यतन करना होता है । इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु ग्रन्थालय तथा सूचना सेवाओं में डेटाबेस का उपयोग कर निर्देशिकाओं का निर्माण किया जाने लगा है।

वास्तव में ग्रन्थालय के कार्य को सरल और सुविधाजनक बनाने हेतु प्रयास हमेशा से किये जाते रहे हैं । किन्तु विगत कुछ दशकों में ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक स्वरूपों में शोध सामग्रियों की विशाल संख्या में प्रकाशन किया जा रहा है । तथा इसकी संख्या में अत्यन्त तीव्र गति से वृद्धि हो रही है । उससे अनेकों जटिल समस्याएँ उत्पन्न हो गयी हैं । ये समस्याएँ निम्नलिखित है:-[1]

1. विभिन्न क्षेत्रों, प्रकरणों तथा समस्याओं में अनुसन्धानरत विशेषज्ञों तथा उपयोगकर्ताओं की अभिरूचि तथा उनसे सम्बन्धित उपादेय सामग्रियों को ज्ञात करना तथा तदनुसार उन्हें उन तक पहुँचाना ।

---

1 त्रिपाठी, डॉ.एस.एम., " सन्दर्भ एवं सूचना सेवा के नवीन आयाम", पृ 253

2. अनुसंधानकर्ता तथा विशेषज्ञों द्वारा समयाभाव के कारण विशाल प्रकाशन सामग्रियों से वांछित एवं उपादेय सूचना सामग्री को खोजना, चयन करना तथा समय पर प्राप्त करना ।

3. उपरोक्त समस्याओं के परिणामस्वरूप ग्रन्थालयी के सम्मुख प्रलेखों को विषय वस्तु को परम्परागत श्रमपूर्ण विधियों से सुलभ कराना अत्यन्त दुष्कर कार्य सिद्ध होने लगा है। इससमस्या के समाधान हेतु ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान एच. पी. लुहान ने उपयोगकर्ताओं के अभिरूचि की सामग्रियों को शीघ्रतापूर्वक उपलब्ध कराने के लिए 'मशीनी व्यवस्था' पद्धति की उपयोगिता का प्रतिपादन किया तथा इसके अनुरूप ''इलेक्ट्रॉनिक प्रोसेसिंग'' प्रणाली को आई.बी.एम. कम्पनी के साथ मिलकर विकसित किया । यह पद्धति पंचकार्ड पर आधारित थी । इस पद्धति से सेवा कार्य करने में काफी सरलता आ गयी । अमेरिका और ब्रिटेन में इस पद्धति का अत्यधिक उपयोग किया गया । किन्तु समय के साथ-साथ कम्प्यूटरों की बढ़ती हुई कीमतों के कारण यह व्यवस्था अत्यन्त मंहगी सिद्ध होने लगी ।

महंगी होती व्यवस्था में लगातार सुधार करने का प्रयास किया जाता रहा । सुधार के इसी तारतम्य में कुछ नये सॉफ्टवेयरों का विकास किया गया । ग्रन्थालयों के लिए सन् 1964 में प्रारम्भ हुई ''मशीनी व्यवस्था पद्धति'' जिसे आई.बी.एम. 1620 मॉडल I पर संचालित किया जाता था, पर सुधार कर सन् 1969 में नये सॉफ्टवेयर के साथ आई.बी.एम. 1602 मॉडल II पर प्रस्तुत किया गया ।

1970 के दशक में प्रसिद्ध संस्था इन्सडॉक (INSDOC) द्वारा विशिष्ट ग्रन्थालयों की आवश्यकता के अनुसार सॉफ्टवेयरों का

विकास प्रारम्भ कर दिया गया । इन सॉफ्टवेयर का आधार मुख्यतः डेटाबेस थे । इनमें से प्रमुख डेटाबेस मेडलार्स था । जिसका निर्माण 1966 में किया गया था ।

सन् 1977 तक कुल 301 डेटाबेस थे । इस समय तक यंत्रेण पठनीय स्वरूपों में अनुक्रमणिकाओं तथा सारांश के डेटाबेस की संख्या लगभग 150 से 200 तक थी । सन् 1986 तक संदर्भ और स्रोतों दोनों प्रकार के डेटाबेस की संख्या 3000 तक पहूँच गयी थी । विश्व के अनेक प्रकाशकों द्वारा वांगमयात्मक स्रोत को डेटाबेस में परिवर्तित कर दिया गया था ।

आजकल तो लगभग सभी ग्रन्थालयों को कम्प्यूटराइज्ड कर डेटाबेस का निर्माण किया जाने लगा है । इसके साथ ही अनेक डेटाबेस ऑन लाइन उपलब्ध हैं । इनका प्रयोग कर अध्येता को अपने प्रश्नों का सही उत्तर प्राप्त हो जाता है ।

ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में अनेक प्रकार के डेटाबेसों का निर्माण किया जा रहा है । इन डेटाबेसों के वर्गीकरण पर भी विद्वानों के अलग-अलग मत रहे हैं । सामान्य रूप से इन्हें वृहत पैमाने पर दो श्रेणियों में रखा गया है ये निम्नप्रकार हैंः-

(1) संदर्भ

(2) स्रोत

आमतौर पर विषय और अभिरूचि के क्षेत्रों की दृष्टि से सभी डेटाबेस सन्दर्भ डेटाबेस ही हैं । व्यवहारिक रूप से डेटाबेस को निम्न आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है ।

1. विषयानुसार डेटाबेस निर्देशिकाएँ,
2. प्रतिवेदन सम्मेलनों की कार्यवाहियों की डेटाबेस निर्देशिकाएँ,
3. समाचार पत्र एवं समाचार सेवाओं के डेटाबेस निर्देशिकाएँ,

4. सामयिकियों एवं न्यूजलेटर्स की डेटाबेस निर्देशिकाएँ,

5. पूर्ण मूल पाठ युक्त डेटाबेस निर्देशिकाएँ,

6. सन्दर्भ डेटाबेस निर्देशिकाएँ,

7. स्रोत डेटाबेस निर्देशिकाएँ,

8. वांगमयात्मक डेटाबेस निर्देशिकाएँ,

9. सारांश सेवाओं की डेटाबेस निर्देशिकाएँ,

10. अनुक्रमणीकरण सेवाओं की डेटाबेस निर्देशिकाएँ,

11. उद्यत एवं त्वरित ऑन लाइन डेटाबेस निर्देशिकाएँ,

12. सार्वजनिक एवं शैक्षणिक ग्रन्थालयों में प्रयुक्त डेटाबेस निर्देशिकाओं,

13. डेटाबेस निर्देशिकाएँ के चयन हेतु डेटाबेस निर्देशिकाएँ,

इनका विवरण निम्नानुसार हैं :-

विषयानुसार डेटाबेस निर्देशिकाओं के वर्ग में ज्ञान के विभिन्न विषयों के आधार पर निर्मित डेटाबेस निर्देशिकाओं को सम्मिलित किया गयाहै । ये डेटाबेस निर्देशिकाएँ विभिन्न विषयों के लिए अलग-अलग बनाई जाती है । विभिन्न विषयों के अनुसार डेटाबेसों का वर्गीकरण निम्नानुसार है -

(i) मानविकी तथा समान्य प्रकरण,

(ii) समाज विज्ञान,

(iii) प्रबन्ध एवं वाणिज्य,

(iv) भौतिकी एवं अभियंत्रिकी,

(v) रसायन विज्ञान,

(vi) आयुर्विज्ञान,

(vii) विधि, इत्यादि

उपरोक्त विषयानुसार डेटाबेस निर्देशिकाओं का विवरण निम्नानुसार हैं :-

मानविकी तथा सामान्य प्रकरणों के क्षेत्र में डेटा बेस निर्देशिकाओं के प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं:-

MARC - मानविकी के क्षेत्र में डेटाबेस के निर्माण में कार्यरत विल्सन लाइन (Wilsonline) द्वारा इस डेटाबेस का निर्माण किया गया है । इसमें मूल अनुक्रमणिकाओं के साथ सन् 1977 से लेकर अब तक के अभिलेखों को सम्मिलित किया गया है ।

East-West Major Project of UNESCO - यूनेस्कों द्वारा इस परियोजना के तहत् तैयार डेटाबेस के अन्तर्गत साहित्यिक कृतियों का अनुवाद कराकर Index Translation के नाम से वांगमय सूचिका डेटाबेस तैयार किया गया ।

Pool's Index to Periodical Literature - ग्रंन्थालय विज्ञान एवं वांगमय सूची के आधार पर लोकप्रियता अर्जित करने वाले विलियम फ्रेडरिक पूल द्वारा तैयार अनुक्रमणिका का डेटाबेस है ।

समाज विज्ञान के डेटाबेस का उपयोग अत्यधिक होता है । विगत कई वर्षों से इस क्षेत्र में डेटा बेसों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है । निम्नलिखित डेटाबेस इस क्षेत्र में अपना अत्यधिक / बहुगुणित महत्व रखते हैं ।

PSYCINFO - नियंत्रित एवं भाषा मिश्रण पद्धति से खोज का यह ऑनलाइन डेटाबेस का एक बेहतरीन उदाहरण है । मुद्रित आकार की तुलना में इस डेटाबेस में 25% अधिक उद्धरण एवं संदर्भ दिये गए हैं ।

Index to Indian Periodicals - नेशनल सोशल साइन्स डाक्यूमेंटेशन सेन्टर NASSDOC जो कि इंडियन कौंसिल ऑफ सोशल

साइंस एण्ड रिसर्च के द्वारा स्थापित की गयी है, ने मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र विषय में 42 भारतीय पत्रिकाओं की सामग्रियों को अनुक्रमणिकाबद्ध कर डेटा बेस तैयार किया है ।

ISID Index Series – Institute for the Studies in Industrial Development, New Delhi द्वारा अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, लोकप्रशासन, जैसे विषयों का ऑनलाइन इन्डेक्स तैयार किया गया है । यह डेटाबेस शोधकर्ताओं के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सूचनाप्रद डेटाबेस है । इसे निकनेट पर प्राप्त किया जा सकता है ।

ISID Index of IJLE – The Indian Journal of Labour Economics द्वारा Institute for the Studies in Industrial Development के साथ मिलकर जर्नल्स के 40 वर्षों सन् 1958 से सन् 1977 तक का इन्डेक्स एवं डेटाबेस तैयार किया गया है ।

World Development Indicators – विश्व बैंक द्वारा वार्षिक रूप से विश्व के सभी देशों में विकास सूचकांक जारी करता है । विश्व बैंक द्वारा इसे वर्ष 1990 से डेटाबेस के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा है । यह सामाजिक विज्ञानों के शोधकर्ताओं के लिए अत्यनत महत्वपूर्ण डेटाबेस है ।

विषयानुसार डेटाबेसों में प्रबन्ध एवं वाणिज्य विषय पर भी अनेक डेटाबेसों का निर्माण किया जाने लगा है । प्रबन्ध एवं वाणिज्य के प्रमुख डेटाबेस निम्नलिखित हैं :-

ABI /INFORM – विक्रय तथा विपणन, व्यापारिक क्षेत्रों और प्रशासनिक क्षेत्रों की 400 पत्रिकाओं की चुनी हुई सामग्रियों की अनुक्रमणिका है, जिसे ऑनलाइन डेटाबेस के माध्यम से सुलभ किया जाता है । उद्धरण सारांश भी दिया जाता है । प्रतिमाह इसे 1600 उद्धरणों तथा सारांशों को प्रस्तुत कर अद्यतन किया जाता है ।

Business Index / Business Periodical Index – व्यवसायिक पत्रिकाओं में छपे आलेखों एवं शोध–पत्रों के डेटाबेस के रूप में इस डेटाबेस का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है ।

Managment Contents – प्रबन्ध विषय में यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण डेटाबेस है । 200 से अधिक देशी एवं विदेशी पत्रिकाओं को इसमें अनुक्रमणिकाबद्ध किया जाता है । लेखा, वित्त, विपणन, लोकप्रशासन, व्यापार एवं प्रबन्ध आदि विषयों के प्रतिवेदनों को इसमें सम्मिलित किया जाता है । इसके साथ–साथ इसमें प्रतिवेदनों की व्याख्या एवं सारांश को भी प्रस्तुत किया जाता है ।

भौतिकशास्त्र एवं अभियांत्रिकी विषय के अन्तर्गत भी अनेकों डेटाबेसों का निर्माण किया गया है । इन डेटाबेसों में सबसे महत्वपूर्ण डेटाबेस इन्टरनेशनल इनफारमेशन सर्विस फॉर फिजिक्स एण्ड इंजीनियरिंग कम्युनिटी (INSPEC) बनाये गए डेटाबेस है । ये डेटा बेस निम्नलिखित हैं –

Physics Abstracts – भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में इन्सपेक द्वारा निर्मित यह सबसे अधिक प्रयुक्त एवं एक विशाल डेटाबेस है ।

Electrical and Electronic Abstracts – इनस्पेक द्वारा तैयार यह एक अन्य डेटाबेस है जो इलेक्ट्रीकल एवं इलेक्ट्रॉनिक विषय से सम्बन्धित पत्रिकाओं का सारांश तथा व्याख्या प्रस्तुत करता है।

Computer and Control Abstracts – इन्सपेक द्वारा तैयार यह तीसरा डेटा बेस कम्प्यूटर एवं कन्ट्रोल एबस्ट्रेक्ट है । यह भी अपने पूर्व दोनों डेटाबेसों की भांति कम्प्यूटर एवं कन्ट्रोल विषय पर प्रकाशित प्रतिवेदनों का सारांश प्रस्तुत करता है ।

उपरोक्त तीनों डेटाबेस इनस्पेक द्वारा प्रकाशित साइंस एवं एबस्ट्रेक्ट्स सीरीज के ए,बी, सी मात्र है । इनमें 2000 पत्रिकाओं

की अनुक्रमणिका भी प्रस्तुत की गई है ।

विषयानुसार डेटाबेसों की कड़ी का अगला अगला महत्वपूर्ण डेटा बेस रसायन विज्ञान से सम्बन्धित है । इस विषय की महत्वपूर्ण डेटा का विवरण निम्नलिखित है ।

CA SEARCH – रसायन विज्ञान के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रयुक्त डेटाबेस CA Search है । इस डेटाबेस का पूरा नाम Chemical Abstracts Search है । इसमें 15,000 पत्रिकाओं तथा रसायन विज्ञान से सम्बन्धित अन्य सामग्रियों को अनुक्रमणिका बद्ध किया जाता है । यह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की डेटा बेस है तथा ऑनलाइन डेटा बेस के रूप में 50 से अधिक भाषाओं में उपलब्ध है । इसमें 70लाख प्रतिवेदनों से सारांश उपलब्ध है । इसे CAS ONLINE Registry File से ऑनलाइन पर खोजा जा सकता है ।

आयुर्विज्ञान विषय के अन्तर्गत भी अनेक डेटाबेसों का निर्माण किया गया है । आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में प्रमुख डेटाबेस निम्नलिखित हैं –

MEDIS – 'मिडिस' मिड डेटा सेन्ट्रल द्वारा प्रस्तुत किया गया एक महत्वपूर्ण सॉफ्टवेयर है । इस डेटाबेस में आयुर्विज्ञान की 50 पत्रिकाओं का पूर्ण मूलपाठ प्रस्तुत करता है । जिसका उपयोग चिकित्सक और विशेषज्ञ ऑनलाइन पर करते हैं ।

Comprehensive Core Medical Library – यह डेटाबेस आयुर्विज्ञान के 25 मैन्युअल, संदर्भ कृतियों, तथा पाठ्यपुस्तकों तथा कुछ प्रतिष्ठित जर्नल एवं अन्य दर्जनों प्रकाशनों का एक पैकेज है । इस डेटाबेस में सम्मिलित किये गये कुछ प्रमुख जर्नल निम्नलिखित हैं ।

(अ) Lancel,

(ब) New England Journal of Medicine,

(स) British Medical Journal,

(द) Annals of Internal Medicine

इस सभी डेटाबेसों की समस्त सामग्री ऑनलाइन पर उपलब्ध है।

AGRIS – कृषि विज्ञान से सम्बन्धित विषयों की नवीनतम अनुसंधानों, विकास एवं तथ्यों का समावेश अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया जाता है । इस डेटाबेस से कृषि विज्ञान एवं इससे सम्बद्ध विषयों की जानकारी विषय विशेषज्ञ एवं अध्येता ऑनलाइन प्राप्त कर सकते हैं ।

BIOSIS – बायोलॉजिकल एवं बायोमेडिकल विषयों के सामग्रियों की विस्तृत रूप से इस डेटाबेस में प्रस्तुत किया गया है । इस डेटाबेस में लगभग 50 लाख संदर्भों की सूचनाओं को प्राप्त किया जा सकता है । इस डेटाबेस में 100 देशों की 9000 सामयिकियों की सामग्री को इस डेटाबेस के माध्यम से ज्ञात किया जा सकता है । इस डेटाबेस को STN International तथा 'BRS' पेज से ऑनलाइन खोजा जा सकता है ।

World of learning Online: www.worldoflearning.com

इसका 53वां संस्करण ऑनलाइन भी उपलब्ध है । जिसमें 2000 अतिरिक्त वेबलिंक्स एवं संस्थानों का विस्तारित कवरेज को सम्मिलित किया गया है इसमें विश्व क्षेत्र, देश, राज्यवार, शहर, संस्था का नाम, संस्था प्रकार, संस्थापना वर्ष, प्रकाशन, वैयक्तिक नाम, विषय विशेषज्ञों आदि अनुसार उपयोक्ता हेतु अभिगम की सुविधा प्रदान की गई है । साथ ही ऑन लाइन संकल्पना, पैटर्न एवं वुलियन पैटर्न द्वारा भी खोजने (Search) की सुविधा प्रदत्त है ।

अन्य विषयों की भांति विधि के क्षेत्र में भी डेटाबेसों का निर्माण किया जाता है । विधि के क्षेत्र में निर्मित डेटाबेसों का वर्णन निम्नानुसार है –

WEST LAW – 'वेस्टला' विधि के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण डेटाबेस है । इस डेटाबेस में अमेरिकी न्यायालयों में किए गये फैसलों, दिये गए अभिमत तथा अध्यादेशों आदि को प्रस्तुत करता है । जिन्हें ऑन लाइन खोजा, पढ़ा एवं उपयोग उपयोग में लाया जाता है । इस डेटाबेस में शामिल किये निर्णयों, अभिमतों तथा अध्यादेशों का पूर्ण मूल पाठ यह प्रस्तुत करता है ।

LEXIS – 'लेक्सिस' विधि सेवा का एक महत्वपूर्ण डेटाबेस है । इस डेटाबेस में भी 'वेस्टला' की भाँति संयुक्त राज्य अमेरिका के उच्चतम न्यायालय, राज्य न्यायालयों के निर्णयों, अध्यादेशों तथा अन्य अभिमतों एवं संहिताओं को अक्षरशः वक्तव्यों को, पूर्ण मूल पाठों में प्रस्तुत किया जाता है ।

विषयों की भांति डेटाबेसों का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण वर्ग प्रतिवेदन तथा सम्मेलनों की कार्यवाहियों के डेटाबेस से संम्बन्धित है । प्रतिवेदन तथा सम्मेलनों की कार्यवाहियों को प्राप्त करना भी अत्यन्त कठिन होता है । इसका प्रमुख कारण यह है कि इनकी संख्या अत्यन्त कम होती है । इस दिशा में प्रमुख डेटाबेस निम्नलिखित है –

ERIC – समाज विज्ञान के क्षेत्र में प्रतिवेदनों एवं सम्मेलनों की कार्यवाही का डेटाबेस तैयार करने के क्षेत्र में एज्यूकेशन रिसोर्सेज इन्फॉरमेशन सेन्टर की भूमिका अत्यन्त सराहनीय रही है । सेन्टर द्वारा ERIC के नाम से तैयार डटाबेस के द्वारा समाज विज्ञान के क्षेत्र में अनेक प्रतिवेदनों को इस डेटाबेस में शामिल किया गया है ।

NTIS – विज्ञान विषयों में प्रतिवेदनों की संख्या अत्यन्त विशाल है । वृहत संख्या में सृजित प्रतिवेदनों पर डेटाबेस तैयार करना अत्यन्त कठिन कार्य था । किन्तु नेशनल टेक्निकल इनफॉरमेशन सर्विस ने इस कार्य को सम्पादित करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान दिया है । संस्था द्वारा NTIS डेटाबेस को दो खण्डों में तैयार किया गया है । जो क्रमशः निम्नानुसार है –

(अ) Government Report Announcements (1946 to date)

(ब) Government Report Index (1965 to date)

इन दोनों रूपों में लगभग 70,000 प्रतिवेदनों का सारांश है । इन डेटाबेसों में विज्ञान से सम्बन्धित 26 विषयों और क्षेत्रों की सूचनाएँ होती हैं ।

प्रतिवेदनों तथा सम्मेलनों की तरह सूचना का एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र समाचार–पत्र है । इस दिशा में अनेक समाचार पत्र एवं समाचार सेवा के डेटाबेस है तथा वे ऑन लाइन पर उपलब्ध है । समाचार–पत्र एवं समाचार सेवाओं की प्रमुख डेटाबेस का विवरण निम्नलिखित हैं –

www.ddnews.com

भारत में प्रसार भारती के प्रमुख टी.व्ही. चैनल दूरदर्शन द्वारा प्रसारित समाचारों का यह डेटाबेस है । इसमें दैनिक समाचारों का विवरण रहता है । इसके अतिरिक्त इसमें देश भर के दैनिक समाचार पत्रों की सुर्खियों को भी प्रदर्शित किया जाता है ।

Dow Jones News / Retrieval

इसमें 20 डेटाबेसों का प्रयोग किया जाता है । इसके 4 भाग है । यह डेटाबेस चार भागों में विभक्त है । इस डेटाबेस में मुख्यता व्यापारिक समाचारों की प्रधानता रहती है ।

www. hindustan times.com

भारत के प्रमुख समाचार संस्थान हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह द्वारा अपने समाचार पत्रों की एक डेटाबेस तैयार की जाती है । इस डेटाबेस में पूर्ण मूल पाठ सहित हिन्दुस्तान टाइम्स के सभी संस्करणों का विवरण रहता है ।

समाचार पत्र और सेवाओं की तरह ही समाचार और टिप्पणियों का एक महत्वपूर्ण स्रोत सामयिकियां और न्यूजलेटर्स हैं । सामयिकियां और न्यूजलेटर्स के क्षेत्र में महत्वपूर्ण डेटा बेसों का विवरण निम्नानुसार है –

MAGAZINE ASAP

सन् 1983 से प्रारंभ इस डेटाबेस में 120 प्रकाशनों के पूर्ण मूलपाठ को ऑन लाइन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है । इस डेटाबेस द्वारा मैगजीन इन्डेक्स तथा ट्रेड इन्डस्ट्री से लोकप्रिय आख्याओं को चुनकर पूर्ण मूलपाठों सहित प्रस्तुत किया जाता है । मैंगजीन इन्डेक्स के 400 तथा अन्य सेवाओं के सत्तर शीर्षकों से 50 आख्याओं की सामग्री को ऑन लाइन प्रस्तुत करने का काम यह डेटाबेस करता है ।

MEDIS

मीड डेटा सेन्ट्रल द्वारा संचालित मेडिस डेटाबेस आयुर्विज्ञान की पचास पत्रिकाओं की पूर्ण मूलपाठ ऑन लाइन पर प्रस्तुत करता है ।

NEXIS

उपरोक्त वर्णित समाचार पत्रों के अतिरिक्त नेक्सिस अनेक सामयिकी और न्यूजलेटर्स को भी ऑन लाइन उपलब्ध कराता है । यह सेवा 50 लोकप्रिय पत्रिकाओं, 70 व्यापारिक एवं तकनीकी

पत्रिकाओं के पूर्ण मूलपाठ ऑनलाइन पर उपलब्ध करता है । नेक्सिस द्वारा ऑनलाइन पर उपलब्ध कराये जाने वाली प्रमुख पत्रिकाएँ हैं –

1. Time,
2. Fortune,
3. Money,
4. Discover,
5. Sports illustrated,
6. People and life,
7. Scientific American,
8. Economist,
9. Forbs,
10. Newsweek,
11. Consumer Reports,
12. Byte,
13. Washington Quarterly,
14. U.S. News and world Report,
15. Coal Age and Electronics,
16. Chemical Week

NESNET

'नेशनेट' औद्योगिक समाचार वृत्तों की एक महत्वपूर्ण डेटाबेस है । इसमें दो सौ पचास औद्योगिक समाचार वृत्तों को ऑनलाइन पर प्रस्तुत किया जाता है ।

डेटाबेस निर्देशिकाओं की एक महत्वपूर्ण श्रेणी पूर्ण मूलपाठ युक्त डेटाबेसों की श्रेणी होती है । पूर्ण मूल पाठ युक्त डेटाबेसों से तात्पर्य उन सभी डेटाबेसों से है जो प्रदर्शित सूचना या समाचार वृत्तों को

पूर्णरूप से एवं अक्षरशः मूल रूप में डेटाबेस द्वारा उपलब्ध कराना । वास्तव में पूर्ण मूलपाठ डेटाबेस सभी प्रकार के डेटाबेसों में उपलब्ध हैं । पूर्ण मूल पाठ युक्त डेटाबेसों के प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं–

1. American Encylopedia
2. Time Magazine
3. NEXIS

पूर्ण मूल पाठ युक्त निर्देशिकाओं की भांति सन्दर्भ डेटाबेस निर्देशिकाएँ अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्देशिका है । वास्तव में इन्हें यदि ध्यान से देखा जाए तो विषय की दृष्टि से ये सभी डेटाबेस संदर्भ डेटाबेस हैं ।

डेटाबेस के बृहत वर्गीकरण के अनुसार एक अन्य महत्वपूर्ण वर्ग स्रोत डेटाबेस है । स्रोत डेटाबेस से तात्पर्य उन डेटाबेसों से है जिनका उपयोग अध्येता सूचना ज्ञात करने के लिये स्रोत के रूप में करते हैं । इन डेटाबेसों में प्रमुख रूप से अनुक्रमणिका तथा वांगमय सूचियों को शामिल किया जाता है ।

डेटाबेसों के वर्गीकरण में एक महत्वपूर्ण वर्ग वांगमय सूचियों का वर्ग है । वांगमय के डेटाबेस निर्माण में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बड़े प्रयास किये गये हैं इन प्रयासों के परिणामस्वरूप अनेक वांगमय सूचियों के डेटाबेसों का निर्माण हुआ है । इनमें प्रमुख डेटाबेसों का निर्माण हुआ है जो वर्तमान में उपलब्ध है । इनमें से कुछ प्रमुख डेटाबेसों के उदाहरण निम्नलिखित हैं –

Books in Series

वाउकर द्वारा निर्मित इस वांगमय सूची का डेटाबेस तैयार किया गया है । यह डेटाबेस " माइक्रोफिस एवं ऑन लाइन" पर उपलब्ध है । इसमें 7,00,000 आख्याओं का अभिगम माइक्रोफिस

पर उपलब्ध है । यह सीडी रोम में भी उपलब्ध है ।

ABPR

अमेरिकन बुक पब्लिशिंग रिकार्ड में शामिल 17 लाख आख्याओं को इस डेटाबेस में शामिल किया गया है । जो लेखक, आख्या, तथा विषय अनुक्रमणिकाओं में विभाजित है । यह वांगमय सूची अनेक दृष्टिकोणों से ग्रन्थालयों के लिये अति आवश्यक सूचना स्रोत हैं ।

Bibligraphy of Doctoral Thesis in Social Science

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिष्द (ICSSR) द्वारा समाजविज्ञान संकाय में डॉक्टरल थीसिस पर एक महत्वपूर्ण डेटाबेस है । इसे प्रतिवर्ष अद्यतन किया जाता है । इसमें विषयवार सूचनाएँ संकलित रहती है ।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित डॉक्टरल शोध प्रबंधों को अनेक भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा प्रकाशित वांगयम सूची में सम्मिलित किया जाता है जिसे ऑनलाइन उपलब्ध करने हेतु डेटाबेस इनफ्लिबनेट के सहयोग से तैयार किया जा रहा है । इस कड़ी में जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर की सन् 1964 से 1992 की अवधि में मान्य किये गये शोध प्रबन्धों की डेटाबेस ऑन लाइन इनफ्लिबनेट पर उपलब्ध है ।

वांगमय सेवाओं के समान ही ग्रन्थालय विज्ञान में सूचना और संदर्भ प्राप्त करने के लिए सारांश सेवाओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है । सारांश सेवाओं को ऑनलाइन प्रस्तुत करने के उद्देश्य से अनेक सारांश सेवाओं की डेटाबेस निर्देशिकाओं का निर्माण किया गया है । ये डेटाबेस निर्देशिकाएँ विषय वार अलग–अलग तैयार किये गये हैं । इन डेटाबेस निर्देशिकाओं को प्रत्येक वर्ग के साथ दर्शाया गया है ।

वांगमय सेवा तथा सारांश सेवाओं की भांति सूचना तथा सन्दर्भ के लिए अनुक्रमणीकरण सेवाओं का भी अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है । यह किसी आलेख पुस्तक तथा प्रलेख में निहित नामों अथवा विषयों को क्रमबद्ध करने की एक तालिका होती है । इस तालिका के निम्नस्थान पर वे नाम तथा विषय होते हैं उनका संकेत किया गया होता है । इन अनुक्रमणिकाओं का डेटाबेस तैयार करने का कार्य भी काफी किया गया ।

अनुक्रमणिकाओं की प्रमुख डेटाबेसों के उदाहरण निम्नलिखित हैं।

Applied Science and Technology Index

व्यवहारिक विज्ञान एवं तकनीकी विषयों की यह एक महत्वपूर्ण अनुक्रमणिका है जिसमे इन विषयों पर अनुसंधान कर रहे शिक्षार्थियों को भी विशिष्ट सामग्री प्राप्त करने में सहायता प्राप्त होती है ।

ISID Index Series

इन्स्टीट्यूट फॉर स्टडीज इन इन्डस्ट्रीयल डेव्हलपमेंट द्वारा ऑन लाइन इंडेक्स के रूप में पचास से अधिक भारतीय जर्नलों की अनुक्रमणिका नेशनल इनफॉरमेशन सेन्टर के माध्यम से प्रस्तुत की है ।

Index to International Statistics ITS

विश्व की एक प्रमुख सांख्यिकीय अनुक्रमणिका है जिसका विस्तार क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय है । इस अनुक्रमणिका में विश्व की 100 प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय शासकीय संगठनों द्वारा प्रकाशित आर्थिक, जननांकिकी, औद्योगिक, सामाजिक सांख्यिकी का विवरण दिया गया है ।

डेटाबेस निर्देशिकाओं का एक महत्वपूर्ण वर्ग उद्यत्त एवं त्वरित ऑन लाइन सेवा का है । इस सेवा का उपयोग उद्यन एवं त्वरित संदर्भ सेवा तथा प्रश्नों के समाधान हेतु किया जाता है ।

ऑन लाइन स्वरूप में मूलपाठों सहित डेटा बेसों निर्देशिकाऐं तथा वांगमय सूचियों की संख्या इस आरूप में नित्य दिनोंदिन बढ़ती जा रही है । परिणामतः ऑन लाइन खोज के माध्यम से त्वरित एवं उद्यत संदर्भ सेवा के अनेक पक्षों काभी विस्तार एवं उपयोग किया जा रहा है । उद्यत संदर्भ की खोज एवं प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने हेतु ऑनलाइन डेटा बेसों के अत्यधिक प्रचलन का ही परिणाम यह है कि Newsearch अथवा NEXIS जैसी ऑनलाइन सेवाओं के माध्यम से कुछ ही घण्टों में उस सूचना को सरलतापूर्व ज्ञात किया जा सकता है । जिसे न्यूयार्क टाइम्स में प्रकाशित किया गया है ।

उद्यत एवं त्वरित संदर्भ सेवा तथा प्रश्नों के समाधान हेतु निम्न डेटाबेस विशेष उल्लेखनीय है –

Book Review Index

मुद्रित प्रकाशनों तथा अनेक संचयी अंको से संग्रहित 15 वर्षों की सूचना ऑनलाइन के माध्यम से यह डेटाबेस उपलब्ध कराता है ।

Biography and Genealogy Mater Index

इस डेटाबेस में लगभग 50 लाख नामों तथा किस स्रोत से इन नामों को सम्मिलित किया गया है, की अतिरिक्त सूचना प्राप्त हो सकती है को संदर्भों के साथ दियागया है । जीवन चरित्र, नामों की वर्तनी तथा संदर्भ के तथ्यों की जानकारी हेतु यह एक महत्वपूर्ण डेटाबेस है ।

Encyclopedia of Association

इस डेटाबेस में लगभग बीस हजार संस्थाओं का विवरण है । तीन खण्डों में मुद्रित यह डेटाबेस अब ऑन लाइन भी उपलब्ध है तथा इसके विवरणों को विषय तथा नामों के आधार पर प्राप्त किया जा सकता है ।

उद्यत एवं त्वरित संदर्भ सेवा के बाद डेटाबेसों का एक महत्वपूर्ण वर्गीकरण सार्वजनिक एवं शैक्षणिक ग्रन्थलयों में प्रयुक्त डेटाबेसों का है । सार्वजनिक एवं शैक्षणिक ग्रन्थालयों में प्रयुक्त प्रमुख डेटाबेस के उदाहरण निम्नलिखित है –

PSYC / NFO

ग्रन्थालयों में प्रयुक्त यह एक महत्वपूर्ण डेटाबेस है इसमें मनोविज्ञान विषय के अनेक सार उपलब्ध है । इसमें मनोविज्ञान विषय के अतिरिक्त भी अनेक क्षेत्रों की सामग्री का भी समावेश होता है ।

National News Paper Index

यह समाचार पत्रों के मूलपाठों को प्रस्तुत करने वाला महत्वपूर्ण डेटाबेस है ।

ERIC

एज्युकेशन रिर्सोस इनफॉरमेशन सेन्टर द्वारा प्रस्तुत इस डेटाबेस का उपयोग इसकी विस्तृत और व्यापक सूचना सामग्री के कारण ग्रन्थावलियों में अत्याधिक किया जाता है ।

ग्रन्थालयों में प्रयुक्त डेटाबेस के पश्चात डेटाबेसों का एक महत्वपूर्ण वर्ग डेटाबेस के चयन से सम्बन्धित है । वास्तव में डेटाबेसों की अधिकता ने इस समस्या को उत्पन्न कर दिया है कि किस डेटा बेस का उपयोग किस समस्या के समाधान के लिए किया

जाए । डेटाबेस के चयन के लिए निम्नलिखित डेटाबेसों क उपयोग उपयुक्त माना जाता है –

ORBIT

यह सिस्टम डेवलमेंट कारपोरेशन द्वारा विकसित एक महत्वपूर्ण डेटा बेस है । यह डेटाबेस चयन सेवा हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण डेटाबेस माना जाता है ।

BRS / CROSS

इसमें एक ही पद से 3026 प्रलेखों का विवरण ज्ञात हो जाता है ।

Wilson Online

यह चयन सेवा हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण डेटाबेस है । इस डेटाबेस के द्वारा यह आसानी से पता लगाया जा सकता है कि इच्छित सूचना की प्राप्ति हेतु किस डेटाबेस का कौन सा पद देखना चाहिए ।

www. inflibnet.ac.in

पुस्तकालय एवं सूचना नेटवर्क केन्द्र (इनफ्लिबनेट), अहमदाबाद जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत्त अन्तर विश्वविद्यालय केन्द्र है । भारतीय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में ग्रन्थालयीन संसाधनों का केन्द्रीकरण एवं विकेन्द्रीकरण करने की प्रक्रिया एवं दिशा में अपनी अहम् भूमिका का निर्वहन कर रहा है । यह केन्द्र भारतीय विषय विशेषज्ञों, शोध प्रबंधों, पुस्तकों, धारावाहिक प्रकाशनों, जर्नल्स, शोध परियोजनाओं, विश्वविद्यालयीन सूचना आदि का यूनियन डेटाबेस तैयार करने की दिशा में सतत् प्रयत्नशील है । यह केन्द्र अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्रों से सम्पर्क कर उनके सहयोग से भारतीय शोधार्थियों एवं विषय विशेषज्ञों को उनकी सूचना सम्बंधी मांग की

पूर्ति करने की दिशा में भी सतत् प्रयत्नशील है । उदाहरणार्थ 'ओ. सी.एल.सी.', 'ई.बी.एस.सी.ओ.' आदि के सौजन्य से निशुल्क सूचना प्राप्ति के अवसर प्रयोगात्मक एवं ट्रायल आधार पर वर्तमान में प्रदान किया जा रहा है । 'ओ.सी.एल.सी.' के सौजन्य के अन्तर्गत 85 डेटाबेस हैं जो सभी प्रमुख विषय क्षेत्रों से सम्बंधित सर्वाधिक सूचनाओं को सम्मिलित / सन्निहित करते हैं, को कवर करते हैं । इस अपरिमित संसाधन से फर्स्ट सर्च के अन्तर्गत अध्येता अपनी वांछित सूचना प्राप्त कर सकते हैं । इसी प्रकार 'ई.बी.एस.सी.ओ.' प्रकाशन विश्व के ग्रन्थालयीन संदर्भ आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु पूर्ण पाठ एवं वांगयात्मक डेटाबेसों का विस्तृत क्षेत्र ऑनलाइन अध्येताओं को पृथक करता है । इसमें एकेडमिक सर्च प्रीमियर के अन्तर्गत 3460 विद्वत प्रकाशनों के पूर्व पाठ एवं टेबल ऑफ कन्टेन्ट्स (टी.ओ.सी.) प्रीमियर के अंर्तगत 23,000 अति नवीनतम प्रकाशित जर्नल्स के कन्टेन्ट्स की तालिका प्रदत्त करता है जिसमें 1.3 मिलियन अभिलेख सन्निहित हैं । इन डेटाबेसों को अधोलिखित नेटवर्क पते से प्राप्त किया जा सकता है :

http: //trial/ epnet.com

www. oclc.org/contacts

DIALINDEX

इस डेटाबेस से उपयुक्त डेटाबेस के चयन का कार्य सम्पन्न किया जाता है । इसकी विधि DIALOG जैसी है । इसमें सभी डेटाबेसों के विषय अभिगम प्राप्त हो जाते हैं ।

www.nationalgeography.com

इस डेटाबेस में जीव विज्ञान, विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में चल रही नवीन तकनीक एवं खोजों का समावेश किया जाता है । यह

ऑनलाइन पर उपलब्ध है ।

www.discovery.com

इस डेटाबेस में जीव विज्ञान, विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में चल रही नवीन तकनीक एवं खोजों का समावेश किया जाता है । यह ऑनलाइन पर उपलब्ध है ।

प्रस्तुत अध्ययन में डेटाबेस तथा इनकी निर्देशिकाओं को यथा संभव समाहित करने का प्रयास किया गया है । डेटाबेस संबंधी अधिकृत निर्देशिकायें अस्तित्व में प्रकाशित नहीं हुयी है फिर भी डेटाबेसों को विभिन्न सर्च इंजन जैसे याहू, अल्ताविस्टा इत्यादि के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है ।

अध्याय-१०

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के लिए तृतीयक सूचना स्रोत तथा उनकी उपादेयता

अध्याय -१०

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के लिए तृतीयक सूचना स्रोत तथा उनकी उपादेयता

ज्ञान तथा सूचना सामग्रियों के संग्रह, प्रक्रियाबद्धकरण व्यवस्था प्रसार तथा ज्ञान अथवा सूचना के स्थनान्तरण की श्रृंखला में उसके उपयोगकर्ता अविभाज्य अंग व अन्तिम कड़ी होते हैं । इनके उपयोगार्थ एवं लाभर्थ ही ग्रन्थालयों एवं सूचना केन्द्रों की स्थापना तथा संचालन किया जाती है । संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा सूचना के प्रसार के लिए गठित युनीसिस्ट के दर्शन का मूल लक्ष्य भी सूचना उपयोगकर्ताओं की सहायता तथा सेवा करना है । आमतौर पर सभी देशों में चाहे वह अल्पविकसित हो, या विकासशील या विकसित हो, वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी सूचना अथवा ज्ञान की सामग्रियों का संग्रह प्रक्रियाबद्धकरण, इस लक्ष्य से करता है कि उपयोगकर्ता उनसे लाभान्वित हो सके । ज्ञान की इन सामग्रियों में देश तथा विदेश में हो रहे नवीन सूचनाओं का विकास तथा पूर्व में प्रचलित सूचनाओं का विस्तृत विवरण रहता है । अल्पविकसित और विकासशील देशों में विकास प्रकिया का मूल मंत्र ये सूचनाएँ ही होती है । यही कारण है कि इन सूचनाओं के संग्रहरण पर इन देशों द्वारा एक बड़ी राशि खर्च की जाती है । इसके साथ ही इन सूचनाओं के प्रसार की व्यवस्था भी की जाती है । इन सब व्यवस्थाओं के बावजूद यह दृष्टिगत होता है कि संग्रहित एवं उपलब्ध वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी सूचना का सार्थक एवं अधिकाधिक उपयोग नहीं हो पाता है ।[1]

वास्तव में इन सूचनाओं का सही उपयोग न हो पाना अनेक कारणों

---

[1] त्रिपाठी, एस.एम. ष्प्रलेखन एवं सूचना सेवायें तथा नेटवर्क, खण्ड–1, प्रलेखन एवं सूचना सेवायें, पृ 367

का परिणाम है । ग्रन्थालयों तथा सूचना केन्द्र में अव्यवस्था तथा उपयोगकर्ताओं की अज्ञानता दो बड़े कारण माने जाते हैं । यही कारण है कि युनेस्कों जैसी संस्था द्वारा सूचना प्रसार हेतु बनाये गये यूनेस्कों जनरल इनफॉरमेशन प्रोग्राम के अन्तर्गत प्रमुख रूप से उपयोगकर्ताओं के प्रशिक्षण पर ज्यादा बल दिया गया है । प्रस्तुत अध्ययन का एक प्रमुख उद्देश्य सूचना के उपयोगकर्ताओं के लिए तृतीयक स्रोतों की उपादेयता का निर्धारण करना है । प्रस्तुत अध्ययन के इस भाग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के लिये तृतीयक सूचना स्रोतों तथा उनकी उपादेयता का मूल्यांकन करना है ।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ता कौन–कौन से है इस तथ्य को मूल्यांकन से पूर्व स्पष्ट करना अत्यन्त आवश्यक है । सूचना के उपयोगकर्ताओं के स्वरूप और प्रकारों को सूचना विज्ञान के विशेषज्ञों द्वारा सुनिश्चित कर श्रेणीबद्ध किया गया है जिसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के स्वरूप पर विस्तृत विवरण उपलब्ध है । विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं का आम तौर पर निम्नलिखित श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता हैः–

1. वैज्ञानिक और विशेषज्ञ* वैज्ञानिक आर्थिक सहकारिता एवं विकास संगठन ने प्रथम प्रकार की श्रेणी में उन वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगिकी सूचना के उपयोगकर्ताओं को माना है, जो सूचना का सृजन करते हैं और सूचना का उपयोग करते हैं और इसके आधार पर अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदत्त करते हैं ।

कोई भी वैज्ञानिक व्यक्तिगत रूप से यह जानने का प्रयास करता है कि सम्बन्धित विषय पर पूर्व क्या कार्य में किया गया है और किस प्रकार का सहित्य प्रकाशित एवं उपलब्ध है, किस प्रकार से उस स्रोत सामग्री को प्राप्त किया जाये । इसकी जानकारी की प्राप्ति के प्रयास में उसके सम्मुख समस्याएँ उत्पन्न होती हैं ।

अध्येता के इस जानकारी और खोज में सहायता प्रदान करने के लिए अनेक साधन, उपकरण, और सेवाएँ उपलब्ध हैं । लेकिन ऐसा पाया गया है

* यहाँ विशेषज्ञ से तात्पर्य विषयविशेषज्ञ है ।

कि उनका पूर्ण लाभ उठाने की जानकारी अथवा उनका उपयोग कर अपना लक्ष्य प्राप्त करने की जानकारी उसे नहीं है। जब उसे सूचना को प्राप्त करने का साधन ज्ञात हो जाता है अथवा उसे वांछित सूचना प्राप्त हो जाती है तो उसके समक्ष दूसरी समस्या उत्पन्न होती है जो उस सूचना सामग्री की उपादेयता तथा महत्व की जानकारी की स्थिति से होती है, अर्थात प्राप्त सूचना उसके उद्देश्य की पूर्ति में सहायक सिद्ध हो सकती है आथवा अनावश्यक है, को सुनिश्चित करना भी सरल नहीं होता है । तीसरी समस्या इस तथ्य की जानकारी होती है कि क्या उस सूचना को उससे नवीनतम सूचना ने पुराना अप्रचलित सिद्ध कर दिया है या नहीं अथवा क्या उस सूचना में कुछ त्रुटि है अथ्वा त्रुटिरहित है । चौथी समस्या इस तथ्य के सम्बन्ध में उत्पन्न होती है कि क्या उस सूचना प्रलेख की कोई समीक्षा की गई है अथवा नहीं । जिससे यह ज्ञात किया जा सके । पाचंवी समस्या उससे सम्बन्धित समीक्षात्मक/ आलोचनात्मक सूचना स्रोतों की जानकारी की होती है जिससे वांछित एवं प्राप्त सूचना की उपादेयता को ज्ञात किया जा सके । इस दिशा में उपयुक्त शिक्षण–प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रारंम्भिक अवस्था में तो पड़ती ही है बल्कि विशेषज्ञों के कार्य की अवधि में भी इसकी जानकारी की आवश्यकता उत्पन्न होती है ।

2. अभियंता – अभियंताओं को द्वितीय श्रेणी के उपयोगकर्ताओं में रखा गया है जो वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी सूचना का उपयोग आधार सामग्रियों की व्याख्या, नवीन उपकरणों यंत्रों के अभिकल्पों को तैयार करने अथवा प्रौद्योगिकी समस्याओं के निदान करने में एक साधन और मार्गदर्शिका के रूप में करती है ।

प्रौद्योगिकविद् – सूचना के उपयोगकर्ताओं को सूचना प्राप्त करने में अनेक ऐसी कठिनाइयों का अनुभव करना होता है जो सूचना के स्वामित्व की प्रकृति, स्पर्धात्मक उद्यमों की सूचना की सहभागिता में उदासीनता, सूचना प्रणाली एवं सेवाओं के शुल्क तथा व्यय, औद्योगिक प्रबन्धकों के सूचना संग्रह करने की प्रवृतियाँ तथा अनौपचारिक सूचना के स्रोत जैसे प्राविधिक प्रतिनिधियों के व्यक्तिगत सम्पर्क, औद्योगिक विक्रय साहित्य आदि

जो औपचारिक साहित्य की ही भांति महत्वपूर्ण होते हैं, आदि सम्बन्धित होती हैं।

इस प्रकार की श्रेणी में आयुर्विज्ञान के विशेषज्ञों चिकित्सकों को भी रखा जा सकता है जो आयुर्विज्ञान और औषधियों के साहित्य का उपयोग नवीनतम उपचारों, औषधियों तथा उनके निर्माण और उपयोग से सम्बन्धित सूचना की खोज करते हैं ।

3. प्रशासक या प्रबन्धक, या नियोजक या नीति–निर्धारक–सूचना उपयोगकर्ताओं की तीसरी श्रेणी में ऐसे उपयोगकर्ताओं को रखा गया है जो प्राविधिक सूचना का उपयोग करते हैं जिससे उन्हें आवश्यक निर्णयों को लेने में सहायता प्राप्त हो सके । ऐसी सूचना अनेक ढंग से पुर्नव्यवस्थित की गई होती है । किसी प्रमुख प्रौद्योगिकीय निर्णय पर पहुँचने के लिए राजनीतिक अभिमत या जनमत को समझने और सुनिश्चित करने के लिए राजनीतिज्ञ भी अनेक प्रकार की सूचना का उपयोग करते हैं ।

इस प्रकार की सूचना की प्राप्ति तथा उपयोग में जो कठिनाई उत्पन्न होती है वह उपयुक्त तथा तात्कालिक महत्व की दृष्टि से आवश्यक होती है जिसमें वास्तविक सूचना को सुनिश्चित करना सरल नही होता है और इसे पहले से ही सुनिश्चत नहीं किया गया होता है ।

ऐसी स्थिति अनेक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्याओं के कारण उत्पन्न होती है । यदि वांछित सूचना को सुनिश्चत कर भी लिया जाय तो उसे प्राप्त करना कठिन होता है । परिणामतः प्रबन्ध सूचना प्रणाली को विकसित किया गया है जिससे समस्याओं का निदान किया जा सके और उपयुक्त एवं वांच्छित निर्णय लिया जा सके ।

इसमें डेटा और निर्णय में तर्कपूर्ण सम्बन्धों के आधार पर सूचना को सुलभ या प्राप्त करने की विधि या उपकरण विकसित किया गया है यद्यपि यह प्रणाली का ही अंग है तथापि यह डेटा बैंक तथा प्रलेख पुर्नप्राप्ति प्रणालियों से भिन्न है ।

4. अप्राविधिक सूचना उपयोगकर्ता – चौथी श्रेणी में उन सूचना

–उपयोगकर्ताओं को रखा गया है जिन्हें आप्राविधिक सूचना–उपयोगकर्ता कहा गया है । इन्हें भी वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी सूचना की आवश्यकता होती है जो उपयुक्त ढंग से प्रस्तुत किया गया हो और उपलब्ध भी हो इसकी आवश्यकता ऐसे उपयोगकर्ताओं को सामाजिक स्थिति तथा गति को समझने और अध्ययन करने के लिए होती है ।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ता के स्वरूप में काफी भिन्नता है । ये उपयोगकर्ता अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप तृतीयक सूचना स्रोतों का उपयोग करते हैं । तृतीयक सूचना स्रोतों की उपयोगिता क्या है? यह ज्ञात करने के उद्देश्य से इन सभी प्रकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं का सर्वेक्षण किया गया । इस सर्वेक्षण में 200 व्यक्तियों का साक्षात्कार लिया गया । इन व्यक्तियों का साक्षात्कार लेते समय एक प्रश्नावली का प्रयोग किया गया जिसका विवरण निम्नानुसार है –

1. नाम
2. पता
3. व्यवसाय
4. शैक्षणिक योग्यता
5. क्या आप अपने अध्ययन में तृतीयक सूचना के स्रोतों का प्रयोग करते हैं ?
6. यदि हॉं तो कौन–कौन से ?
7. तृतीयक सूचना स्रोतों की जानकारी कहॉं से प्राप्त हुई ?
8. तृतीयक सूचना स्रोत के उपकरण आपके अध्ययन एवं शोध के दौरान किस रूप में उपयोगी रहे हैं ?

उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए जिन 200 विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं का सर्वेक्षण किया गया उनका विवरण तालिका

10.1 में प्रस्तुत किया गया है ।

तालिका 10.1

सर्वेक्षित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ता सूचना प्राप्तकर्ताओं का विवरण

क.सं.	विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ता	संख्या
1.	वैज्ञानिक और विशेषज्ञ	50
2.	अभियंता	50
3.	प्रशासक और नीति निर्माता	50
4.	अप्रविधिक उपयोगकर्ता	50
	योग	200

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोग के स्वरूप के आधार पर चार भागों में वर्गीकृत कर सर्वेक्षण किया गया है । यह सर्वेक्षण निम्नलिखित ग्रन्थालयों में सामान्यतः सूचना की प्राप्ति हेतु आने वाले विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं का साक्षात्कार लेकर किया गया है ।

1. केन्द्रीय ग्रन्थालय, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर
2. माधवराव सिंधिया विज्ञान महाविद्यालय, ग्वालियर
3. योजना आयोग, नई दिल्ली
4. माधव इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी एण्ड सांइस, ग्वालियर
5. शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, ग्वालियर
6. महाराणा प्रताप कॉलेज ऑफ टेक्नॉलॉजी, ग्वालियर
7. इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्फॉरमेशन टेक्नॉलॉजी एण्ड मैनेजमेंट, ग्वालियर
8. रेलवे इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
9. गजराराजा मेडीकल कॉलेज, ग्वालियर

10. मध्य प्रदेश इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडीकल साइंसेज, केन्सर हॉस्पीटल परिक्षेत्र, ग्वालियर

11. आई.टी.एम., ग्वालियर

12. डी.आर.डी.ओ., ग्वालियर

13. वसुन्धराराजे होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वालियर

14. बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय ग्रन्थालय, झांसी

उपरोक्त सभी संस्थानों के ग्रन्थालयों में सूचना प्राप्ति हेतु आनेवाले उपरोक्त विभिन्न वर्गों (विज्ञान और प्रौद्योगिकी) के उपयोगकर्ताओं से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में प्राप्त तथ्यों को ग्रन्थालयों के आधार पर तीन भागों में विभाजित किया गया है । ये वर्ग निम्नलिखित हैं –

1. सामान्य ग्रंथालय,

2. डिजिटल ग्रंथालय

3. इसके अतिरिक्त कुछ सूचना प्राप्तकर्ता ऐसे भी थे जो अपनी स्वयं की पुस्तकालय रखते थे तथा अन्य आधुनिक साधन जैसे कम्प्यूटर का उपयोग करते हैं । इन्हें व्यक्तिगत ग्रन्थालयों के उपयोगकर्ता के नाम से वर्गीकृत किया गया है ।

सर्वेक्षित सूचना प्राप्तकर्ताओं में उपरोक्त तीनों वर्गों की संख्या को तालिका 10.2 में प्रदर्शित किया गया है –

तालिका 10.2

सर्वेक्षित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ता सूचना प्राप्तकर्ताओं का वर्गीकरण

क्र. सं.	विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ता	ग्रन्थालयों के वर्ग			योग
		सामान्य	डिजिटल	व्यक्तिगत	
1.	वैज्ञानिक और विशेषज्ञ	05	20	25	50
2.	अभियंता	15	20	15	50
3.	प्रशासक और नीति निर्माता	15	25	10	50

4.	अप्रविधिक उपयोगकर्ता	30	10	10	50
	योग	65	75	60	200

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह तथ्य स्पष्ट है कि वर्तमान में डिजिटल गव्थालयों का प्रयोग विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ता सूचना प्राप्तकर्ताओं में अधिक है । इसका प्रमुख कारण यह है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के पास आधुनिक कम्प्यूटर अधिकांशतः होते हैं जिनके परिणामस्वरूप ये सभी उपयोगकर्ता कम समय में अधिक सूचना प्राप्त करने के उद्देश्य डिजिटल लाइब्रेरी तथा इन्टरनेट सुविधाओं का प्रयोग करते हैं । तालिका से स्पष्ट है कि डिजिटल ग्रन्थालय का प्रयोग पिचहत्तर 75 सर्वेक्षित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ता करते हैं जो कुल सर्वेक्षित व्यक्तियों की संख्या का 37.5% है । इसी तरह सामान्य ग्रंथालयों का उपयोग करने वाले सर्वेक्षित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं की संख्या 65 है जो कुल सर्वेक्षित व्यक्तियों की संख्या 32.5 प्रतिशत है । सर्वेक्षित विज्ञान और प्रौद्योगिकी उपयोगकर्ताओं का ग्रन्थालय के उपयोग के आधार पर बनाया गया तीसरावर्ग व्यक्तिगत ग्रन्थलयों का उपयोग करने वालावर्ग है सर्वेक्षण में इस वर्ग के 60 व्यक्तियों का सर्वेक्षण किया गया था जो कुल सर्वेक्षित व्यक्तियों का 30% है ।

ग्रन्थालयों के उपयोग के आधार पर वर्गीकृत किये गए सभी वर्गो में तृतीयक सूचना की उपयोगिता से सम्बन्धित प्रश्न के उत्तर में प्राप्त तथ्यों का प्रत्येक वर्ग के आधार पर किया गया विश्लेषण निम्नलिखित तालिका 10.3, 10.4 तथा 10.5 में प्रदर्शित किया गया है ।

निम्न तालिका से स्पष्ट है कि शोध प्रगति तालिकाएँ, निर्देशिकाओं तथा वांगमय सूचियों की वांगमय सूची का प्रयोग सभी विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ता सूचना प्राप्त करने के लिए सामान्य ग्रन्थालयों में करते हैं । ऐसा समस्त सर्वेक्षित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं द्वारा एक स्वर में स्वीकार किया गया ।

तालिका 10.3

सामान्य ग्रन्थालयों से सूचना प्राप्त करने वाले विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य तृतीयक सूचना स्रोतों की उपयोगिता

क्र. सं.	सामान्य ग्रन्थालयों से विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं द्वारा स्वीकार तृतीयक सूचना स्रोतों के उपयोगी उपकरण	स्वीकार करने वाले विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं की	
		संख्या	प्रतिशत
1.	निर्देशिकाएँ	65	100
2.	शोध प्रगति तालिकाएँ	65	100
3.	साहित्य दर्शिकाएँ	58	90
4.	वांगमय सूचियों की वांगमय सूचियाँ	65	100
5.	वार्षिकी	52	80

इनके बाद विज्ञान और प्रौद्योगिकी उपयोगकर्ताओं के मध्य लोकप्रिय तृतीयक सूचना उपकरण साहित्य दर्शिकाएँ तथा वार्षिकी है । सामान्य ग्रन्थालयों से सूचना प्राप्त करने वाले विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं द्वारा सर्वेक्षण के दौरान तृतीयक सूचना को शोध कार्यो के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण बताया गया ।

इसी तरह डिजिटल ग्रन्थालयों का उपयोग करने वाले विज्ञान और प्रौद्योगिकी के सूचना प्राप्तकर्ताओं के मध्य तृतीयक सूचना स्रोतों की उपयोगिता ज्ञात करने के उद्देश्य से किये गये सर्वेक्षण में प्राप्त हुए तथ्यों को निम्नलिखित तालिका 10.4 में दर्शाया गया है ।

तालिका 10.4

डिजिटल ग्रन्थालयों से सूचना प्राप्त करने वाले विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य तृतीयक सूचना स्रोतों की उपयोगिता

क.सं.	डिजिटल ग्रन्थालयों से विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं द्वारा स्वीकार किए तृतीयक सूचना स्रोतों के उपकरण	स्वीकार करने वाले विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं की	
		संख्या	प्रतिशत
1.	डेटाबेस निर्देशिकाएँ	75	100
2.	शोध प्रगति तालिकाएँ	75	100
3.	वांगमय सूचियों की वांगमय सूची	75	100
4.	साहित्य दर्शिकाएँ	60	80
5.	वार्षिकी	45	60

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि डिजिटल ग्रन्थालयों का प्रयोग करने वाले विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं द्वारा अपने अध्ययन तथा शोध कार्यो के दौरान तृतीयक सूचना स्रोतों का उपयोग काफी अधिक किया जाता है । अपने अध्ययन के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य तृतीयक सूचना स्रोतों के उपकरणों में सबसे अधिक लोकप्रिय उपकरण डेटाबेस निर्देशिकाएँ, शोध प्रगति तालिकाएँ तथा वांगमय सूचियों की वांगमय सूची है । इसका प्रमुख कारण यह है कि इन उपकरणों का उपयोग शत प्रतिशत सर्वेक्षित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं द्वारा किया जाता है । इन उपकरणों के अतिरिक्त तृतीयक सूचना स्रोतों के साहित्य दर्शिकाएँ तथा वार्षिकी का है जिसे क्रमशः 80 तथा 60 प्रतिशत सर्वेक्षित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं द्वारा प्रयोग किया जाता है । इन सब के वावजूद यह तथ्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि डिजिटल ग्रन्थालयों में सबसे

लोकप्रिय साधन डेटाबेस निर्देशिकाएँ हैं ।

डिजिटल ग्रन्थलयों के पश्चात विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के द्वारा व्यक्तिगत ग्रन्थालयों का प्रयोग अत्यधिक मात्रा में किया जाता है । व्यक्तिगत ग्रन्थालयों का प्रयोग करने वाले विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य तृतीयक सूचना स्रोतों के उपकरणों की उपयोगिता तथा लोकप्रियता ज्ञात करने के लिये किये गये सर्वेक्षण से प्राप्त तथ्य निम्नलिखित तालिका 10.5 में प्रस्तुत किए गए हैं –

तालिका 10.5

व्यक्तिगत ग्रन्थालयों का सूचना प्राप्ति हेतु प्रयोग करने वाले विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं में तृतीयक सूचना के उपकरणों की उपयोगिता

क.सं.	व्यक्तिगत ग्रन्थालयों से विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं द्वारा स्वीकार किए तृतीयक सूचना स्रोतों के उपकरण	स्वीकार करने वाले विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं की	
		संख्या	प्रतिशत
1.	डेटाबेस निर्देशिकाएँ	60	100
2.	शोध प्रगति तालिकाएँ	60	100
3.	वांगमय सूचियों की वांगमय सूची	54	90
4.	वार्षिकी	48	80
5.	साहित्य दर्शिकाएँ	42	70
6.	निर्देशिकाएँ	24	40

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि व्यक्तिगत ग्रन्थालयों का प्रयोग करने वाले विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य तृतीयक सूचना स्रोतों के विभिन्न उपकरणों में सबसे अधिक उपयोगी तथा लोकप्रिय डेटाबेस निर्देशिकाएँ तथा शोध प्रगति तालिकाएँ हैं । इन्हें सभी सर्वेक्षित व्यक्तिगत ग्रन्थालयों से सूचना प्राप्त करने वाले विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं द्वारा उपयोग में लिया जाता है । इसके

पश्चात व्यक्तिगत ग्रन्थालयों का प्रयोग करने वाले विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के प्रयोगकर्ताओं द्वारा सूचना प्राप्ति हेतु तृतीयक सूचना स्रोतों के क्रमशः वांगमय सूचियों की वांगमय सूची, वार्षिकी साहित्य दर्शिकाएँ तथा निर्देशिकाओं का प्रयोग किया जाता है । इनके प्रयोग को सर्वेक्षित व्यक्तियों में से क्रमश 90,80,70 तथा 40 प्रतिशत व्यक्तियों द्वारा उपयोग में लाया जाता है ।

व्यक्तिगत ग्रन्थालयों के उपरोक्त उपयोग संरचना का सबसे प्रमुख कारण यह है कि विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं द्वारा आधुनिक समय में सूचना प्राप्त करने के लिए मुख्यतः कम्प्यूटर पर आश्रित सम्प्रेषण नेटवर्क का प्रयोग किया जाता है । इन सम्प्रेषण नेटवर्को के प्रयोग के कारण डेटाबेस निर्देशिकाओं का प्रयोग अत्यन्त बढ़ गया है । इसके साथ ही इन्टरनेट के बढ़ते प्रयोग से ऑनलाइन डेटाबेसों की लोकप्रियता में अत्यन्त वृद्धि हुई है ।

सर्वेक्षण हेतु प्रयुक्त प्रश्नावली में आखिरी प्रश्न तृतीयक सूचना स्रातों के विभिन्न उपकरणों के उपयोगिता से सम्बन्धित है । इस प्रश्न के उत्तर में दिये गए तथ्यों को तालिका 10.6 में प्रस्तुत किया गया है ।

तालिका 10.6

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य सूचना प्राप्ति में तृतीयक सूचना स्रोतों के उपकरणों की उपयोगिता

क.सं.	तृतीयक सूचना के उपकरण	तृतीयक सूचना के उपकरणों की उपयोगिता
1.	वार्षिकी	(अ) तथ्यगत सूचना या आँकड़े प्राप्त करने में
		(ब) विषय और विचार प्रक्रिया की सामान्य जानकारी
2.	वांगमय सूची की वांगमय सूची	(अ) विषय विशेष की सम्पूर्ण सूचना
		(ब) विषय की संक्षिप्त एवं तथ्यात्मक सूचना
		(स) विचार प्रक्रिया के सामन्य सूचक

		(द)	सन्दर्भों की प्राप्ति में सहायक
		(इ)	पुस्तक के प्रकाशक एवं वितरक का विवरण
3.	निर्देशिकाएँ	(अ)	व्यक्ति या संस्था का पता
		(ब)	राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्था से सम्बन्धित व्यक्ति का पता
		(स)	विविध प्रकार की संस्थाओं का परिचय
		(द)	विविध प्रकार की संस्थाओं का कार्यक्षेत्र
4.	शोध प्रगति तालिका	(अ)	नवीन अनुसंधानों की जानकारी
		(ब)	अनुसंधान परियोजना के नियोजन में सहायक
		(स)	अनावश्यक अनुसंधान एवं पुनरावृति से बचाव
		(द)	अनुसंधान परियोजना तथा उससे जुड़े हुए विशेषज्ञों की जानकारी
		(इ)	अनुदान प्रदान करने वाली संस्थाओं की जानकारी
5.	डेटाबेस निर्देशिकाएँ	(अ)	सामयिक एवं नवीन सूचना अद्यतन उपलब्ध होती है ।
		(ब)	अद्यतन समंकों की जानकारी उपलब्ध रहती है।
6.	साहित्य दर्शिकाएँ	(अ)	विषय एवं विचार प्रक्रिया का विकास
		(ब)	सूक्ष्म विषयों पर विस्तृत सूचनाएँ
		(स)	अत्यन्त नवीन सूचनाएँ
		(द)	पुस्तक प्रकाशक वितरक एवं सेवा प्रदायक संस्थाओं का विवरण

(इ) शोध सामग्री एवं सूचनाएँ

(फ) तथ्यात्मक सूचनाएँ

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के लिए तृतीयक सूचना स्रोतों की उपयोगिता अत्यधिक है । सर्वेक्षण के दौरान उपयोगी स्वीकार किये गए समस्त तृतीयक सूचना स्रोत के उपकरणों के लिए बताये गए उपयोगिता के विभिन्न क्षेत्रों का विवरण निम्नानुसार है :-

वार्षिकी:-

तृतीयक सूचना के अत्यन्त उपयोगी उपकरण के रूप में वार्षिकी का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है । वार्षिकी की उपयोगिता के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर में प्राप्त तथ्यों का सम्पादन करने के परिणामस्वरूप जो स्थिति निर्मित होती है । उसे निम्नतालिका 10.7 में स्पष्ट किया गया है :-

तालिका 10.7

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य वार्षिकी की उपयोगिता

क.सं.	उपयोगिता के क्षेत्र	वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ (विषय)	अभियंता	प्रशासक एवं नीति निर्धारक	अप्राविधिक सूचना उपयोग कर्ता
1.	2.	3.	4.	5.	6.
1.	तथ्यात्मक सूचना और आंकड़े प्राप्त करने में	50 (100)	50 (100)	50 (100)	40 (80)
2.	विषय और विचार प्रकिया की सामान्य जानकारी	50 (100)	40 (80)	50 (100)	50 (100)
3.	कोई उपयोग नहीं	–	–	–	–

नोटः- कोष्ठक में कुल सर्वेक्षित उपयोगकर्ताओं का प्रतिशत दिया है । सर्वेक्षित उपयोगकर्ताओं को वास्तविक संख्या तालिका 10.1 में प्रदर्शित है ।

उपरोक्त तालिका 10.7 से यह स्पष्ट है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के सभी सर्वेक्षित उपयोगकर्ताओं ने एक स्वर से वार्षिकी को अत्यन्त उपयोगी बताया । प्राप्त तथ्यों का निर्वाचन करने पर स्पष्ट है कि वैज्ञानिकों

के मध्य वार्षिकी अत्यन्त लोकप्रिय है तथा सभी सर्वेक्षित वैज्ञानिकों द्वारा तथ्यात्मक सूचना प्राप्त करने तथा ऑकड़े एकत्र करने में और विषय तथा विचार प्रक्रिया की सामान्य जानकारी में अत्यन्त उपयोगी स्वीकार किया गया । इसी तरह अभियंता वर्ग में भी सर्वेक्षित अभियंताओं ने वार्षिकी को सूचना प्राप्ति में अत्यन्त उपयोगी पाया तथा सर्वेक्षण के दौरान तथ्यात्मक सूचना और ऑकड़े प्राप्ति हेतु समस्त सर्वेक्षित अभियंताओं ने एक स्वर से इसे उपयोगी बताया जबकि अस्सी प्रतिशत सर्वेक्षित अभियंताओं ने इसे विषय तथा विचार प्रक्रिया के विकास की जानकारी में भी उपयोगी पाया है ।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं का तीसरा वर्ग प्रशासक और नीति निर्धारकों का है । नीति निर्धारकों के इस वर्ग में सर्वेक्षण के दौरान सर्वेक्षित प्रशासकों तथा नीति निर्धारकों ने एक स्वर में वार्षिकी को तथ्यात्मक सूचना और ऑकड़ों की प्राप्ति तथा विषय और विचार प्रक्रिया के विकास में अत्यन्त उपयोगी बताया । इस तारतम्य में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अन्तिम उपयोगकर्ता वर्ग अप्राविधिक उपयोगकर्ता वर्ग है । इस वर्ग के सर्वेक्षित सूचना प्राप्तकर्ताओं ने भी वार्षिकी को सूचना प्राप्ति का एक अत्यन्त उपयोगी उपकरण माना । इस वर्ग के सूचना प्राप्तकर्ताओं ने सर्वेक्षण के दौरान वार्षिकी को विषय और विचार प्रक्रिया की जानकारी हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण उपकरण स्वीकार किया । इसी तरह लगभग ८० प्रतिशत उपयोगकर्ताओं ने वार्षिकी को विषय और विचार प्रक्रिया के विकास की जानकारी के अतिरिक्त वार्षिकी को तथ्यात्मक सूचना तथा ऑकड़े प्राप्त करने में भी उपयोगी बताया ।

वांगमय सूची की वांगमय सूची

वांगमय सूची की वांगमय सूची तृतीयक सूचना स्रोतों का एक महत्वपूर्ण उपकरण है । इसकी उपयोगिता के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर में प्राप्त तथ्यों का सम्पादन करने पर जो स्थिति उभर कर सामने आई है । उसे निम्न तालिका 10.8 में प्रदर्शित किया गया है ।

तालिका 10.8

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य वांगमय सूचियों की वांगमय सूची की उपयोगिता

क्र. सं.	उपयोगिता के क्षेत्र	वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ	अभियंता	प्रशासक एवं नीति निर्धारक	अप्राविधिक उपयोगकर्ता
1.	2.	3.	4.	5.	6.
1.	विषय विशेषज्ञों की सम्पूर्ण सूचना	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
2.	विषय की संक्षिप्त एवं तथ्यात्मक सूचना	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
3.	विचार प्रक्रिया की समान्य सूचना	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
4.	सन्दर्भों की प्राप्ति में सहायक	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
5.	पुस्तक के प्रकाशक एवं वितरक का विवरण	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
6.	कोई उपयोग नहीं	–	–	–	–

नोटः– कोष्ठक में कुल सर्वेक्षित उपयोगकर्ताओं का प्रतिशत दिया गया है ।

उपरोक्त तालिका 10.8 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ता सभी सर्वेक्षित व्यक्तियों के मध्य वांगमय सूचियों की वांगमय सूची अत्यन्त उपयोगी मानी जाती है। सभी सर्वेक्षित उपयोगकर्ताओं ने वांगमय सूचियों की वांगमय सूची को मुख्यतः पांच कार्यो में उपयोगी माना है ।

ये कार्य निम्नलिखित है :–

1. विषय विशेष की सम्पूर्ण सूचना,
2. विषय का संक्षिप्त एवं तथ्यात्मक सूचना,
3. विचार प्रक्रिया की समान्य सूचना,
4. सन्दर्भो की प्राप्ति में सहायक,
5. पुस्तकों के प्रकाशक एवं वितरक का विवरण ज्ञात करने में ।

निर्देशिकाएँ

निर्देशिकाएँ अध्येता को वांछित सूचना तक पहुँचाने के लिय अत्यन्त महत्वपूर्ण तृतीयक सूचना स्रोत मानी जाती है । सर्वेक्षण के द्वारा निर्देशिकाओं की उपयोगिता के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित तथ्यों को तालिका 10.9 में प्रस्तुत किया गया है ।

तालिका 10.9

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य निर्देशिका की उपयोगिता

क. सं.	उपयोगिता के क्षेत्र	वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ	अभियंता	प्रशासक एवं नीति निर्धारक	अप्राविधिक उपयोग कर्ता
1.	2.	3.	4.	5.	6.
1.	व्यक्ति या संस्थान का पता	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
2.	राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्था से संबंधित व्यक्ति का पता	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
3.	विविध प्रकार के संस्थाओं का परिचय	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
4.	विविध प्रकार के संस्थाओं का कार्यक्षेत्र	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
5.	कोई कार्य नहीं	–	–	–	–

नोटः– कोष्ठक में कुल सर्वेक्षित उपयोगकर्ताओं का प्रतिशत दिया गया है । सर्वेक्षित उपयोगकर्ताओं की संख्या तालिका 10.1 में प्रदर्शित किया गया है ।

उपरोक्त तालिका 10.9 के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि निर्देशिका विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य अत्यन्त लोकप्रिय उपकरण है । निर्देशिकाओं के प्रयोग के बिना कोई भी कार्य सम्पन्न करना अत्यन्त कठिन हो जाता है । ऐसा इन सर्वेक्षित प्रयोगकर्ताओं का मानना है । यही कारण है कि सभी सर्वेक्षित उपयोगकर्ताओं ने एक स्वर में निर्देशिकाओं के उपयोग के निम्न क्षेत्र बताये हैंः–

1. व्यक्ति या संस्था का पता लगाने में,
2. राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्था से सम्बन्धित व्यक्ति का पता लगाने में,

3. विविध प्रकार के संस्थाओं का परिचय प्राप्त करने में,
4. विविध प्रकार के संस्थाओं का कार्यक्षेत्र ज्ञात करने में ।

शोध प्रगति तालिका

आधुनिक समय में हो रहे शोध कार्यो को ज्ञात करने के लिए तथा उनकी पुनरावृति रोकने के उद्देश्य से विद्वानों द्वारा विकसित शोध प्रगति तालिका विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य अत्यन्त लोकप्रिय है । सर्वेक्षण के द्वारा एकत्र किए गए समंकों का सम्पादन और निर्वचन करने पर जो तथ्य उभर कर आये उन्हें तालिका 10.10 में प्रदर्शित किया गया है ।

तालिका 10.10 के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि शोध प्रगति तालिका भी विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य अत्यन्त उपयोगी है । सर्वेक्षित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं ने इसके प्रयोग के बिना शोध कार्यो को प्रारंभ एवं पूर्ण कर पाना अत्यन्त कठिन माना है । इन लोगों ने सर्वेक्षण के दौरान शोध प्रगति तालिका के प्रमुख उपयोग निम्नलिखित बताये।

1. नवीन अनुसंधानों की जानकारी,
2. अनुसंधान परियोजना के नियोजन में अत्यन्त मददगार,
3. अनावश्यक अनुसंधान एवं अनुसंधान पुनरावृति पर रोक लगाने में मददगार,
4. अनुसंधान परियोजना तथा उससे जुड़े विशेषज्ञों की जानकारी में मददगार,
5. अनुसंधान परियोजना को अनुदान एवं आर्थिक सहायता देने वाले संगठनों की जानकारी प्राप्त करने में ।

तालिका 10.10

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य शोध प्रगति तालिका की उपयोगिता

क्र. सं.	उपयोगिता के क्षेत्र	वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ	अभियंता	प्रशासक एवं नीति निर्धारक	अप्राविधिक उपयोग कर्ता
1.	2.	3.	4.	5.	6.
1.	नवीन अनुसंधानों की जानकारी	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
2.	अनुसंधान परियोजना के नियोजन में मददगार	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
3.	अनावश्यक अनुसंधान एवं पुनरावृति से बचाव	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
4.	अनुसंधान में परियोजना तथा उससे जुड़े विशेषज्ञों की जानकारी	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
5.	अनुदान प्रदान करने वालें संस्थाओं की जानकारी	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
6.	कोई उपयोग नहीं	–	–	–	–

नोटः– कोष्ठक में कुल सर्वेक्षित उपयोगकर्ताओं का प्रतिशत दिया गया है । कुल सर्वेक्षित उपयोगकर्ताओं की संख्या तालिका 10.1 में प्रदर्शित है ।

डेटाबेस निर्देशिकाएँ

डेटाबेस निर्देशिकाएँ सूचना विज्ञान में विज्ञान और प्रौद्योगिकी द्वारा विकसित नवीन विधा है । यह विधा सूचना तकनीक द्वारा विकसित सूचना क्रांति का महत्वपूर्ण अंग होने के कारण तृतीयक सूचना स्रोतों का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उपकरण बन गया है । डेटाबेस निर्देशिकाओं की उपयोगिता के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित तथ्यों के बारे में सर्वेक्षण में प्राप्त उत्तरों का सम्पादन एवं निर्वचन करने के पश्चात जो स्थिति उत्पन्न हुई है उसे तालिका 10.11 में प्रदर्शित किया गया है :–

तालिका 10.11

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य डेटाबेस निर्देशिकाओं की उपयोगिता

क. सं.	उपयोगिता के क्षेत्र	वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ	अभियंता	प्रशासक एवं नीति निर्धारक	अप्राविधिक उपयोग कर्ता
1.	2.	3.	4.	5.	6.
1.	सामयिक एवं नवीन सूचना अद्यतन उपलब्ध कराने में	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
2.	अद्यतन समंकों की जानकारी उपलब्ध कराने में	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
6.	कोई उपयोगिता नहीं	–	–	–	–

नोटः– कोष्ठक में कुल सर्वेक्षित उपयोगकर्ताओं का प्रतिशत दिया गया है ।

तालिका 10.11 के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी की सूचना विज्ञान को दी गई यह देन विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य अत्यन्त लोकप्रिय है । इसी कारण इसे सभी विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं ने इसे एक स्वर में निम्न क्षेत्रों में अत्यन्त उपयोगी बताया –

1. सामयिक तथा नवीन सूचना को अद्यतन रखने तथा प्राप्त करने में,
2. अद्यतन समंकों की जानकारी प्राप्त करने में ।

साहित्य दर्शिकाएँ

साहित्य दर्शिकाएँ तृतीयक सूचना स्रोतों का एक महत्वपूर्ण उपकरण है । सर्वेक्षण के दौरान इसकी उपयोगिता से सम्बन्धित प्रश्न के उत्तर में प्राप्त तथ्यों को तालिका 10.12 में प्रस्तुत किया गया है ।

तालिका 10.12

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के मध्य साहित्य दर्शिकाओं की उपयोगिता

क. सं.	उपयोगिता के क्षेत्र	वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ	अभियंता	प्रशासक एवं नीति निर्धारक	अप्राविधिक उपयोग कर्ता
1.	2.	3.	4.	5.	6.
1.	विषय एवं विचार प्रक्रिया का विकास	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
2.	सूक्ष्म विषयों पर विस्तृत सूचना	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
3.	अत्यन्त नवीन सूचनाएँ	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
4.	पुस्तक प्रकाशक वितरक एवं सेवा प्रदायक संख्याओं का विवरण	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
5.	शोध सामग्री एवं सूचनाएँ	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
6.	तथ्यात्मक सूचनाएँ	50 (100)	50 (100)	50 (100)	50 (100)
7.	कोई उपयोगिता नहीं	–	–	–	–

नोटः– कोष्ठक में कुल सर्वेक्षित उपयोगकर्ताओं का प्रतिशत दिया गया है ।

तालिका 10.12 के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि साहित्य दर्शिकाओं का प्रयोग विज्ञान और प्राद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं द्वारा अत्यधिक किया जाता है । इसीलिए इन सभी सर्वेक्षित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं ने एक स्वर में साहित्य दर्शिकाओं के निम्न उपयोगिता क्षेत्र बताये ।

1. विषय और विचार प्रक्रिया का विकास,
2. सूक्ष्म विषयों पर विस्तृत सूचना,
3. अत्यन्त नवीन सूचनाएँ,
4. पुस्तक प्रकाशक, वितरक एवं सेवा प्रदायक संस्थाओं की जानकारी,
5. शोध सामग्री एवं सूचनाएँ प्रदान करना,
6. तथ्यात्मक सूचनाएँ । --------

अध्याय-११

निष्कर्ष तथा सुझाव

अध्याय -११

निष्कर्ष तथा सुझाव

शिक्षा और शोध कार्य की प्रगति ने अध्ययन सामग्री के अम्बार लगा दिये हैं । करोड़ों की संख्या में देश विदेश में अनेक प्रकार का साहित्य प्रकाशित हो रहा है । इसके परिणामस्वरूप ज्ञान के अर्जन, प्रसार तथा सम्प्रेषण का जगत अत्यन्त जटिल एवं विशिष्टि स्वरूप धारण कर चुका है । यही कारण है कि विशाल प्रकाशन तथा सूचना संसार से आवश्यक सूचना तथा ज्ञान को आवश्यक एवं वांच्छित मात्रा में खोज निकालना अत्यन्त कठिन कार्य होता जा रहा है । यही कारण है कि समय पर तथा उपयुक्त मात्रा में सूचना की प्राप्ति आधुनिक युग में राष्ट्रीय तथा सामाजिक विकास का मूल आधार माना जाने लगा है । सूचना की ही शक्ति का यह परिणाम है कि विश्व में एक देश सम्पन्न तथा दूसरा गरीब नजर आता है । इन्हीं सूचनाओं के संचित कोष को साहित्य का नाम दिया जाता है। यही साहित्य सम्बन्धित विषयों के विकास का मूल आधार होता है । यह माना जाता है कि साहित्य का विकास 5 से 10 वर्षों में द्विगुणित तथा समाज विज्ञान के क्षेत्र में आठ से बारह वर्षों में दुगना हो जाता है । (देखे अध्याय-प्रथम)

आमतौर पर सूचना शब्द के अभिप्राय को समझने के लिए निम्नलिखित दो प्रकार की विचारधाराओं का प्रयोग किया जाता है ।

1. व्युत्पत्ति पर आधारित,
2. विचारधारा तथा तथ्यों की अभिव्यक्ति पर आधारित (देखे अध्याय -एक)

व्युत्पत्ति के आधार पर सूचना शब्द अंग्रेजी भाषा के Information शब्द का हिन्दी रूपान्तर है जो formatio तथा forma नामक दो शब्दों के संयोग से बना है । इन दोनों शब्दों का अर्थ किसी वस्तु के स्वरूप से किया जाता है । इसके अतिरिक्त इन शब्दों से नमूना अथवा पद्धति निर्माण की ओर संकेत प्राप्त होता है । इसी तरह Information शब्द को लेंटीन भाषा में News के रूप में व्यक्त किया जाता है । जो यह स्पष्ट करता है कि व्युत्पत्ति के आधार पर सूचना किसी वस्तु अथवा समाचार के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसके निर्माण या उत्पन्न होने की पद्धति की ओर संकेत करती है । जबकि विचारधारा तथा तथ्यों की अभिव्यक्ति के आधार पर सूचना को ज्ञान का पर्यायवाची माना गया है (देखे अध्याय -प्रथम)

इसी तरह विचारधारा तथा तथ्यों की अभिव्यक्ति के आधार पर सूचना को ज्ञान का पर्यायवाची माना जाता है (देखे अध्याय प्रथम) इस प्रकार सूचना का वास्तविक अभिप्राय स्पष्ट करने में दोनों सिद्धान्तों का महत्वपूर्ण स्थान स्वीकार किया जाने लगा किन्तु सूचना के अर्थ को स्पष्ट करने के मुद्दे पर विद्वानों में सहमति नहीं रही । यही कारण है कि इन विद्वानों ने सूचना की व्याख्या अलग-अलग रूपों में की है । विद्वानों की इन व्याख्याओं को संक्षेप में निम्न

तीन भागों में बाँटा जा सकता है –

1. सूचना का निर्णय मूल्य सिंद्धान्त,
2. सूचना का गणितीय सिद्धान्त,
3. शब्दार्थ सूचना सिद्धान्त,

ये सिद्धान्त सूचना तथा उससे सम्बन्धित अलग–अलग आयामों को विस्तृत रूप में स्पष्ट करते हैं । जिनमें सूचना का निर्णय मूल्य सिद्धान्त, सूचना की व्याख्या उसके निर्णय लेने के क्षेत्र में योगदान को आधार बना कर करती है । जबकि शैनॉन तथा वीकर द्वारा विकसित सूचना का गणितीय सिद्धान्त सूचना सम्प्रेषण में कोडिंग और डीकोडिंग को आधार बना कर लागत को कम करने की पद्धति को व्याख्या करती है । इन दोनों सिद्धान्तों के विपरीत प्रसिद्ध सूचनाशास्त्री फेयर थॉन द्वारा विकसित शब्दार्थ सूचना सिद्धान्त, सूचना को वस्तु प्रवाह मानने से इन्कार करते हुए सूचना को एक महत्वपूर्ण तथ्य मानते है । (देखे अध्याय –प्रथम)

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सूचना की व्याख्या के प्रश्न पर विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है । इन सभी विद्वानों के मतों पर विचार करने के उपरान्त सूचना की एक विस्तृत परिभाषा निम्नानुसार दी जा सकती है ।

‘‘तथ्यों का चयन, व्यवस्थापन तथा वयाख्या कर उन्हें अक्षर और वाक्यों के माध्यम से अभिव्यक्ति सूचना कहलाती है । यह ज्ञान योग्यता तथा विशिष्टीकरण का प्रतिनिधित्व करती है ।’’

आधुनिक युग में सूचना की आवश्यकता अनेक कारणों से महसूस की जाती है । इन्हीं कारणों से इन सूचनाओं की उपयोगिता को महसूस किया जाता है । वास्तव में अध्येता के लिए सूचनाओं की उपयोगिता की तीव्रता के आंकलन का आधार भी इन्हीं

आवश्यकताओं और कारणों के आधार पर किया जाता है। (देखे अध्याय–प्रथम)

आमतौर पर यह माना जाता है कि सूचना की आवश्यकता केवल वैज्ञानिक, तकनीकीविद, विशेषज्ञ तथा छात्रों को होती है किन्तु समय के साथ – साथ यह धारण पुरानी पड़ती जा रही है तथा आजकल समाज के हर वर्ग को सूचना की आवश्यकता होती है । समाज के किस वर्ग को सूचना की उपयोगिता की तीव्रता कितनी है ? यह आंकलन करने के लिए सूचनाशास्त्री आमतौर पर निम्न प्रश्नों का निर्धारण करते हैं –

1. सूचना की आवश्यकता किसे है ?
2. सूचना की आवश्यकता क्यों हैं ?
3. सूचना की आवश्यकता की पूर्ति कैसे की जा सकती है ? (देखे अध्याय –प्रथम)

वास्तव में सूचना के अनेक स्रोत हैं जिनके आधार पर सूचना को विभिन्न श्रेणियों का निर्माण किया गया है । आदिकाल से आज तक सूचना के अनेक स्रोत रहे हैं ।

लिपि कागज तथा मुद्रण कला के विकास के साथ–साथ इन स्रोतों में काफी वृद्धि हुई है । इस विकास के परिणामस्वरूप सूचना विज्ञान के कार्यकर्ताओं के सम्मुख अनेक ऐसे अवसर उत्पन्न हो जाते हैं जब अध्येता कोई ऐसी जानकारी की मांग कर देता है जिसका स्रोत पहले से ज्ञात नहीं होता । अतः ऐसी स्थिति में अध्येता की मदद कर सूचना उपलब्ध कराना सूचनाकर्मी का प्रमुख कार्य एवं दायित्व माना जाता है ।

इन समस्याओं का समाधान करने के उद्देश्य से ग्रन्थालय विज्ञान के विद्धानों ने सूचना स्रोतों का वर्गीकरण और श्रेणीबद्ध कर

उन्हें विकसित किया है । इन श्रेणियों का प्रमुख आधार प्रलेखों का माना जाता है । प्रसिद्ध विद्वान डॉ0 एस.आर. रंगनाथन ने प्रलेखों के आधार पर इन्हें चार श्रेणियों में विभाजित किया है ।

1. परम्परागत सूचना श्रेणी,
2. नव–परम्परागत सूचना श्रेणी,
3. अपरम्परागत सूचना श्रेणी
4. पर प्रलेख सूचना श्रेणी (देखे अध्याय द्वितीय)

विस्तृत आधार पर सूचना को सर्वमान्य रूप से निम्नानुसार विभाजित किया गया है ।

1. प्रलेखी श्रेणी – प्रलेखी श्रेणी को पुनः निम्न तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है –

(अ) प्राथमिक सूचना श्रेणी,
(ब) द्वितीयक सूचना श्रेणी,
(स) तृतीयक सूचना श्रेणी (देखे अध्याय द्वितीय)

(अ) प्राथमिक सूचना श्रेणी – प्राथमिक सूचना श्रेणी में उन समस्त सूचनाओं को शामिल किया जाता है जो विषय से सम्बन्धित नवीनतम तथ्यों का दर्शन कराते हैं । इनमें निम्न स्रोतों को शामिल किया जाता है –

(i) व्यापार साहित्य,
(ii) शोध प्रबन्ध,
(iii) शोध विवरण,
(iv) शोध विनिबंध,
(v) शोध और संवाद पत्रिकाएँ,
(vi) स्वत्वाधिकारी पत्र,
(vii) पुस्तिका,

(viii) मानक,

(ix) अप्रकाशित स्रोत ((देखे अध्याय द्वितीय में प्राथमिक सूचना श्रेणी)

(ब) द्वितीयक सूचना श्रेणी – द्वितीयक सूचना श्रेणी से तात्पर्य उन स्रोतों से हैं जिसके माध्यम से उपयोगकर्ता या पाठक को उनकी अभिरूचि तथा उपयोग के मौलिक अथवा प्राथमिक स्रोतों की जानकारी प्राप्त होती है । द्वितीयक सूचना श्रेणियों में निम्न स्रोतों को शामिल किया जाता है –

(i) पत्रिकाएँ,

(ii) वांगमय सूचियाँ,

(iii) संदर्भ पत्रिकाएँ – सन्दर्भ पत्रिकाओं में निम्नलिखित पत्रिकाओं को शामिल किया जाता है :

(क) अनुक्रमणात्मक पत्रिकाएँ,

(ख) पर्यालोचन पत्रिकाएँ,

(ग) समाचार संक्षेप पत्रिकाएँ,

(घ) सारांश या सार पत्रिका,

(ड.) क्रमिक प्रकाशन,

(iv) सन्दर्भ ग्रन्थ,

(v) अनुक्रमणी ग्रन्थ,

(vi) विनिबन्ध ग्रन्थ,

(vii) समीक्षाएँ,

(viii) मानक ग्रन्थ,

(ix) पाठ्य पुस्तकें,

(x) शब्द कोष,

(xi) अनुवाद,

(xii) मेन्युअल,

(xiii) हैण्डबुक,

(xiv) सारणी (देखें अध्याय द्वितीय भाग– द्वितीयक सूचना श्रेणी)

(स) तृतीयक सूचना श्रेणी – तृतीयक सूचना श्रेणी के अन्तर्गत वे सूचना स्रोत आते हैं जो प्राथमिक और द्वितीयक सूचना श्रेणी के स्रोतों का पता लगाने में अध्येता की मदद करते हैं । इनसे विषयगत सूचना अधिक प्राप्त नही होती बल्कि ग्रन्थगत सूचना अथवा संकेत अधिक प्राप्त होती है । इस प्रकार के सूचना स्रोतों के उदाहरण निम्नलिखित हैं –

(i) निर्देशिकाएँ,

(ii) वार्षिकी,

(iii) वांगमय सूचियों की वांगमय सूची,

(iv) साहित्य दर्शिकाएँ,

(v) शोध प्रगति तालिकाएँ

(vi) डेटाबेस (देखे अध्याय द्वितीय भाग तृतीयक सूचना श्रेणी)

(2) अप्रलेखी श्रेणी – अप्रलेखी श्रेणी के सूचना स्रोतों से तात्पर्य उन सूचना स्रोतों से हैं जो मुद्रित नहीं हैं । आधुनिक युग में विज्ञान और तकनीक का सूचना सम्प्रेषण की प्रक्रिया में अत्यधिक भागीदार एवं प्रयोग होने के कारण अप्रलेखी सूचना श्रेणी का अधिकाधिक विस्तार हुआ है । इस श्रेणी को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है –

(अ) औपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोत स्रोत से तात्पर्य उस सूचना स्रोता से हैं जिन्हें सामान्यतः ग्रन्थात्मक नियंत्रण के अन्तर्गत रखा जा सकता है । औपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोतों के प्रमुख उदाहरण

निम्नलिखित हैं –

1. Indian National Bibliography
2. British National Bibliography
3. पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं इत्यादि का ध्वनि मुद्रण,
4. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दूरदर्शन पर प्रसारित राष्ट्रीय कक्षाएँ इत्यादि (देखें अध्याय द्वितीय भाग औपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोत)

(ब) अनौपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोत – अनौपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोतों के अन्तर्गत उन सूचना स्रोतों को रखा जा सकता है जो अप्राप्त है या फिर उन्हें बड़ी कठिनाई से प्राप्त किया जा सकता है । इसके अन्तर्गत निम्न स्रोतों को शामिल किया जाता है –

(i) सहयोगियों से बातचीत,
(ii) आगन्तुकों से विचार विमर्श,
(iii) विशेषज्ञों से चर्चा,
(iv) व्यवसायिक एवं विशिष्ट संगोष्ठियों में भाग लेना,
(vi) कार्यस्थान पर विशेष निर्देश (देखें अध्याय द्वितीय भाग –अनौपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोत)

(स) अर्द्ध औपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोत – औपचारिक तथा अनौपचारिक सूचना स्रोतों के मध्य ऐसे सूचना स्रोत भी होते हैं जिनका कार्य सूचना सेवाओं विशिष्ट संघों अथवा संस्थाओं द्वारा अपने सदस्यों तथा अन्य को उपलब्ध कराये गए सूचना को उपलब्ध कराना होता है उन्हें अर्द्ध औपचारिक सूचना श्रेणी के स्रोतों के रूप में जाना जाता है (देखें अध्याय द्वितीय भाग – अर्द्ध औपचारिक श्रेणी के सूचना स्रोत)

इन सभी सूचना श्रेणी के स्रोतों की वास्तविक आवश्यकता उस समय पड़ती है जब कोई अध्येता किसी सूचना की खोज में ग्रन्थालयों के पास आता है तथा उसे सूचनाकर्मी द्वारा सूचना उपलब्ध करायी जाना होती है । वास्तव में प्रस्तुत अध्ययन में तृतीयक सूचना स्रोतों का वर्गीकरण तथा उनकी उपयोगिता का निर्धारण करना प्रमुख उद्देश्य है । तृतीयक सूचना स्रोतों का प्रमुख कार्य अध्येताओं तथा विशेषज्ञों को मौलिक और द्वितीयक सूचना स्रोतों को प्रयोगार्थ वांछित सूचना की प्राप्ति तथा खोज में सहायता प्रदान करना है । वास्तव में तृतीयक सूचना श्रेणी आधुनिक युग में हो रहे ज्ञान के विस्फोट में आवश्यक सूचना से संबंधित स्रोतों की खोज हेतु विकसित की गयी है । इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. मौलिक एवं द्वितीयक स्रोतों के प्रयोगार्थ वांछित सूचना की प्राप्ति एवं खोज में मदद करना,
2. ज्ञान के अथाह सागर में सूचना के सन्दर्भ ज्ञात करने में ग्रन्थालयी एवं अध्येता की मदद करना,
3. अध्येता को आसानी से सूचना प्राप्त करने में सहायक बनाना,
4. ज्ञान का विकेन्द्रीकरण कर उसके प्रचार और प्रसार में मदद प्रदान करना,
5. अभिव्यक्ति के समस्त माध्यमों का संग्रह कर उनका प्रबंधन संगठन, एवं संरक्षण कर तथा अध्येता को आवश्यकतानुसार सुलभ कराना,
6. ज्ञान के प्रवाह को सतत् गतिशील बनाये रखने में सहायता प्रदान करना,

7. सामाजिक स्मृति को जागृत और सक्रिय रखने में मदद प्रदान करना (देखें अध्याय तृतीय)

तृतीयक सूचना श्रेणी के स्रोतों के उद्देश्य एवं प्रकृति के आधार पर यह स्पष्ट है कि इनका प्रयोग शोध कार्यों में संलग्न व्यक्तियों द्वारा ही किया जाता है । प्रस्तुत अध्ययन में तृतीयक सूचना स्रोतों की उपयोगिता ज्ञात करने के उद्देश्य से एक सर्वेक्षण का आयोजन किया गया है । इस सर्वेक्षण में शोधार्थियों को दो स्तरों पर विभाजित किया गया है । ये स्तर है –

1. पीएच.डी. उपाधि हेतु शोधरत् शोधार्थी,
2. व्यवसायिक रूप से कार्यरत शोधार्थी (देखें अध्याय तृतीय)

उपरोक्त दोनों स्तर पर शोधरत शोधार्थियों से तृतीयक सूचना स्रोतों की उपयोगिता ज्ञात करने के लिए किये गए सर्वेक्षण में विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे गए । सर्वेक्षण के दौरान विभिन्न संकायों से सम्बन्धित 150 शोध छात्र तथा 150 व्यवसायिक शोधार्थियों का सर्वेक्षण किया गया । (देखें अध्याय–तृतीय तालिक 3.1 का विवरण)

शोध छात्रों तथा व्यवसायिक शोधकर्मियों दोनों से ही तृतीयक सूचना स्रोतों की उपयोगिता के बारे में प्राप्त समंकों को अलग–अलग सारणीयन कर विश्लेषण करने पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए :–

1. शोध छात्रों के द्वारा तृतीयक सूचना श्रेणी के स्रोतों का उपयोग निम्न क्रम में किया जाता है –

(अ) शोध प्रगति तालिका,

(ब) वांगमय सूचियों की वांगमय सूची,

(स) डेटाबेस निर्देशिकाएँ,

(द) साहित्य दर्शिकाएँ,

(इ) वार्षिकी (देखें अध्याय तृतीय तालिका 3.2 का विवरण)

2. शोध छात्रों ने सर्वसम्मति से निम्न कार्यों में तृतीयक सूचना श्रेणी के उपकरणों का उपयोगी बताया –

(अ) तथ्यात्मक सूचना प्राप्त करने में,

(ब) विषय या विचार प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त करने में

(स) सूक्ष्म विषयों पर विस्तृत सूचना प्राप्त करने में

(द) विविध विषयों के सन्दर्भों को ज्ञात करने में,

(इ) प्राचीन एवं एतिहासिक सूचना प्राप्त करने में (देखें अध्याय तृतीय, तालिका 3.3 का विवरण)

3. शोध छात्रों की भाँति व्यवसायिक शोध कर्मियों ने भी तृतीयक सूचना श्रेणी के उपकरणों का उपयोग निम्नलिखित क्रम से करना स्वीकार किया –

(अ) डेटाबेस निर्देशिकाएँ,

(ब) शोध प्रगति तालिकाएँ,

(स) वांगमय सूचियों की वांगमय सूची,

(द) निर्देशिकाएँ,

(इ) साहित्य दर्शिकाएँ,

(फ) वार्षिकी (देखें अध्याय तृतीय, तालिका 3.4 का विवरण)

4. व्यवसायिक शोधकर्मियों ने सर्वसम्मति से निम्न कार्यो में तृतीयक सूचना श्रेणी के उपकरणों की उपयोगिता स्वीकार की–

(अ) तथ्यात्मक सूचना प्राप्त करने में,

(ब) अत्यन्त नवीन सूचना प्राप्त करने में,

(स) सन्दर्भ स्रोतों की सूचना प्राप्त करने में,

(द) प्राचीन और ऐतिहासिक सूचना प्राप्त करने में,

(इ) सूक्ष्म विषयों पर विस्तृत सूचना प्राप्त करने में,

(फ) विषय या विचार प्रक्रिया के विकास की सूचना प्राप्त करने में,

(जी) साहित्य को प्रस्तुत करने में (देखें अध्याय, तृतीय, तालिका 3.5 का विवरण)

सर्वेक्षण के दौरान तृतीयक सूचना श्रेणी के कई उपकरणों के नाम उपयोगकर्ताओं द्वारा अत्यन्त उपयोगी बताये हैं । तृतीयक सूचना श्रेणी के प्रमुख उपकरणों का विवरण निम्नानुसार है –

निर्देशिकाएँ

सामान्यतः व्यक्तियों के नाम पते, संस्थाओं के नाम पते तथा अनेक इसी तरह की सामयिकियों की तालिका को कृति को निर्देशिका कहते हैं । इसकों कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं–

1. World of Learning – London:Europa.
2. American Book Trade Directory Kent, England (देखे अध्याय तृतीय, भाग निर्देशिकाएँ)

वांगमय सूचियों की वांगमय सूचीः

वांगमय सूचियों की वांगमय सूची के अन्तर्गत मुख्यतः वांगमय सूचियों की तालिकाकरण की जाती है । यह अध्येता को मुख्य सन्दर्भों को पता लगाने में अत्यन्त मददगार होती है ।

Index bibliographics – 4th ed. The Hauge, FID, 1959

जैसी कृति इसकी प्रमुख उदाहरण है (देखे अध्याय तृतीय, भाग वांगमय सूची की वांगमय सूची)

विषय साहित्य दर्शिकाएँ

विषय साहित्य दर्शिकाएँ किसी विषय के विकास का परिचय उपलब्ध कराता है । इसका मुख्य उद्देश्य अध्येताओं का मार्गदर्शन करना होता है ।

Guide to Literature of the Life Science / RogerC. Smith and W.M. Reid – 8th ed. Minnesata : Burgess 1969. जैसी कृति इसकी प्रमुख उदाहरण है (देखें अध्याय–तृतीय भाग, विषय साहित्य दर्शिकाएँ) ।

शोध प्रगति तालिकाएँ

शोध प्रगति तालिकाएँ अध्येता तथा शोधकर्ताओं को चल रहे शोध कार्यों की जानकारी प्रदाय करती है । यह शोध कार्यों की एवं तत्संबंधी जानकारी को अद्यतन रखने का प्रमुख उदाहरण है ।

"Current Research Projects in CSIR Labarotories" इस प्रकार के उपकरणों का प्रमुख उदाहरण है । (देखें अध्याय तृतीय, भाग शोध प्रगति तालिकाएँ)।

वार्षिकी

प्रत्येक वर्ष में एक बार प्रकाशित होने वाला क्रमिक प्रकाशन वार्षिकी कहलाता है ।

"Annual Report of the Banking Development of Banking in India" इसका प्रमुख उदाहरण है (देखें अध्याय तृतीय, भाग वार्षिकी) ।

डेटाबेस निर्देशिकाएँ

सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार तथा कम्प्यूटर के बढ़ते उपयोग के परिणामस्वरूप डेटाबेस निर्देशिकाओं का प्रचलन अत्यधिक बढ़ता जा रहा है ।

"(A Search Chemical Abstracts Search) Columbus, Ohio ' Chemical Abstract Service, 1967 to date, " इसका प्रमुख उदाहरण हैं (देखें

अध्याय तृतीय भाग – डेटा बेस निर्देशिकाएँ) ।

तृतीयक सूचना के विकास का क्रम मुख्यतः शिक्षा और ज्ञान के विस्तार के साथ जुड़ा हुआ है । जैसे–जैसे शिक्षा का प्रसार हुआ ग्रन्थालयों के उपयोग करने वालों की संख्या में वृद्धि होती गयी । साक्षर लोगों की इस बढ़ती संख्या ने सूचना कर्मियों के पास सूचना प्राप्ति हेतु आने वालों की संख्या में लगातार बहुगुणित वृद्धि होने लगी । इस वृद्धि के फलस्वरूप सूचना संदर्भ सेवा के विकास की आवश्यकता को महसूस किया जाने लगा जो अन्ततः तृतीयक सूचना स्रोतों के विकास का आधार बना । तृतीयक सूचना स्रोतों के विकास में मेलविल डीवी, विलियम वि. चिल्डस, एलिस बी. क्रोएगर, जॉन कारन, डॉन, विलियम बर्नर, विशप, ए.आर. शेफर्ड इत्यादि का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है । (देखें अध्याय तृतीय) ।

1930 के बाद तृतीयक सूचना स्रोतों के विकास में सबसे महत्वपूर्ण योगदान डॉ0 एस.आर. रंगनाथन का है । द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् तृतीयक सूचना स्रोतों का काफी तीव्र विकास हुआ इस कार्य में अनेक विद्वानों के साथ–साथ संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रकोष्ठ युनेस्कों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है । 1940 से 1950 के मध्य सूचना का अति तीव्र विकास हुआ तथा इसके अनेक माध्यम उभर कर सामने अस्तित्व में आये । प्रकाशन की इस तीव्र वृद्धि ने तृतीयक सूचना स्रोतों के विकास में अपनी महत्वपूर्ण एवं क्रान्तीकारी भूमिका का निर्वाहन किया । नित नये विस्फोटक प्रकाशनों तथा शोधकार्यों से ने कम से कम समय में अध्ययन हेतु वांछित सूचना की काफी आवश्यकता महसूस किया जाने लगा । इसी के परिणामस्वरूप प्रकाशित साहित्यों का सर्वेक्षण कर उनका वर्गीकरण प्रारम्भ हुआ, जिससे तृतीयक सूचना स्रोतों का विकास हुआ (देखें अध्याय तृतीय) ।

प्रस्तुत अध्ययन का चतुर्थ खंड तृतीयक सूचना श्रेणी के प्रमुख उपकरण निर्देशिकाओं के विस्तृत विवरण पर आधारित है । ए.एल.ए. शब्दावली के अनुसार, "निर्देशिका व्यक्तियों अथवा संगठनों की एक क्रमबद्ध तालिका को कहते हैं । जो प्रायः अनुवर्णिक अथवा वर्गीकृत क्रमानुसार संकलित की गयी होती है जिसमें व्यक्तियों के पते तथा सम्बद्धता तथा संगठनों के पते, उनके पदाधिकारी, कार्य तथा अन्य इसी प्रकार के तथ्यों का उल्लेख होता है ।" निर्देशिकाओं का उद्भव मुख्यतः मनुष्य की आवश्यकताओं के परिणामस्वरूप हुआ है । वास्तव में मानव स्मृति की अपनी सीमा के कारण दुनिया के हर कोने में रहने वाले से सम्पर्क बनाये रखना तथा उनके पते तथा क्रिया कलापों से परिचित रहना अत्यन्त कठिन होता है । इसी कारण निर्देशिका का उद्भव हुआ । (देखिये अध्याय –चतुर्थ)।

सर्वप्रथम, निर्देशिका का प्रकाशन सन् 1738 में ' Brown's Directory of list of Princapal Traders' के नाम से इंग्लैण्ड में हुआ । तब से बराबर निर्देशिकाओं का प्रकाशन हो रहा है । आमतौर पर निर्देशिकाओं का प्रकाशन निम्न कार्यों के लिये होता है ।

1. किसी व्यक्ति विशेष अथवा किसी संगठन विशेष का पता तथा टेलीफोन नम्बर,
2. किसी व्यक्ति का पूरा नाम तथा उसकी वर्तनी, किसी संगठन अथवा संस्था का नाम तथा पूर्ण पता तथा उसके विशिष्ट अधिकारी एवं विशेषज्ञ का विवरण,
3. किसी वस्तु के उत्पादन करने वाले का विवरण तथा उत्पादित वस्तुओं की विशेषता तथा उसकी सेवाएँ,
4. किसी "फर्म", संगठन अथवा संस्था का कौन अध्यक्ष है अथवा कौन किस कार्य का दायित्व निवर्हन करता है,

5. संस्था अथवा संगठनके किसी व्यक्ति अध्यक्ष, सचिव, संचालक अथवा प्रबन्धक का संक्षिप्त परन्तु अद्यतन जीवन चरित वृतान्त,

6. किसी संस्था, फर्म या रानजीतिक दल का ऐतिहासिक सामयिक विवरण एवं तथ्य, स्थापना का वर्ष, तथा सदस्यों की संख्या,

7. व्यापारिक उपयोग के लिए आवश्यक विवरण जैसे कुछ व्यक्तियों का चयन, कुछ कम्पनियों का चयन अथवा संगठनों का चयन जिससे किसी संबंधित क्षेत्र में उनसे पत्राचार किया जा सके ।

8. सामाजिक अथवा व्यापारिक सर्वेक्षण के किए चयनात्मक नमूनों के रूप में उनका यादृच्छिक ढंग से उपयोग करना जिसके लिए इन्हें मूल स्रोत माना जाता है । देखें अध्याय– चतुर्थ) ।

आधुनिक समय में अनेक प्रकार की निर्देशिकाओं का प्रयोग होता है ये निर्देशिकाएँ निम्नानुसार है –

1. अन्तर्राष्ट्रीय निर्देशिका,
2. राष्ट्रीय निर्देशिका,
3. स्थानीय निर्देशिका,
4. शासकीय निर्देशिका,
5. व्यवसायिक निर्देशिका,
6. निवेश निर्देशिका,
7. संस्थागत निर्देशिका,
8. व्यापारिक और औद्योगिक निर्देशिका,
9. वैज्ञानिक और विद्वत परिषद की निर्देशिका,
10. ग्रन्थालयी निर्देशिका,
11. पुरस्कार विजेताओं की निर्देशिका, (देखें अध्याय – चतुर्थ)

निर्देशिकाओं का यह वर्गीकरण मुख्यतः इनकी प्रकृति तथा अध्येता की आवश्यकता पर आधारित है । अन्तर्राष्ट्रीय निर्देशिकाओं में मुख्यतः अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की सूची होती है । इन निर्देशिकाओं में :

World of Learning – Europa Publication.

Europa Year Book – London – Europa Publication जैसे प्रकाशन है (विस्तृत विवरण देखें अध्याय–चतुर्थ) ।

राष्ट्रीय निर्देशिकाओं में उन सभी निर्देशिकाओं को शामिल किया जाता है जो राष्ट्रीय स्तर के तथ्यों को शामिल करती है । इन निर्देशिकाओं के प्रमुख उदाहरण –

All India Telephone Directory, Bharat Sanchar Nigam Limited

All India Educational Directory, Chandigarh- All India Directory Publishers है (देखें अध्याय चतुर्थ) ।

शासकीय निर्देशिका वे निर्देशिकाएँ है जिनमें प्रमुख शासकीय अधिकारियों के नाम पते व कार्य विवरण सम्मिलित होते हैं इन निर्देशिकाओं में –

All India Civil List, Bombay

State Civil List प्रमुख हैं (देखे अध्याय चतुर्थ) ।

व्यवसायिक निर्देशिका का सम्बन्ध मुख्यतः व्यवसायिक संगठनों से होता है ।

Directory of Educational Research Institution in Asian Region.

इसी तरह की निर्देशिकाओं की प्रमुख उदाहरण है (देखे अध्याय चतुर्थ) ।

आमतौर पर दो प्रकार की निर्देशिकाओं को स्थानीय निर्देशिका के नाम से जाना जाता है ये हैं –

1. नगर निर्देशिका,

2. दूरभाष निर्देशिका (देखें अध्याय चतुर्थ) ।

कुछ निर्देशिका उद्योग और व्यापर से सम्बन्धित होती है । इन निर्देशिकाओं का प्रकाशन मुख्यतः व्यापारिक संगठनों द्वारा किया जाता है । इनसे निवेश सम्बंधी स्थिति का आंकलन हो जाता है ।

"Kothari's Economic and Industrial Guide of India, Madras Kothari.

इस तरह की निर्देशिकाओं का प्रमुख उदाहरण है (देखें अध्याय चतुर्थ)

संस्थागत निर्देशिकाओं से तात्पर्य ऐसी निर्देशिकाओं से हैं जिनमें स्कूलों, संस्थानों इत्यादि की जानकारी रहती है ।

University Handbook, AIU, India 2001

Directory of Institutions for Higher Education, New Delhi, Ministry of Education, 1971.

इस प्रकार की निर्देशिकाओं का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है (देखें अध्याय चतुर्थ)

व्यापारिक और औद्योगिक निर्देशिकाओं से तात्पर्य ऐसी निर्देशिकाओं से हैं जो उत्पादकों की सूचना मुख्य रूप से प्रदर्शित करती हैं ।

Indian Industrial Directory Delhi, World Directory Publisher, 1981.

इस तरह की निर्देशिकाओं का प्रमुख उदाहरण है (देखे अध्याय–चतुर्थ)

वैज्ञानिक और विद्वत परिषदों की निर्देशिकाएँ, निर्देशिकाओं का एक महत्वपूर्ण वर्ग है ।

Directory of Scientific Research Institutions in India – Delhi, Indian National Scientific Documentation Centre, 1969.

इस प्रकार की निर्देशिकाओं का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है (देखें अध्याय चतुर्थ)

जिन निर्देशिकाओं का निर्माण ग्रन्थालयों से सम्बन्धित सूचनाओं को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है ।

Bowker Annual of Library and Book Trade Information – New York R.R. Bowker.

इस प्रकार की निर्देशिकाओं का प्रमुख उदाहरण है । (देखे अध्याय चतुर्थ)

उपरोक्त वर्गीकरण के अतिरिक्त निर्देशिकाओं का एक अन्य महत्वपूर्ण वर्ग, महत्वपूर्ण राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्बन्धित वर्ग का है । इस वर्ग का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है –

National Teachers Award Those who won it. (देखें अध्याय चतुर्थ)

प्रस्तुत अध्ययन का पंचम अध्याय तृतीयक सूचना स्रोत के एक अन्य महत्वपूर्ण उपकरण वार्षिकी के विस्तृत विवरण से सम्बन्धित है । Year Book, Almanac एवं Annual के नाम से पुकारे जाने वाले इस उपकरण को हिन्दी में वार्षिकी के नाम से जाना जाता है । तृतीयक सूचना स्रोत के इस महत्वपूर्ण उपकरण का प्रकाशन वर्ष में एक बार होता है । यह एक क्रमिक प्रकाशन है। इसके महत्व को देखते हुए ही प्रसिद्ध विद्वान लुईस शोर ने कहा है "विकास क्रम विगत वर्ष की गतिविधि और सामयिक घटनाओं से सम्बद्ध प्रश्नों के लिए सर्वप्रथम वार्षिकी का अवलोकन करें ।" (देखें अध्याय पंचम)

प्रसिद्ध विद्वान Williams A. Katz ने इसकी उपयोगिता और आवश्यकता को इसके निम्नांकित छः विशेषताओं के आधार पर सिद्ध किया है ।

1. न्यूनता – इसमें नवीनतम तथ्य और सूचनाएँ संचित रहती है । किसी व्यक्ति, विषय या घटना से सम्बद्ध नई बातों का जानने का यह तत्कालिक साधन है । दूसरे शब्दों में न्यूनता इसका प्रमुख गुण है ।
2. संक्षेप में तथ्य – एतद् विषयक नवीन तथ्य या आँकड़े इसके अवलोकन से संक्षेप में जाने जा सकते हैं ।
3. विकास क्रम – इसकी नवीनता सम्बद्ध विषय के विकास क्रम, स्थिति या स्वरूप को अप्रत्यक्ष रूप से इंगित करती है। इसलिए गवेषु विद्वानों एवं अध्येताओं हेतु पठनपाठन का एक प्रमुख सहायक साधन है । ऐतिहासकारों के लिए विगत वर्षो की सूचना, घटना, आँकड़े प्राप्त करने का यह एक स्रोत ग्रन्थ है । इसलिए पुराने वार्षिक ग्रंथ अपना पृथक ऐतिहासिक महत्व रखते हैं ।
4. स्रोत सूचक – बहुत से प्रमाणिक वार्षिक ग्रंथ अंकित सूचना या तथ्य के आधारभूत साहित्य का सन्दर्भ उद्धरित करते हैं, ताकि उनका अवलोकन कर उनके बारे में विशिष्ट जानकारी प्राप्त की जा सके ।
5. निर्देशिका और जीवनी सम्बन्धी सूचना कई वार्षिक ग्रन्थों में सम्मिलित किया जाता है जिसमें प्रमुख व्यक्तियों की जीवनी, व्यवसाय, पता आदि दिए रहते हैं ।
6. मनोरंजक वाचन – अनेक वार्षिक ग्रन्थ आजकल नाना प्रकार की सूचनाओं एवं विषयों से परिपूर्ण एवं संचित रहते हैं इसलिए विशेषतः सन्दर्भ सेवा में संलग्न कार्यकर्ताओं को मनोरंजन के साथ नवीन विषयों से परिचित होने के लिए ये अच्छे सहायक ग्रन्थ है । (देखें अध्याय पंचम) ।

वार्षिकी का इतिहास अत्यन्त पुराना है । इसका सबसे पुराना स्वरूप पंचाग या जंत्री है । मकरन्द की सारणी भारत में उपलब्ध इस प्रकार के प्रकाशन का अत्यन्त पुराना उदाहरण है । आधुनिक रूप में वार्षिकी का उदय सन् 1758 में एडमण्ड वर्क द्वारा सम्पादित अंग्रेजी का प्रथम वार्षिक ग्रन्थ Annual Register of World events से माना जाता है (देखे अध्याय पंचम) । अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विषयगत वार्षिकी का उद्‌भव 1827 में प्रकाशित "Year book of Facts in Science and Arts" से माना जाता है । (देखें अध्याय – पंचम) ।

वार्षिकी को उसके विषय संरचना एवं भौगोलिक सीमा के आधार पर निम्नलिखित भार्गो में विभाजित किया जा सकता है –

1. सामान्य वार्षिकी
2. विषयगत वार्षिकी
3. पंचांग या जंत्री (देखें अध्याय पंचम)

सामान्य वार्षिकी

सामान्य वार्षिकी मुख्यतः भौगोलिक आधार पर तैयार की जाती है । इसमें मुख्यतः सम्बन्धित प्रदेश के सांख्यिकीय आँकडे तथा अन्य तथ्यों का विवरण रहता है । ए.एल.ए. शब्दकोष द्वारा सामान्य वार्षिकी को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है –

‘‘विवरणात्मक अथवा सांख्यिकीय रूप में सामयिक सूचना देने वाले वार्षिक प्रकाशन को वार्षिकी कहते हैं ।’’

भारत वार्षिकी सन्दर्भ ग्रन्थ, 2002 नई दिल्ली, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार ।

इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है (देखें अध्याय पंचम भाग सामान्य वार्षिकी)।

विषयगत वार्षिकी

वर्ष भर में अलग-अलग विषयों में अनेक नवीन शोध कार्य होते हैं जिन्हें विषयगत वार्षिकी के माध्यम से प्रस्तुत किये जाते हैं । प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित विषयों की वार्षिकी का विषयवार सर्वेक्षण कर प्रस्तुत किया गया है -

1. अर्थशास्त्र और वाणिज्य
2. सांख्यिकीय,
3. शिक्षा,
4. राजनीति विज्ञान,
5. विधि,
6. भाषा और साहित्य,
7. पत्रकारिता,
8. विज्ञान और अभियांत्रिकी,
9. ग्रन्थालय विज्ञान,
10. खेल (देखे अध्याय पंचम, भाग विषयगत वार्षिकी) ।

पंचांग या जंत्री

वार्षिकी के सभी वर्गो में सबसे पुराना स्वरूप पंचाग या जंत्री के नाम से जाना जाता है । इसके अन्तर्गत मानव व्यवहार के अनुसार निश्चित सिद्धान्त के अनुसार समय या काल की गणना तिथि, मास, वर्ष इत्यादि के आधार पर की जाती है । यह दो प्रकार का होता है -

1. अन्तर्राष्ट्रीय पंचाग - आलमैनेक
2. राष्ट्रीय पंचांग

राष्ट्रीय पंचाग, कलकत्ता, रीजनल मीटिरियोलॉजी सेन्टर, नॉटिकल आलमैनक यूनिट ।

इस प्रकार के वार्षिकी का महत्वपूर्ण उदाहरण है । (देखे अध्याय पंचम, भाग पंचांग या जंत्री) ।

प्रस्तुत अध्ययन के षष्ठम अध्याय में तृतीयक सूचना स्रोत के एक अन्य महत्वपूर्ण स्रोत वांगमय सूचियों की वांगमय सूची का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है । अभिलिखित ज्ञान के नियंत्रण हेतु विभिन्न प्रकार की ग्रन्थसूचियों निर्माण हुआ । किन्तु निर्माणकर्ताओं की आवश्यकता एवं प्रकृति में अन्तर होने के कारण इन ग्रन्थसूचियों में पर्याप्त भिन्नताएं परिलक्षित होती है । इन भिन्नताओं के वावजूद अनेकानेक गन्थसूचियों का निर्माण होता रहा है । एक अनुमान के अनुसार 9,600 प्रकार की ग्रन्थसूचियाँ हो सकती है । जबकि एक अन्य आंकलन के अनुसार 13 प्रकार की ग्रन्थसूचियाँ हो सकती है । इन अनेक ग्रन्थसूचियों के कारण इन ग्रन्थ सूचियों की एक ऐसी ग्रन्थ सूची का निर्माण करना आवश्यक हो जाता है । जिससे उपयोगकर्ताओं को उसके लिए अभिष्ट ग्रन्थसूची प्राप्त करना सरल हो जाये । इस प्रकार की सूची को ही वांगमय सूचियों की वांगमय सूची के नाम से जाना जाता है । (देखें अध्याय षष्ठम) ।

इन वांगमय सूचियों की वांगमय सूची में विशिष्ट विषय के क्षेत्र से सम्बन्धित प्रकाशन के प्रारंभिक काल से लेकर अब तक की उपलब्ध समस्त सामग्री उपलब्ध होती है । (देखे अध्याय षष्ठम) ।

प्रथम ग्रंथसूचियों की सूची होने का गौरव के रूप में अन्तोनी तेस्सी आर. की 'केटलॉग्स' नामक पुस्तक को प्राप्त है । यह ग्रंथसूचियों की ग्रंथसूची सन् 1868 में जेनेवा में प्रकाशित हुई इसके पश्चात समय समय पर महत्वपूर्ण संकलन प्रकाशित हुए । इनमें से महत्वपूर्ण सूची प्रकाशन तिथि निम्नानुसार है –

1. सन् 1868 में प्रकाशित 'बिब्लियोथेका बिब्लियोग्राफी',
2. सन् 1883 में प्रकाशित 'बिब्लियोग्राफी डेस बिब्लियोग्राफी',
3. सन् 1897 में प्रकाशित 'मैन्युअल डी बिब्लियोग्राफी',
4. सन् 1939-40 में प्रकाशित 'वर्ल्ड बिब्लियोग्राफी ऑफ बिब्लियोग्राफीज',
5. सन् 1961-62 में प्रकाशित 'बिब्लियोग्राफीकल सर्विसेज थ्रूआउट दी वर्ल्ड',
6. सन् 1905 में प्रकाशित 'रजिस्टर ऑफ नेशनल बिब्लियोग्राफी',
7. सन् 1968 में प्रकाशित 'बिब्लियोग्राफीज सब्जेक्ट एण्ड नेशनल',
8. सन् 1959 में प्रकाशित 'इंडेक्स बिब्लियोग्राफिक्स',
9. सन् 1962 में प्रकाशित 'बिब्लियोग्राफी, डॉक्यूमेंटेशन, टर्मिनॉलॉजी', (देखे अध्याय षष्ठम) ।

उपरोक्त ग्रंथसूचियों की ग्रंथसूची के अतिरिक्त समय समय पर विशिष्ट विषयों से सम्बन्धित ग्रंथसूचियों की ग्रंथसूची सन्दर्भ ग्रंथों की ग्रंथसूचियों की ग्रंथसूची प्रकाशित होती रही है (देखे अध्याय षष्ठम) । भारत में भी समय समय पर अनेक ग्रंथसूचियों की ग्रंथसूचियों का प्रकाशन हुआ है (देखे अध्याय षष्ठम)

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि ग्रंथसूचियों की ग्रंथसूची का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है । विश्लेषण में सुविधा की दृष्टि से इसे निम्न तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है –

1. सामयिक वांगमय सूचियों की वांगमय सूची,
2. पूर्वव्यापी वांगमय सूचियों की वांगमय सूची,

3. संदर्भ कृतियों की मार्ग दर्शिकाएँ (देखें अध्याय षष्ठम)।

प्रस्तुत अध्ययन के सप्तम अध्याय में तृतीयक सूचना स्रोतों के महत्वपूर्ण उपकरण सहित्य दर्शिकाओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है । किसी विषय विशेष के साहित्य का उपयोग करने के लिए जिन मार्गदर्शिकाओं का प्रकाशन किया जाता है उसे साहित्य दर्शिकाओं के नाम से जाना जाता है । वास्तव में साहित्य दर्शिकाओं में द्वितीयक और तृतीयक सूचना स्रोत से सामग्री संकलित की जाती है । विद्वानों के अनुसार साहित्य दर्शिकाएँ निम्नलिखित कार्यों में अध्येता की मदद प्रदान करता है ।

1. किसी वस्तु, प्रलेख, प्रकरण विषय तथासंदर्भ की जानकारी प्रदान करने में सहायता करना तथा खोज की प्रक्रिया को त्वरित एवं सरल बनाना,
2. किसी विषय क्षेत्र की विस्तृत स्थिति की जानकारी प्रदान करना,
3. नामकरणों की जानकारी प्रदान करना एवं निर्देशन करना,
4. सूचना पुनर्प्राप्ति के एक उपकरण एवं प्रक्रिया के रूप में सहायता प्रदान करना,
5. सूक्ष्म प्रलेखों की वांगमय सूची के रूप में विषयानुसार एवं सामान्य रूप से सामयिक जानकारी प्रदान करना,
6. किसी प्रलेख या पुस्तक को तैयार करते समय एक ही अनुक्रम में तथ्यों की यथासम्भव पूर्ति करना,
7. सूचना आवश्यकता की पूर्ति में वैज्ञानिकों, विद्वानों, विशेषज्ञों, अनुसन्धित्सुओं को तथा अभियांत्रिकी, इत्यादि क्षेत्रों में सहायता करना,
8. सामायिक चेतना सेवा तथा चयनात्मक सूचना सेवा के

आयोजन में सहायता प्रदान करना और एक उपकरण का कार्य करना,

9. प्रलेख एवं पुस्तक में निहित सूचना के मध्य सम्बन्धों को व्यक्त करना,

10. किसी प्रलेख, संदर्भ प्रश्न की जानकारी प्राप्त करने और इनकी खोज करने में सहायता प्रदान करना (देखें अध्याय सप्तम)

इन महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पादित करने वाली साहित्य दर्शिकाओं का विकास मूलतः अनुक्रमणिका तथा वांगमय सूचियों के विकास के साथ–साथ हुआ । साहित्य दर्शिकाओं के आधुनिक स्वरूप का प्रथम रूप सातवीं तथा आठवीं शताब्दी में तैयार की गयी 'बाइबिल शब्द' सूची थी । यह कृति Biblical concordance के नाम से संकलित की गयी थी । अनुक्रमणिका के जिस स्वरूप का प्रयोग 17वीं शताब्दी तक किया जा रहा था वह वास्तव में साहित्य दर्शिकाओं का ही स्वरूप था । (देखें अध्याय सप्तम)

साहित्य दर्शिकाओं के इस स्वरूप के विकास का मूल कारण ज्ञान जगत में हो रहे सतत् तीव्र विकास था । इस विकास का ही परिणाम यह था कि संदर्भ कृतियों का अभिगम अत्यन्त कठिन होता गया । इसे अभिगम की कठिनाई को कम करने के उद्देश्य से अनेक द्वितीयक स्रोतों का निर्माण हुआ । द्वितीयक स्रोतों की अधिकता तथा प्रत्येक स्रोतों में अनेक संकलनों के कारण इन स्रोतों से विशिष्ट साहित्य की जानकारी एकत्रित करना अत्यन्त कठिन कार्य था । इस कठिनाई को समाप्त करने के लिए साहित्य दर्शिकाओं का प्रभ्युदय एवं विकास हुआ (देखे अध्याय सप्तम)

साहित्य दर्शिकाओं को उनके उपयोग एवं मार्गदर्शक उपकरणों के रूप में निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जाता है ।

1. सदर्भ स्रोत मार्गदर्शिका,
2. ग्रन्थालयों की प्रसूची,
3. अनुक्रमणिकाएँ एवं सारांश सेवाऐं (देखें अध्याय सप्तम)

साहित्य दर्शिकाओं की आवश्यकता को ज्ञान की हर विधा के पिपासुओं द्वारा समय-समय पर महसूस किया गया है । यह आवश्यकता अपनी तीव्रता के अनुसार साहित्य दर्शिकाओं की उपयोगिता प्रकट करती है । प्रस्तुत अध्ययन में इस उपयोगिता को ज्ञात करने के उद्देश्य से एक सर्वेक्षण का आयोजन किया गया है । इस सर्वेक्षण में एक प्रश्नावली के अनुसार सूचना प्राप्तकर्ताओं से इसकी उपयोगिता से सम्बन्धित सूचना एकत्र की गयी । इस सर्वेक्षण में विभिन्न संकायों से 18 शोध छात्रों तथा 32 व्यवसायिक शोधकर्ताओं के साथ 50 सदस्यों को शामिल किया गया (देखे अध्याय सप्तम, तालिका 7.1 का विवरण) ।

सर्वेक्षित सूचना प्राप्तकर्ताओं में साहित्य दर्शिकाओं का अपने अध्ययन के प्रश्न के जवाब अनुसार जो स्थिति स्पष्ट हुई उसके अनुसार अभियांत्रिकी तथा आयुविज्ञान विषय में साहित्य दर्शिकाओं का प्रयोग शत-प्रतिशत है । जबकि विज्ञान, समाजविज्ञान तथा मानविकी में क्रमशः 80,70 एवं 60 प्रतिशत सूचना प्राप्तकर्ताओं द्वारा साहित्य दर्शिकाओं का प्रयोग किया जाता है । इन संकायों में साहित्य दर्शिकाओं का प्रयोग न करने का प्रमुख कारण सूचना प्राप्तकर्ताओं की अज्ञानता है । (देखें अध्याय सप्तम, तालिका 7.2 का विवरण) ।

सर्वेक्षित साहित्य दर्शिकाओं के प्रयोगकर्ताओं द्वारा साहित्य दर्शिकाओं की उपयोगिता के निम्नलिखित क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान बताये गये –

1. निर्देशन पद्धति,
2. विषय वस्तु की दर्शिका,
3. निर्देशात्मक अनुक्रमणिका,
4. सम्पूर्ण कृतियों की दर्शिका,
5. मानसिक और भौतिक निर्देशिका पद्धति (देखें अध्याय सप्तम तालिका 7.3) ।

प्रस्तुत अध्ययन का आठवां अध्याय तृतीयक सूचना श्रेणी के नवीनतम तथा अत्यन्त महत्वपूर्ण सूचना स्रोत शोध प्रगति तालिका के विवरण पर आधारित है । शोध प्रगति तालिका से तात्पर्य उस तालिका से है जो चल रहे शोध कार्यो की सूचना अध्येता को उपलब्ध कराता है । शोध प्रगति तालिका निम्न जानकारी उपलब्ध होती है –

1. परियोजना का नाम,
2. अनुसंधानकर्ता का नाम,
3. अनुसंधान की अवधि,
4. अनुदान या आर्थिक सहायताप्रदान करने वाली संस्था का उल्लेख,
5. उन संदर्भो का विवरण जिनमें निष्कर्षो को प्रकाशित किया जाना है (देखें अध्याय अष्टम) ।

शोध प्रगति तालिका के सामान्य उद्भव के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है । फिर भी सामान्यतः यह तथ्य सर्वमान्य है कि आधुनिक समय में सबसे पहले शोध-प्रगति तालिका का

प्रकाशन 1955 में अर्जेन्टाइना में किया गया । इस तारतम्य को अनेक देशों ने आगे बढ़ाया । विकासशील देशों में शोध प्रगति तालिका के प्रकाशन और संकलन को एक व्यापक रूप प्रदान करने के लिए युनेस्को द्वारा काफी महत्वपूर्ण कार्य किया गया ।

विगत पाँच दशकों से विकासशील देशों को अनुसंधान क्रियाकलापों की प्रगति से सम्बन्धित सूचना सुलभ कराने के प्रयास किए जा रहे हैं । लेकिन पिछले कुछ थोडे से समय के दौरान विकासशील एवं विकसित देशों के मध्य इस प्रकार की सूचना व्यवस्था उपलब्ध कराने के गंभीर प्रयास आरम्भ हुए है । इस सम्बन्ध में युनेस्को द्वारा अपनी निर्देशिका युनिसिस्ट (UNISIST Guidelines on dthe conduct of a National Inventory of Current Research and Development Projects) के अनुसार विकासशील देशों में शोध–प्रगति की सूचना के महत्व से नीति निर्धारकों तथा अनुसंधान नियोजकों को सुपरिचित कराने का अधिक प्रयास किया गया । इस सबका परिणाम यह हुआ कि विकासशील देशों में पाकिस्तान, थाइलैंड और फिलीपीन्स मे वैज्ञानिक शोध प्रगति तालिका का संकलन सन् 1964 में प्रारम्भ किया गया । धीरे–धीरे यह क्रम बढ़ता गया तथा सन् 1972 तक अनेक देशों में यह क्रम प्रारंभ हो गया ।

यूनेस्कों ने इस कार्य में और अधिक गतिशीलता लाने के उद्देश्य से सन् 1975 में विकासशील और विकसित देशों के मध्य एक संगोष्ठी आयोजित की । इस सेमीनार में अनुसंधान सूचना के प्रसार के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग पर बल दिया गया । इसके परिणामस्वरूप करेन्ट एग्रीकल्चर रिसर्च इनफॉरमेशन सिस्टम (करिस) की स्थापना की गयी । जिसके अस्सी विकासशील देशों में केन्द्र

स्थापित किये गये । इसी तारतम्य में सन् 1978 में सभी देशें में चल रहे शोध कार्यो की जानकारी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से युनेस्कों और स्मिथ सोनियन साइन्टिफिक इनफॉरमेशन एक्सचेन्ज के सहयोग से "Information Service on Research in Progress : A World Wide Directory" के नाम से अन्तर्राष्ट्रीय निर्देशिका प्रकाशित की (देखे अध्याय – अष्टम) ।

शोध प्रगति तालिका के उपयोगिता को ज्ञात करने के लिए विभिन्न संकायों से जुडे हुए शोधकर्ताओं का सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण में एक प्रश्नावली के माध्यम से 41 शोध छात्रों, 59 व्यवसायिक शोधकर्ताओं समेत 100 शोधकर्ताओं से शोध प्रगति तालिका के उपयोगिता संबंधी तथ्यों का संकलन किया गया (देखें अध्याय अष्टम, तालिका 8.1 का विवरण)

सर्वेक्षण से यह स्पष्ट है कि शोध प्रगति तालिका का प्रयोग मानविकी तथा समाजविज्ञान विषय में कम है जबकि विज्ञान संकाय में 90 प्रतिशत शोधकर्ता तथा अभियांत्रिकी और आयुर्विज्ञान के शत प्रतिशत शोधकर्ता शोध प्रगति तालिका का प्रयोग करते हैं (देखें अध्याय अष्टम, तालिका 8.2 का विवरण)।

शोध प्रगति तालिक को उपयोगी मानने के प्रश्न पर सर्वेक्षित शोधकर्ता दो भागों में विभाजित है एक भाग उन लोगों का है जो इसे उपयोगी मानते हैं तथा दूसरा भाग उन लोगों का है जो इसे उपयोगी नहीं मानते ।

सर्वेक्षण के दौरान शोध प्रगति–तालिका को उपयोगी मानने वाले लगभग 65 प्रतिशत सर्वेक्षित शोधकर्ताओं ने एक स्वर में शोध प्रगति तालिकाओं के निम्नलिखित उपयोग बताये –

1. शोध कार्यों में पुनरावृति पर रोक लगाने का कार्य शोध प्रगति तालिका के द्वारा किया जाता है ।
2. शोध कार्यों में अतिव्यापन (Overlapping) की समस्या उत्पन्न नहीं होती ।
3. शोधकर्ताओं को शोध गतिविधियों में चल रही नई दशाओं एवं दिशाओं में अद्यतन रहने में शोध प्रगति तालिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रहती है ।
4. शोध प्रगति तालिका शोध परियोजना तैयार करने में अत्यन्त मददगार रहती है ।
5. शोध प्रगति तालिका शोध कार्यों हेतु विभिन्न विशेषज्ञों तथा शोध कार्यों का सन्दर्भ प्राप्त करने में अत्यन्त मददगार सिद्ध होती है ।
6. शोध प्रगति तालिका शोधकर्ताओं को अनुदान प्राप्त करने में अत्यंत मददगार सिद्ध होती है ।

इस सर्वेक्षण का दूसरा भाग उन शोधकर्ताओं का है जो शोध प्रगति तालिकाओं को अनुपयोगी मानने वालों का है । सर्वेक्षण में शोध प्रगति तालिका को अनुपयोगी मानने वाले वे शोधकर्ता हैं जो शोध प्रगति तालिका के बारे में ही नहीं जानते । इससे एक तथ्य स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आता है कि अभी भी मानविकी तथा समाज विज्ञान संकायों में विश्वविद्यालयीन, महाविद्यालयीन शिक्षकों एवं अन्य शोधकर्ताओं में शोध प्रगति तालिका के प्रयोग एवं उपयोगिता के बारे में प्रशिक्षण की आवश्यकता हैं (देखें अध्याय अष्टम, तालिका 8.3 का विवरण) ।

शोध प्रगति तालिकाओं का प्रारम्भ विज्ञान और तकनीकी विषय से होकर अब ज्ञान के सभी क्षेत्रों में पहुँच चुका है । इसी

कारण अब शोध प्रगति तालिकाओं के अनेक वर्गों का भी निर्माण होता गया । वृहत रूप से शोध प्रगति तालिकाओं को निम्नलिखित आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है –

1. संरचना के आधार पर
2. विषय के आधार पर,
3. भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर (देखें अध्याय अष्टम)

प्रस्तुत अध्ययन का नवम अध्याय डेटाबेस तथा इनकी निर्देशिकाओं के विवरण से सम्बन्धित है । आधुनिक युग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रयोग सूचना विज्ञान के क्षेत्र में अत्यन्त बढ़ने लगा । कम्प्यूटर के विकास ने इसे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण आयाम प्रदान कर दिया है । यही नया आयाम सूचना क्रांति के नाम से जाना जाने लगा । इस क्रांति में डेटाबेसों का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है । इन डेटाबेसों में अनेक प्रकार के सूचना स्रोतों का संग्रहण किया जाने लगा है । इन सूचनाओं को आमतौर पर कम्प्यूटर के मैग्नेटिक टेप, हार्ड डिस्क, फ्लापी डिस्क तथा सी.डी. में संग्रहित किया जाता है । (देखें अध्याय नवम) ।

डेटाबेस का निर्माण अनेक प्रकार के कार्यों को करने के लिये किया जाता है । वास्तव में यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सूचनाओं को समय-समय पर अद्यतन रखी जाती है । डेटाबेस संरचना का प्रयोग कर निम्नलिखित कार्यों को सम्पादित किया जाता सकता है –

1. डेटाबेस में नया जोड सकते हैं ।
2. डेटाबेस को सॉर्ट कर (छाँट) सकते हैं ।
3. डेटाबेस की अनुक्रमणिका तैयार कर सकते हैं ।
4. डेटाबेस फाइल में रिकार्ड खोज सकते हैं ।

5. डेटाबेस को आवश्यक स्वरूप में प्रिंट कर सकते हैं ।
6. डेटाबेस को सम्पादित कर सकते हैं ।
7. डेटाबेस से व्यर्थ रिकार्ड को हटा सकते हैं । (देखें अध्याय नवन)

डेटाबेस प्रणाली के उपरोक्त कार्यों तथा विशेषताओं का प्रयोग के कारण इसका ग्रन्थालय तथा सूचना सेवाओं के आधुनिकी करण में प्रयोग धीरे-धीरे बढ़ने लगा । ग्रन्थालय तथा सूचना सेवाओं के आधुनिकीकरण का प्रमुख उद्देश्य अध्येताओं को विश्व में नित्यप्रति विकसित ज्ञान का विवरण कम से कम समय में न्यूनतम मूल्य पर सुलभ कराना तथा नित्य प्रति ज्ञान के विकास की प्रक्रिया से उसे अद्यतन करना होता है । इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु ग्रन्थालय तथा सूचना सेवाओं में डेटाबेस का उपयोग कर निर्देशिकाओं का निर्माण किया जाने लगा । (देखे अध्याय नवम)

वास्तव में ग्रन्थालय के कार्य को सरल और सुविधाजनक बनाने हेतु प्रयास हमेशा किये जाते रहे हैं । किन्तु विगत कुछ दशकों में ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक स्वरूपों में शोध सामग्रियों का विशाल संख्या सृजन एवं में प्रकाशन किया जा रहा है । तथा इसकी संख्या में अत्यन्त तीव्र गति से सतत् वृद्धि हो रही है । इसके अनेकों जटिल समस्याए। उत्पन्न हो गयी है । ये समस्याएँ निम्नलिखित हैं -

1. विभिन्न क्षेत्रों, प्रकरणों तथा समस्याओं में अनुसंधानरत विशेषज्ञों तथा उपयोगकर्ताओं की अभिरूचि तथा उनसे सम्बन्धित उपादेय सामग्रियों को ज्ञात करना तथा तदनुसार उन्हें उन तक पहुँचाना ।
2. अनुसंधानकर्ता तथा विशेषज्ञों द्वारा समयाभाव के कारण विशाल

प्रकाशन सामग्रियों से वांछित एवं उपादेय सूचना सामग्री को खोजना, चयन करना तथा समय पर प्राप्त करना । (देखें अध्याय नवम)

वृहतरूप से डेटाबेसों को निम्नलिखित दो श्रेणियों में रखा गया है–

1. संदर्भ
2. स्रोत (देखे अध्याय नवम)

आमतौर पर विषय और अभिरूचि के क्षेत्रों की दृष्टि से सभी डेटाबेस सन्दर्भ डेटाबेस ही है । व्यवहारिक रूप से डेटाबेसों को निम्न आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है –

1. विषयानुसार डेटाबेस निर्देशिकाएँ,
2. प्रतिवेदन सम्मेलनों की डेटाबेस निर्देशिकाएँ,
3. समाचार पत्र एवं समाचार सेवाओं की डेटाबेस निर्देशिकाएँ,
4. सामयिकियां एवं न्यूलेटर्स की डेटाबेस निर्देशिकाएँ,
5. पूर्ण मूलपाठ युक्त डेटाबेस निर्देशिकाएँ,
6. सन्दर्भ डेटाबेस निर्देशिकाएँ,
7. स्रोत डेटाबेस निर्देशिकाएँ,
8. वांगमयात्मक डेटाबेस निर्देशिकाएँ,
9. सारांश सेवाओं की डेटाबेस निर्देशिकाएँ,
10. अनुक्रमणिकरण सेवाओं की डेटाबेस निर्देशिकाएँ,
11. उद्यत एवं त्वरित ऑन लाइन डेटाबेस निर्देशिकाएँ,
12. सार्वजनिक एवं शैक्षणिक ग्रन्थालयों में प्रयुक्त डेटाबेस निर्देशिकाएँ,
13. डेटाबेस निर्देशिकाओं के चयन हेतु डेटाबेस निर्देशिकाएँ,

(देखें अध्याय – नवम)

विषयानुसार डेटाबेस निर्देशिकाओं के वर्ग में ज्ञान के विभिन्न विषयों के आधार पर निर्मित डेटाबेस निर्देशिकाओं को शामिल किया गया है । ये डेटाबेस निर्देशिकाएँ विभिन्न विषयों के लिए अलग-अलग बनाई जाती है । विभिन्न विषयों के अनुसार डेटाबेस का वर्गीकरण निम्नानुसार है ।

(i) मानविकी तथा सामान्य प्रकरण,

(ii) समाज विज्ञान

(iii) प्रबन्ध एवं वाणिज्य

(iv) भौतिकी एवं अभियांत्रिकी

(v) रसायन विज्ञान,

(vi) आयुर्विज्ञान,

(vii) विधि (देखे अध्याय नवम्)

प्रस्तुत अध्ययन का अध्याय दस विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं के लिए तृतीयक सूचना स्रोत तथा उनकी उपयोगिता के विवरण पर आधारित है । यह इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य एवं क्षेत्र भी है । वास्तव में सूचना का उद्देश्य उपयोगकर्ता द्वारा उपयोग में लाना होता है । इस प्रकार सूचना स्थानान्तरण प्रक्रिया में उपयोगकर्ता अन्तिम कड़ी होता है । तृतीयक सूचना स्रोतों के उपयोगकर्ता आमतौर पर विशिष्ट किस्म के होते हैं । इन उपयोगकर्ताओं में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है । सूचना चाहने वाले विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ता कौन-कौन से हैं । इस प्रश्न का समाधान करते हुए विशेषज्ञों ने इन्हें निम्नलिखित भागों में विभक्त किया है –

1. वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ,

2. अभियंता,

3. प्रशासक या प्रबन्धक या नियोजक या नीति निर्देशक,

4. अप्राविधिक सूचना उपयोगकर्ता (देखें अध्याय –दस)

इन सभी उपयोगकर्ताओं की प्रकृति में काफी भिन्नता है । इसी भिन्नता को दृष्टिगत रखते हुये इन सूचना स्रोतों की उपयोगिता ज्ञात करने हेतु एक सर्वेक्षण का आयोजन किया गया । जिसमें इन सभी वर्गों के 200 उपयोगकर्ताओं को शामिल किया गया । इन सभी सर्वेक्षित उपयोगकर्ताओं से प्रश्नावली के माध्यम से प्रश्न पूछे गए तथा उनसे उत्तर प्राप्त किये गए । (देखे अध्याय दस, तालिका 10.1 का विवरण) ।

प्राप्त तथ्यों का सम्पादन, निर्वचन किया गया । सर्वेक्षण में बारह ग्रन्थालयों में आने वाले उपय्रेगकर्ताओं को शामिल किया गया था । तथ्यों का सम्पादन और निर्वचन करने के पश्चात उपयोगकर्ताओं का ग्रन्थालयों के स्वरूप के आधार पर वर्गीकृत / विभाजित किया गया । (देखें अध्याय दस तालिका 10.2 का विवरण)

इस विभाजन के पश्चात यह स्पष्ट हुआ कि सामान्य ग्रंथालयों में निर्देशिका, शोध प्रगति तालिका, एवं वांगमय सूचियों की वांगमय सूची का सर्वाधिक प्रयोग होता है । जबकि साहित्य दर्शिकाओं का प्रयोग 90 प्रतिशत तथा वार्षिकी का प्रयोग 80 प्रतिशत लोग करते हैं (देखें अध्याय दस, तालिका 10.3 का विवरण) ।

इस तरह का परिणाम डिजिटल ग्रन्थालयों में भी पाया जाता है वहाँ सिर्फ डेटाबेस निर्देशिकाओं का प्रयोग अधिक होता है तथा शत प्रतिशत प्रयोग में लाया जाता है । इसके अतिरिक्त शोध प्रगति

तालिका तथा वांगमय सूचियों की वांगमय सूची का प्रयोग भी डीजीटल ग्रन्थालयों में शत प्रतिशत उपयोगकर्ता करते हैं । इसके साथ ही यहाँ साहित्य दर्शिका तथा वार्षिकी का भी प्रयोग होता है जिसका प्रयोग क्रमशः 40 तथा 60 प्रतिशत उपयोगकर्ता करते हैं । (देखें अध्याय 10 तालिका 10.4 का विवरण)

इसी तरह व्यक्तिगत ग्रंथालयों में डेटाबेस निर्देशिका, तथा शोध प्रगति तालिका का प्रयोग शत प्रतिशत उपयोगकर्ता करते हैं जबकि वांगमय सूचियों का वांगमय सूची, वार्षिकी, साहित्य दर्शिकाओं तथा सामान्य निर्देशिकाओं का प्रयोग क्रमशः 90,80,70 एवं 40 प्रतिशत उपयोगकर्ताओं द्वारा किया जाता है । (देखें अध्याय दस तालिका 10.5 का विवरण)

सर्वेक्षण में लगभग सभी सर्वेक्षित विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ताओं ने सूचना प्राप्ति में तृतीयक सूचना स्रोतों का अत्यन्त महत्वपूर्ण बताया तथा तृतीयक सूचना के सभी उपकरणों के लिए अलग–अलग रूप से निम्नलिखित उपयोगिता क्षेत्र बताये –

वार्षिकी

1. तथ्यगत सूचना या आँकड़े प्राप्त करने में,
2. विषय और विचार प्रक्रिया की सामान्य जानकारी प्राप्त करने में ।

वांगमय सूचियों की वांगमय सूची

1. विषय विशेष की सम्पूर्ण सूचना प्राप्त करने में,
2. विषय की संक्षिप्त एवं तथ्यात्मक सूचना प्राप्त करने में,
3. विचार प्रक्रिया के सामान्य सूचक के रूप में,
4. सन्दर्भो की प्राप्ति में,
5. पुस्तकों के प्रकाशक एवं वितरक के विवरण प्राप्त करने में,

शोध प्रगति तालिका

1. नवीन अनुसंधानों को जानकारी प्राप्त करने में,
2. अनुसंधान परियोजना के नियोजन में मददगार,
3. अनावश्यक अनुसंधान एवं पुनरावृत्ति से बचाव में,
4. अनुसंधान परियोजना तथा उससे जुड़े विशेषज्ञों की जानकारी हेतु ।
5. अनुदान प्रदान करने वाली संस्था की जानकारी ।

निर्देशिका

1. व्यक्ति या संस्था का पत्र,
2. राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्था से सम्बन्धित व्यक्ति का पता,
3. विविध प्रकार की संस्थाओं का परिचय प्राप्त करने में,
4. विविध प्रकार की संस्थाओं के कार्य क्षेत्र का पता करने में।

डेटाबेस निर्देशिका

1. सामायिक एवं नवीन सूचना उपलब्ध कराने में,
2. अद्यतन समंकों की प्राप्ति में ।

साहित्य दर्शिकाएं

1. विषय एवं विचार प्रक्रिया के विकास की जानकारी,
2. सूक्ष्म विषयों पर विस्तृत सूचना प्राप्त करने में,
3. अत्यन्त नवीन सूचना प्राप्त करने में,
4. पुस्तक प्रकाशक वितरक एवं सेवा प्रदायक संस्थाओं की जानकारी हेतु,
5. शोध सामग्री एवं सूचनाएँ,
6. तथ्यात्मक सूचनाएँ (देखें अध्याय दस, तालिका 10.6 से 10.12 तक का विवरण)

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि तृतीयक सूचना स्रोत अध्येता

के लिए अत्यन्त उपयोगी है किन्तु इसका उपयोग कुछ क्षेत्रों में अत्यन्त कम है विशेष तौर पर मानविकी तथा समाजविज्ञान संकाय में । इसे बढ़ाने हेतु निम्न सुझाव दिये जा सकते है–

1. शोध विधि के पाठ्यक्रम में सूचना प्राप्ति तथा ग्रन्थालयों का उपयोग जैसा विषय पढ़ाया जाना चाहिये ।
2. अध्येताओं को तृतीयक सूचना स्रोतों से परिचित कराने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए ।
3. शोधकर्मियों को सूचना प्रौद्योगिकी का विस्तृत प्रशिक्षण देना चाहिये ।
4. ग्रन्थालयों में तृतीयक सूचना स्रोतों के विकास पर बल देना चाहिये ।
5. अंतर्ग्रन्थालयीन आदान प्रदान सेवा एवं संसाधन सहभागिता के अन्तर्गत पाठकों के विशिष्ट मांग की पूर्ति करने की दिशा में प्रयास किया जाना चाहिये ।
6. स्थानीय ग्रन्थालयों एवं संस्थाओं में उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण कर उन्हें चिन्हित कर वांछित पाठकों तक उपलब्ध सहित्य के उपयोग को सुनिश्चित किया जाना चहिये ।
7. महत्वपूर्ण एवं उपयोगी डेटाबेसों की एक सूची तैयार की जानी चाहिये जिससे पाठक को त्वरित एवं न्यूनतम समय में अपनी वांछित सूचना प्राप्त करने में आसानी हो सके ।
8. तृतीयक स्रोत संबंधी साहित्य का संकलन, वर्गीकरण, संगठन एवं प्रबंधन सतत् रूप से ग्रन्थालय में होना चाहिये जिससे पाठ्क अपनी सूचना आसानी से प्राप्त कर सके ।
9. सूचना प्रौद्योग्रिकी के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तन एवं नवीन डेटाबेसों से संदर्भ ग्रन्थालयी को सतत् परिचित एवं उनके

उपयोग संबंधी फलनों से अवगत होना चाहिये जिससे वह उसके द्वारा पाठकों की सूचना मांग की पूर्ति कर सके ।

10. महत्वपूर्ण एवं अतिविशिष्ट व्यक्तियों, विद्वानों, विषय विशेषज्ञों आदि की स्थानीय स्तर पर सूचनात्मक सूची / निर्देशिका तैयार की जानी चाहिये । जिनसे अध्येता अपनी विशिष्ट सूचना संबंधी समस्याओं का निराकरण कर सके ।

11. ग्रंथालय के प्रदर्शन पटल पर (Display Board) पर उपलब्ध नवीन सूचना ग्रन्थों एवं अन्य अप्रलेखी साहित्य को प्रदर्शित किया जाना चाहिये । जिससे पाठक अवगत हो सके एवं लाभान्वित हो सके ।

12. नवागत पाठकों को ग्रंथालयीन उपयोग संबंधी सूचनाओं से अवगत कराने की दिशा में भी पहल होना चाहिये ।

13. कम्प्यूटर चालन एवं इन्टरनेट के उपयोग संबंधी प्रारंभिक जानकारी से अपरिचित विशिष्ट अध्येताओं को परिचित कराना चाहिये जिससे वे डिजिटल सूचनाओं को आसानी से प्राप्त कर सके ।

14. यदि संभव हो सके तो स्थानीय एवं अन्य संस्थाओं में चल रहे विषयवार शोधों / अनुसंधानों की जानकारी की अद्यतन सूची सतत तैयार की जानी चाहिये जिससे जिज्ञासु / नवागंतुक शोधार्थी उससे दिशा निर्देश प्राप्त कर सके ।

वांगमय सूची

1. A LA glossary of Library Terms, Chicago, 1943.
2. Anthony, L.J., "Information Source in Engineering", London, Butler worths, 1985.
3. Ardis, Susun, ed., -"Library without wall; Plug in and go,." – Special Library Association, 1994.
4. Asworth, W., "Hand book of Special Librarianship and Information work – 3rd ed. –London ", 1967.
5. Auster, Ethel, -"Managing on line Reference Services" – N.Y.; Neal-schaman, 1986.
6. Binns, Norman E., - "Introduction to Historical Bibliography." London, Association of Assistant Librarians, 1962.
7. Borko., Harold and Bernier, Charles L.,-"Indexing Concept and Methods.,"- N.Y.; Academic Publisher, 1978.
8. Borko, Harald and Bernier, Charles L.- "Abstracting concept and Methods"- N.Y., Academic Publisher, 1975.
9. Bose, H.,-"Information Science: Principles and Practice"- New Delhi," Sterling. 1986.
10. Bradford, S.C.,- "Documentation"- Washington, Public Affairs, 1950.
11. Brown, A.G., -"Introduction to Subject Indexing"- London, Clive Bingley, 1976.

12. Butter, pierce, ed.,- "Reference Function of the Library"-Chicago, University of Chicago, 1943.

13. Chakravorti, M.L.,-"Bibliography in Theory and Practice"- Calcutta, 1971.

14. Cheney, F.N.,- "Fundamental Reference Sources." – Chicago, American Library Association, 1971.

15. Cleveland, Donald, B., and Cleveland, Anna, D., -"Introduction to Indexing and Abstracting"- Colorado, Libraries Unlimited, 1983.

16. Chinell, D.F., - "System Documentation: Online Approach"-N.Y., John Wiley 1990.

17. Colalans, H.T. "Use of Mechanised Methods in Documentation Work"- London, Aslib 1966.

18. Collision, Robert L., "Bibliographies" – London, Rroshy Lockwood & Sons Ltd, 1968.

19. Coolison, Robert L.,-"Indexes and Indexing"- London, Ernest Benn, 1972.

20. Corsi, P., and Weindling P., -" Information Sources in the History of Science and Medicine"-London, Butterworths, 1986.

21. Davisnson, Donald, -"Bibliographic Control"-London, Clive Bingley, 1975.

22. Davisen, Donald – "Reference Services"- London, Clive Bingley 1979.

23. Dewly, Patric R., -"303 CD-ROMs to Use in Your Library: Descriiption, Evaluation and Practical Advice" –Chicago- American Library Association 1996.

24. Dewey, M., -"Circular of Information" Columbia, Columbia College Library and School of Library Economy, 1884.

25. Dubey, Yogendra, P.,- "Information Technology and National Development"-Agra, Y.K. Publishers 1994.

26. Eckwright, Gail, Z., and Keenan, Lori, H., -"Reference services Planning in the 905" – Howorth Press, 1994.

27. Eglefield, D., and Drawry, G., -"Information Source in Politics and Political Science"- London, Butterworths, 1986.

28. Elashami, A.M. –"Networking CD-ROMs " The decision Makers Guide to Local Area networking solutions"- Chicago, American Library Association 1996.

29. Esdaile, A -" Manual Bibligraphy" revised by Roy Stocks- N.Y., 1954

30. Foskett, A.C., -"Subject Approach to Information"- London, Clive Bingley 1971.

31. Foskett, D.J., -" Reference Service and classification"- London, School of Librarianship, North-West Polytechnic, 1960.

32. Galvin, T.J., -" Problem in Reference service"- N.Y., Bowker 1965.

33. Galvin, T.J., -"Current problems in Reference Service –N.Y.,

Bowker, 1971.

34. Grogan, D.J., -"More Case Studies in Reference work" – London, Clive Bingley, 1972.

35. Grogeen, D.J., -" Case Study in Reference work"-London clive Bingley 1967.

36. Guha, B., -"Documentation and Information"-Calcutta, World Press 1983.

37. Harrington, John., -" Organisational Structure and Information Technology"-N.Y., Prentice Hall, 1991.

38. Haung, Samuel,T., -" Modern Library Technology and Reference Services"- N.Y., Haworth Press 1993.

39. Hopworth, P., -"A Primer of Assistant to Readers." XI.J., Ablex Publishing, 1956.

40. Hutchins, Margaret, -"Introduction to Reference Work"- Chicago, American Library Association, 1944.

41. Katz, William, A.,-" Introduction to Reference; Basic Reference sources4, Vol.1,-N.Y., MacGraw-Hill, 1987.

42. Katz, William A., -"Introduction to Reference; Reference Services and Reference processes" Volume II, - N.Y., MacGraw-Hill, 1981.

43. Kawatra, P.S., - "Information Science" New Delhi, A.P.H. Publishing Corporation ,2000.

44. Krishan Kumar, -"Reference Service"- New Delhi, Vikas Publishing House Pvt. Ltd., 1984.

45. Kumar, Suseela, -" Changing Concept of Reference Service"-New Delhi, Vikas Publishing House Pvt. Ltd., 1974.

46. Lancaster, F.W., -"Measurement and Evaluation Library Services"- Washington, Information Resource Press, 1977.

47. Lunderman, Wenfred B., -"Present Status and Future prospects of Reference / Information Service"- Chicago, American Library Association, 1967.

48. Longan, R.G., -"Information Source in Law" – London, Butterworths, 1986.

49. Lucus, A., and Nevallo, A.,- "Encyclopedia of Information System and Services" – Detroil, Gale Research 1996.

50. Marton, L.T., - "Information Source in Medical Science "- London, Butterworths 1983.

51. McGarry, K.J., -Changing Concept of Information"- London, Clive Bengly, 1981.

52. Mikhailow, A.I., and Giljorevski J. R.S.-" Introductory Course on Information and Documentation" – The Hauge FID, 1971.

53. Mukherjee, A.K.,- "Fundemenatal of Special Librarianship and Documentation", 1969.

54. Murthy, S.S., -"Bibliographic Database and Networks: Proceedings of the International Conference – 1989." Organised by DESIDOC – New Delhi, Tata MacGraw Hill, 1990.

55. "National Information Policies and Programmers": Seminar

Papers, 37 ILA Conference – Delhi, ILA, 1991.

56. National Conference on Scientific Information for Defence, 1986, Confrence Proceedings-Delhi-DESIDOC, 1988.

57. Pao, M.L., -"Concept of Information Retrival" – Englewood, Libraries unlimited, 1989.

58. Parker, C.C. and Turley, R.V. –"Information Source in Science and Technology"-London, Butterworths, 1985.

59. Penna, P.C., -"Planning of Library and Documentation Services" Revised by P.H. Sewell and Hebaers – Delhi, universal Publication, 1974.

60. Rangnathan, S.R., -"Reference Service and Bibliography"-Madras, Madras Library Association, 1940.

61. Rangnathan, S.sR.-"Documentation and Its Facets"-Bombay, 1963.

62. Rangnathan, S.R. –"Reference Service"-Bombay, Asia, Publishing House, 1968.

63. Rangnathan, S.R., -" Physical Bibliography of Librarians"-Bombay, Asia Publishing House, 1974.

64. Robinson, A.M.L., -"Systematic Bibliography"-London, Clive Bingley, 1971.

65. Shaw, Desins, F., -"Information Source"- London, Butterworths, 1985.

66. Sharma, Ajay Kumar, - " Library Reference Services,

Bibliography and Documentation" – Delhi, Chetna Publishers, Delhi, 1990-91.

67. Shores, Louis, Basic Reference Services " – Chicago, American Library Association, Chicago, 1994.

68. Straus, L.J.S., (et al.), - "Scientific and Technical Libraries: Their organisation and Administraction" –N.Y. Beeker- Hayes 1971.

69. Tripathi S.M., -" New dimension of Information and Reference Sources," New Delhi, Ajanta Publications, New Delhi, 1989.

70. Tripathi, S.M., -" Modern Bibliographical, Control Bibliography and Documentation," –Agra Y.K. Publishers, 1992.

71. Tripathi S.M., -" New Dimensions of Reference and Information Service," Agra, Y.K. Publishers, Agra, 1993.

72. UNESCO-"Handbook for Information System & Services"- Paris, UNESCO, 1977.

73. Vickery Brain C. and Vickery Aliam, -"Information Science in Theory and Practice," – London, Butterworths London, 1987.

शोध पत्रिकाएँ एवं जर्नल

1. Indian Journal of Information Library and Society.
2. International Library Movement.
3. ILA Bulletin.
4. ILA News letter
5. CLS Observer.
6. ALA Bulletin
7. IASLIC Bulletin
8. Annals of Library Science Documentation
9. Knowldege Organisation
10. Herald of Library
11. Library Quarterly
12. DESIDOC News
13. International Journal of Library studies
14. Library Progress
15. International Librarian
16. International Information Communications and Education.
17. ग्रन्थालय विज्ञान
18. Inflibnet Newsletter